फोनः-4103333, 2362400 फैक्सः-0141-2373513 वर्षः 76 संख्याः 165 प्रभात जयपुर, शुक्रवार 16 जनवरी, 2026 डाक पं.सं. जयपुर सिटी/001/2021-23 पृष्ठ 8 मूल्य 2.75 रु.

जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

Rashtradoot

Metro

epaper.rashtradoot.com

ARBiT

And Why Not Dissent!

The session had three more women authors and activists, Deepti Priya Mehrotra, a political scientist, bureaucrat Swati Pande and Booker-prize winner and lawyer Banu Mustaq

The Important, Beautiful And Handsome All Here

"Wo baat jo dusra koi samajh Nahin sakta

भाजपा राज्यसभा के डिप्टी स्पीकर हरिवंश को दोबारा इस पद पर दोहराना चाहती है

पर, हरिवंश जद (यू) के सदस्य हैं व उनका राज्यसभा का कार्यकाल अप्रेल में पूरा हो रहा, नीतीश हरिवंश से काफी नाखुश हैं और वे उन्हें दोबारा राज्यसभा का सदस्य नहीं बनवाना चाहते हैं। नाखुशी का कारण है हरिवंश का भाजपा के बहुत नज़दीक चला जाना।

-रेणु मित्तल-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 15 जनवरी। लोकसभा में उपाध्यक्ष (डिप्टी स्पीकर) का पद इसलिए खाली है, क्योंकि नरेन्द्र मोदी सरकार को अपने पहले दो कार्यकालों में भारी बहुमत मिला था, इस कारण उन्हें किसी को इस पद पर नामित करने की जरूरत नहीं लगी।

राज्यसभा में जनता दल (यू) के हरिवंश उपसभापति हैं। उनकी राज्यसभा सदस्यता अप्रैल में समाप्त हो रही है और जद (यू) के सूत्रों का कहना है कि नीतीश कुमार हरिवंश को दोबारा राज्यसभा भेजने के इच्छुक नहीं हैं।

मुख्य वजह यह बताई जा रही है कि हरिवंश धीरे-धीरे भाजपा के करीब होते जा रहे हैं और नीतीश कुमार की बात नहीं सुन रहे हैं।

- हरिवंश का भविष्य अधरझूल में है। भाजपा ने हाल ही में राज्यसभा में नये सभापति बनवाये हैं, जिनका राज्यसभा का अनुभव सीमित है। अतः, अगर सभापति व उपसभापति दोनों नए हुए तो राज्यसभा के संचालन में अस्थिरता फैलने की संभावना रहती है।
- इस अस्थिरता की स्थिति से बचने के लिए मोदी-शाह द्वय ने 2024 के मंत्रिमंडल व अन्य नियुक्तियों को लोकसभा चुनाव के बाद ज्यों का त्यों रिपीट किया था, जिसका लाभ ओम बिड़ला को भी मिला, क्योंकि वे खुद भी मान रहे थे कि वे शायद लोकसभा अध्यक्ष के रूप में रिपीट नहीं होंगे।
- पर, साल भर से मोदी-शाह द्वय द्वारा मंत्रिमंडल में फेरबदल करने की चर्चा चल रही है और हर फेरबदल के बाद कुछ समय के लिए अस्थिरता व अनिश्चितता की स्थिति बनती है, जब तक नये लोगों के पांव जमते हैं। इस अनिश्चितता व अस्थिरता की स्थिति के अनुभव को कम करने के लिए भाजपा हरिवंश को डिप्टी स्पीकर बनवाना चाहती थी।

हाल ही में राज्यसभा में नया सभापति आया है। ऐसे में हरिवंश जैसे अनुभवी व्यक्ति से स्थिरता मिल सकती है, क्योंकि वे कई वर्षों से इस पद पर हैं।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

'राज्य सरकार अपनी ही जाँच एजेंसी के खिलाफ बहस कर रही है'

जयपुर, 15 जनवरी। एसआई भर्ती-2021 पेपर लीक मामले में एकलपीठ की ओर से भर्ती रद्द करने के आदेश के खिलाफ दायर अपीलों पर गुरुवार को हाईकोर्ट की खंडपीठ में मूल प्रार्थी कैलाश चन्द्र शर्मा की ओर से बहस की गई। प्रार्थी ने कहा कि प्रदेश में पहली बार राज्य सरकार अपनी ही जांच एजेंसी के खिलाफ बहस कर रही है।

प्रार्थी पक्ष की ओर से सीनियर एडवोकेट आरपी सिंह व हरेन्द्र नील ने एक्टिंग सीजे एसपी शर्मा और जस्टिस संगीता शर्मा की खंडपीठ के समक्ष कहा कि इस पेपर लीक के मामले में परीक्षा

- एसआई भर्ती पेपर लीक में हाई कोर्ट की खंडपीठ के सामने प्रार्थी पक्ष ने दलील दी थी।

केन्द्र के कर्मचारी सहित, अन्य लोग भी शामिल रहे हैं। इसके अलावा, आरपीएससी सदस्यों की भूमिका भी सामने आई है। उनकी ओर से किसी भी तथ्य को छिपाया नहीं गया है, यदि छिपाए भी हैं, तो वे इस केस के निर्णय पर कोई प्रभाव नहीं डालते। मामले में प्रार्थी पक्ष की बहस खंडपीठ ने शुक्रवार को भी जारी रखी है। गौरतलब है कि इससे पहले चयनित अभ्यर्थियों की ओर से सीनियर एडवोकेट कमलाकर शर्मा ने बताया कि एसआईटी की पहली

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

अभिषेक सिंघवी, सिब्बल व कई दिग्गज खड़े हुए ममता की पैरवी करने

पर, सुप्रीम कोर्ट अप्रभावित रहा इन वकीलों के दलीलों से तथा ईडी के तर्क स्वीकार करते हुए ममता बनर्जी व राज्य सरकार के सीनियर पुलिस अधिकारियों को नोटिस जारी किए तथा ममता बनर्जी को तीन फरवरी तक जवाब पेश करने के आदेश दिए

-अंजन रॉय-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 15 जनवरी। आज पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी को सुप्रीम कोर्ट में कड़ी फटकार झेलनी पड़ी। उनके बचाव के लिए कपिल सिब्बल से लेकर अभिषेक मनु सिंघवी जैसे देश के कई बड़े वकील मौजूद थे, लेकिन इसके बावजूद उन्हें चोरी के आरोपों से राहत नहीं मिली।

सुप्रीम कोर्ट ने राज्य सरकार की उस याचिका को खारिज कर दिया, जिसमें निजी कंसल्टेंसी कंपनी आई-पैक के दफ्तरों पर चल रही छापेमारी रोकने की मांग की गई थी। सरकार ने यह भी अनुरोध किया था कि मुख्यमंत्री के साथ गए पुलिस अधिकारियों के खिलाफ दर्ज मामले रद्द किए जाएं।

इसके उलट अदालत ने

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- ममता बनर्जी के वकीलों की टीम ने सुप्रीम कोर्ट से मांग की थी कि एक प्राइवेट पार्टी आई-पैक के ऑफिस में ईडी द्वारा की गई "रेड" को रोका जाए तथा उन पुलिस अफसरों, जो मु.मंत्री के साथ आए थे, के खिलाफ ईडी द्वारा किए गए मुकदमों को रद्द किया जाए।
- ईडी ने दलील पेश की कि ममता बनर्जी ने ईडी जाँच की कार्यवाही में हस्तक्षेप किया है तथा पुलिस की मदद से सबूत की फाइलें, कागज़ात व इलैक्ट्रॉनिक उपकरण उठाकर कर ले गईं।
- अटॉर्नी जनरल, तुषार मेहता ने ईडी की ओर से पैरवी करते हुए कहा कि अगर मु.मंत्री ममता बनर्जी को कागज़ात की चोरी व ईडी की कार्यस्थली में बाधा पहुंचाने के आरोप में कोई दंड नहीं दिया गया तो इसका भारी दुष्प्रभाव पड़ेगा, देश में ईडी के रेड के मामले में तथा साथ ही ईडी के अधिकारी हतोत्साहित होकर अपने जिम्मेवारी पूरी करने में घबराएंगे।

ईरान में सत्ता परिवर्तन भारत के लिए नुकसानदेह रहेगा

ईरान के समुचे घटनाक्रम पर भारत न केवल बारीकी से नज़र रखे हुए है, बल्कि चिंतित भी है

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 15 जनवरी। ईरान में कमज़ोर और गिरने के कगार पर पहुँच चुकी सरकार इस क्षेत्र में भारत की रणनीतिक गतिविधियों की संभावनाओं को गंभीर रूप से प्रभावित कर सकती है। यह गुंजाइश पहले ही बांग्लादेश में सत्ता परिवर्तन, पाकिस्तान से उत्पन्न आतंकवादी चुनौतियों और चीन के क्षेत्रीय विस्तार के कारण सिमटती जा रही है।

आर्थिक कठिनाइयों और राजनीतिक थकान से प्रेरित विरोध प्रदर्शनों को काबू में करने के लिए ईरान का धार्मिक नेतृत्व संघर्ष कर रहा है। ऐसे में भारत घटनाक्रम को बेहद बेचैनी के साथ देख रहा है। नई दिल्ली और तेहरान लंबे समय से क्षेत्र में रणनीतिक साझेदार रहे हैं, जिनके रिश्ते भूगोल, संपर्क मार्गों और शक्ति-संतुलन से आकार लेते रहे हैं।

- पाकिस्तान द्वारा भारत का पश्चिम एशिया का स्थल मार्ग अवरूद्ध करने के बाद से ईरान ही भारत और पश्चिम एशिया के बीच संपर्क का जरिया है। इसमें ईरान के चाबहार पोर्ट की अहम् भूमिका है।
- अगर ईरान में सत्ता बदली तो भारत की मुश्किलें बढ़ सकती हैं, चीन के क्षेत्रीय विस्तार और पाकिस्तान की आतंकी चुनौतियों के बीच भारत को कई नई चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है।

पाकिस्तान द्वारा अफगानिस्तान और मध्य एशिया के लिए भारत के थल मार्गों को अवरुद्ध किए जाने के कारण, ईरान लंबे समय से नई दिल्ली के लिए एकमात्र व्यवहारिक पश्चिमी गलियारा रहा है। तेहरान का शिया नेतृत्व पाकिस्तान के प्रभाव को संतुलित करने का भी काम करता रहा है और भारत की सावधानीपूर्वक बनाई गई संतुलित पश्चिम एशिया नीति में एक स्थिरता के स्तंभ के रूप में भी उभरा है।

क्षेत्र में भारत की रणनीतिक गतिविधियों की गुंजाइश पहले ही बांग्लादेश में सत्ता परिवर्तन, पाकिस्तान से आतंकवादी चुनौतियों और चीन के क्षेत्रीय विस्तार के कारण कम हो चुकी है, और ईरान में किसी भी तरह का सत्ता परिवर्तन इस स्थिति को और जटिल बना सकता है।

पाकिस्तान द्वारा अफगानिस्तान और मध्य एशिया तक भारत को थल

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

'चार महानगरों में स्वचालित मौसम स्टेशन लगेंगे'

नयी दिल्ली, 15 जनवरी। देश में मौसम पूर्वानुमान व्यवस्था को और मजबूत बनाने के लिये चार महानगरों में 200 स्वचालित मौसम स्टेशन (एडब्ल्यूएस) स्थापित किये जायेंगे। केन्द्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी तथा पृथ्वी विज्ञान राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) डॉ. जितेन्द्र सिंह ने भारत मौसम विज्ञान विभाग (आईएमडी) के 151वें स्थापना दिवस के अवसर पर यह घोषणा की।

- केन्द्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्री जितेन्द्र सिंह ने कहा, भारतीय विज्ञान विभाग के 151वें स्थापना दिवस पर यह घोषणा की और कहा कि इससे मौसम की सटीक भविष्यवाणी में मदद मिलेगी।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

पाकिस्तान, बांग्लादेश व नेपाल को भी वीज़ा देना स्थगित किया अमेरिका ने

ये देश उन 75 देशों की सूची में शामिल हैं, जिन्हें अमेरिका सरकार द्वारा "प्रमाणित" दस्तावेज़ों की विश्वसनीयता को संदेह की दृष्टि से देखा जाता है

-सुकुमार साह-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 15 जनवरी। मीडिया रिपोर्टों के अनुसार, अमेरिका की सरकार ने अपनी "अमेरिका फर्स्ट" नीति के तहत, 75 देशों के नागरिकों के लिए इमिग्रेंट वीज़ा प्रोसेसिंग को अनिश्चित काल के लिए रोकने का फैसला किया है। यह रोक 21 जनवरी से लागू होगी और तब तक जारी रहेगी, जब तक वॉशिंगटन आवेदक जोखिम, पहचान सत्यापन प्रणाली और सूचनाओं के आदान-प्रदान के मानकों की पूरी समीक्षा नहीं कर लेता।

इस सूची से भारत को बाहर रखा गया है, जबकि उसके कई पड़ोसी देश, जैसे पाकिस्तान, बांग्लादेश और नेपाल प्रभावित देशों में शामिल हैं। इसका मतलब है कि अमेरिकी ग्रीन कार्ड और अन्य स्थायी निवास श्रेणियों के लिए आवेदन करने वाले भारतीय नागरिक इस रोक से सीधे प्रभावित नहीं होंगे। ऐसे समय में, जब दुनिया भर में प्रवास के रास्ते सख्त हो रहे हैं, इससे भारत को स्पष्ट लाभ मिला है।

- अमेरिका ने इन 75 देशों की लिस्ट में भारत को शामिल नहीं किया है। यह तथ्य,यह दर्शाता है कि अभी भी अमेरिका भारत को "विश्वास योग्य" पार्टनर मानता है तथा उसे यह भी विश्वास है कि भारत के लोग अमेरिका आकर अमेरिका के "बड़े दिल" का दुरुपयोग नहीं करते तथा अमेरिका पर वित्तीय बोझ नहीं बनते।
- इसका सीधा लाभ उन भारतीय नागरिकों को मिलेगा, जो अमेरिका में "ग्रीन कार्ड" व अन्य स्थायी नागरिकता पाने के रास्ते में आगे बढ़ना चाहते हैं।

विश्लेषकों का मानना है कि भारत को सूची से बाहर रखना अमेरिकी प्रशासन की ओर से भारतीय दस्तावेज़ी व्यवस्था और आवेदकों की विश्वसनीयता पर भरोसे का संकेत है। न्यूज18 के अनुसार, यह रोक मुख्य रूप से उन देशों पर लगाई गई है, जिन्हें पहचान में धोखाधड़ी का ज्यादा खतरा माना जाता है या जहां के आवेदकों के अमेरिका सरकार पर आर्थिक बोझ बनने की अधिक संभावना है। कथित रुप से काउन्सलर अधिकारियों को सूचीबद्ध देशों से इमिग्रैंट वीज़ा अस्वीकार करने का निर्देश दिया गया है, साथ ही साथ एक व्यापक समीक्षा भी की जा रही है।

अमेरिकी अधिकारियों ने साफ किया है कि इस समीक्षा में कड़े मानदंड लागू होंगे। फॉक्स न्यूज के अनुसार, स्वास्थ्य, उम्र, पहले सरकारी मदद पर निर्भरता, अंग्रेज़ी ज्ञान और आर्थिक स्थिति जैसे कारक आवेदकों के खिलाफ जा सकते हैं। विदेश विभाग के प्रवक्ता टॉमी पिगॉट ने कहा कि ऐसे संभावित प्रवासियों को अयोग्य ठहराया जाएगा, जो "अमेरिकी जनता की उदारता का दुरुपयोग" कर सकते हैं।

इस पृष्ठभूमि में भारत का सूची से बाहर रहना खास महत्व रखता है। विशेषज्ञों का कहना है कि सोमालिया, अफगानिस्तान और यमन जैसे देशों के साथ समूहबद्ध होना पाकिस्तान के लिए एक राजनयिक और प्रतिष्ठा संबंधी झटका है। न्यूज18 ने सरकारी सूत्रों के हवाले से बताया कि अमेरिका में बड़े धोखाधड़ी मामलों के बाद उच्च-जोखिम देशों पर सख्त नजर रखी जा रही है।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

ईरान ने हवाई क्षेत्र बंद किया

नयी दिल्ली, 15 जनवरी। भारतीय विमान सेवा कंपनियों ने ईरान के ऊपर से गुजरने वाली कई उड़ानें रद्द कर दी हैं, जबकि कई अन्य के मार्गों में बदलाव किया गया है।

ईरान द्वारा वाणिज्यिक उड़ानों के लिए उसके हवाई क्षेत्र को बंद किये जाने के बाद यह फैसला लिया गया है। टाटा समूह की एयर इंडिया ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर एक पोस्ट में बताया

- ईरान से गुज़रने वाली कई भारतीय उड़ानें या तो रद्द कर दी गईं या इनका मार्ग बदल दिया गया।

कि "ईरान में बने घटनाक्रम, उसके बाद हवाई क्षेत्र बंद किये जाने और यात्रियों की सुरक्षा के मद्देनजर" उस क्षेत्र से गुजरने वाली उड़ानों के मार्ग बदले गये हैं, जिससे उड़ानों में देरी हो सकती है। उसने कहा है कि जिन उड़ानों के मार्ग बदलना फिलहाल संभव नहीं है, उन्हें रद्द कर दिया गया है।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

क्या हाईकोर्ट एस.आई. भर्ती परीक्षा-2021 पेपर लीक मामले में सरकार की मंशा परखना चाहता है?

अदालत ने इस मामले पर सुनवाई के दौरान महाधिवक्ता को आदेश दिए कि अपील दायर होने के बाद से एस.ओ.जी. पुलिस ने कितने आरोपियों को इंटेरोगेट व गिरफ्तार किया

-यादवेन्द्र शर्मा-

जयपुर 15 जनवरी। हाईकोर्ट में एस.आई. भर्ती परीक्षा-2021, को रद्द किये जाने के सिंगल बैंच के आदेश के खिलाफ दायर अपीलों पर सुनवाई हुई। उल्लेखनीय है कि कार्यकारी मुख्य न्यायाधीश एस पी शर्मा और न्यायाधीश संगीता शर्मा की खण्डपीठ ने इस मामले से उभरे आर.पी.एस.सी. (राजस्थान पब्लिक सर्विस कमीशन) में भ्रष्टाचार के मुद्दे पर स्वतः संज्ञान भी लिया है, वहीं दूसरी ओर आर.पी.एस.सी. सदस्य डॉ. संगीता आर्या और मंजु शर्मा ने भी एकलपीठ के आदेश को चुनौती दी है, और कहा है कि जांच में और अदालत के आदेश में उनके खिलाफ की गई टिप्पणी निराधार है। हाईकोर्ट में इन सभी मामलों पर एक साथ सुनवाई की जा रही है।

पाठकों को बता दे कि सभी मामलों को एक साथ जोड़ कर सुनवाई से पूर्व, हाईकोर्ट की खण्डपीठ में सिंगल बैंच के एस.आई. भर्ती परीक्षा रद्द करने के आदेश के खिलाफ दायर अपीलों की सुनवाई शुरू हुई थी। इस मामले में वरिष्ठ अधिवक्ता विकास बालिया ने अदालत को कहा कि एस.ओ.जी. की रिपोर्ट में कुछ गिने-चुने सेंटरों पर ही पेपर लीक होने या चीटिंग करने के या डमी केन्डीडेट बिठाये जाने के मामले सामने आए हैं। उन्होंने अदालत को कहा कि अनुमानतः बीस से तीस परीक्षा केन्द्रों पर ऐसी वारदात के तथ्य एस.ओ.जी. की रिपोर्ट में सामने आए हैं। उन्होंने

- मामले की सुनवाई के दौरान अपीलार्थियों की ओर से कहा गया, यह मामला व्यापक पेपर लीक का नहीं है क्योंकि कुछ ही सेंटरों पर चीटिंग व पेपर लीक की वारदात देखी गई है। इसलिए सभी अभ्यर्थियों को पेपर रद्द कर दंडित नहीं किया जाना चाहिए।
- मूल याचिकाकर्ताओं की ओर से कहा गया कि पेपर इसलिए रद्द कर देने चाहिए क्योंकि इस मामले की जाँच का कोई अंत नहीं है, क्योंकि वॉट्सऐप के जरिये भी पेपर लीक किया गया था जिससे किसी भी सेंटर पर अभ्यर्थी पेपर प्राप्त कर सकते थे।
- मूल याचिकाकर्ता के वकील वरिष्ठ अधिवक्ता आर.पी. सिंह ने कहा कि इस मामले में अभी भी 12 ईनामी आरोपी फरार हैं जो अन्य प्रदेशों के गिरोहों से ताल्लुक रखते हैं। उन्होंने बताया एक ईनामी आरोपी की मौत हो चुकी है जिस वजह से यह भी पता नहीं लगाया जा सकता कि उसने किस-किस को पेपर बेचा था।

अदालत को बताया कि पूरे प्रदेश में आठ सौ परीक्षा केन्द्र थे, इसलिए जांच के आधार पर ये नहीं कहा जा सकता कि परीक्षा निष्पक्ष तरीके से कराए जाने की पूरी व्यवस्था ही खंडित हो गई थी। उन्होंने अदालत को कहा कि जांच के आधार पर यह माना जाना चाहिए कि यह वारदात कुछ केन्द्र तक ही सीमित थी, इसलिए सभी अभ्यर्थियों को, जिनके खिलाफ कोई सबूत सामने नहीं आए हैं, उन्हें परीक्षा रद्द कर दण्डित न किया जाए।

राज्य सरकार की ओर से महाधिवक्ता ने भी कहा कि राज्य सरकार जांच करने के ही पक्ष में है, परन्तु परीक्षा रद्द करने का फैसला अपरिपक्व होगा। उन्होंने कहा कि हो सकता है कि आगे जांच से और भी संधिग्द आरोपी सामने आएं, और दागी अभ्यर्थियों को बेदाग अभ्यर्थियों से अलग किया जा सके, ताकि परीक्षा रद्द करने की स्थिति न आए।

वहीं आज जिरह के दौरान परीक्षा रद्द कराने के पक्ष में मूल याचिकाकर्ताओं की ओर से कहा गया

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

फ्रांस से 114 राफेल खरीदने का सौदा

नई दिल्ली, 15 जनवरी। भारतीय वायु सेना के लिए 114 राफेल लड़ाकू विमानों की खरीद के प्रस्तावित सौदे में लगभग 80 प्रतिशत लड़ाकू विमानों का निर्माण भारत में ही किया जाएगा। इस परियोजना के तहत कुछ विनिर्माण इकाइयों को फ्रांस से भारत में स्थानांतरित किया जाएगा।

- इन विमानों का 80 प्रतिशत निर्माण भारत में होगा।

सूत्रों ने बताया कि भारतीय पक्ष इस सौदे में स्थानीय स्तर पर उत्पादन बढ़ाने के लिए फ्रांसीसी अधिकारियों के साथ बातचीत कर रहा है और विमानों की सेवाक्षमता को अधिकतम करने के लिए भारत में ही रखरखाव, मरम्मत और ओवरहॉल (एमआरओ) सुविधा स्थापित करने की योजना बना रहा है। सूत्रों के अनुसार, दोनों पक्ष परियोजना की लागत पर आगे बातचीत करेंगे।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

विचार बिन्दु

सुंदर विचार जिनके साथ हैं। वे कभी एकांत में नहीं हैं। –सर पी. सिडनी

सर्दी-जुकाम और मौसमी बीमारियों में अपनाएं दादी-नानी के अनमोल नुस्खे

देश इस समय सर्दी, कोहरे और शीत लहर की चपेट में है। मौसम में हो रहे बदलाव के कारण कफ, कोल्ड, फीवर, गले में खराश, खांसी, सिर में दर्द आदि समस्याएं होना आम बात है। इस समय घर घर में सर्दी और जुकाम का प्रकोप देखा सकता है। सर्दी के मौसम में वातावरण में नमी आ जाती है, जिससे लोगों में संक्रमण फैलने का खतरा बढ़ जाता है। यही वजह है कि लोग इस मौसम में सर्दी, खांसी, जुकाम से परेशान हो जाते हैं। दादी–नानी के ये नुस्खें अपनाने की जरूरत होती हैं जिनका शरीर को कोई नुकसान नहीं होता हैं और बीमारी भी जड़ से समाप्त होती हैं।

अंग्रेजी दवाओं के मकड़जाल से आम आदमी परेशान है। जिसे देखो अंग्रेजी दवाइयों के पीछे भागता मिलेगा। सामान्य बीमारियों से लेकर असाध्य बीमारियों की दवा आज घरों में मिल जाएगी। इनमें चिकित्सकों द्वारा लिखी दवाइयों के अलावा वे दवाइयां भी शामिल है जो मेडिकल स्टोर्स से बीमारी बताकर खरीदी गई है अथवा गूगल से खोजकर निकाली गई है। ये दवाइयां असली है या घटिया अथवा नकली ये भी आम लोगों को मालूम नहीं है। घटिया दवाइयों का बाजार आजकल खूब फलफूल रहा है। आये दिन घटिया और नकली दवाइयां बरामद करने की खबरें मीडिया में सुर्खियों में पढ़ने को मिल रही है। इन दवाइयों के सेवन से साधारण खांसी बुखार और जुकाम को ठीक होने में एक पखवाड़ा या महीना लग जाता है। इसी बीच दादी–नानी के नुस्खे सोशल मीडिया पर प्रचलित होने लगे है।

आइये,आज हम आपको एक बार फिर दादी–नानी के नुस्खों की याद दिला रहे है। स्वस्थ रखने के लिए नानी–दादी के नुस्खे आज भी महत्वपूर्ण हैं। वे हमारे रोजमर्रा के जीवन से जुड़े हैं। अगर उनका पालन किया जाए तो बड़ी से बड़ी बीमारी का मुकाबला किया जा सकता है। आज की भागदौड़ भरी लाइफ स्टाइल में थोडी सी भी कोई हेल्थ प्रॉब्लम होती है तो हम फौरन डॉक्टर के पास जाते हैं या फिर मेडिकल स्टोर से जाकर के अपनी दिक्कत बताकर के दवाइयां ले लेते हैं। लेकिन पुराने समय में ऐसी दिक्कतों के लिए दादी–नानी के नुस्खे आजमाएं जाते थे। ये बेहद कारगर भी होते थे। बदलते मौसम में सर्दी जुकाम होना आम बात है। दादी नानी ने इन बीमारियों का मुकाबला करने के लिए हमें योग, साधना, देशी चिकित्सा और प्रकृति से मित्रता का सन्देश दिया था। आधुनिक चिकित्सा पद्धति ने हमें दादी–नानी के नुस्खों से दूर कर दिया। बाज़ार में भले ही कई दवाएँ मिलती हों, लेकिन भारतीय परिवारों में दादी–नानी के घरेलू नुस्खे पीढ़ियों से बच्चों को राहत देने के लिए अपनाए जाते रहे हैं। दादी–नानी के नुस्खे कारगर माने जाते हैं। ये घरेलू उपाय न सिर्फ आसान हैं, बल्कि शरीर को प्राकृतिक तरीके से राहत भी देते हैं।

मौसमी बीमारियों से बचाने के लिए दादी–नानी के नुस्खे चमत्कारिक रूप से काम करते हैं और बहुत जल्दी आराम देते हैं। सुबह खाली पेट गुनगुना पानी पीने से पाचन सुधरता है और शरीर गर्म रहता है। खाने में तिल, गुड़, मूंगफली, अदरक और लहसुन का प्रयोग अधिक करें। हल्दी वाला दूध रात में पीने से रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है और नींद अच्छी आती है। ठंड के दिनों में धूप सेकना बेहद फायदेमंद है। इससे शरीर में विटामिन–डी की पूर्ति होती है और हड्डियां मजबूत रहती हैं। सरसों या तिल के तेल की हल्की मालिश रोज करने से रक्तसंचार बेहतर होता है और त्वचा की नमी बनी रहती है। योग, साधना, व्यायाम और हमारी रसोई में मिलने वाले मसालों से उपचार जैसी प्राकृतिक और देशी चिकित्सा ने हमारी बहुत मदद की है। सर्दी, जुकाम, खांसी, गले में खराश आम बात है। दादी नानी के नुस्खों ने इनका उपचार भी हमें बताया है। ये नुस्खे इतने ज्यादा कारगर हैं कि डॉक्टर और मेडिकल साइंस भी उन्हें मानने से मना नहीं करते हैं। हल्दी वाला दूध हो या नमक मिले गरम पानी के गरारे जुकाम और गले दर्द में दोनों ही कारगर इलाज है। अदरक को पानी में उबालकर और फिर शहद के साथ खाया जाए तो यह कफ, गले में खराश और गला खराब होने की दिक्कत से छुटकारा दिला सकती है। अदरक को शहद के साथ खाने से गले में होने वाली सूजन और जलन में भी राहत मिलती है। इसी भांति अजवायन, लोंग, काली मिर्च, तुलसी गिलोय, मलेठीयुक्त पान, शहद, दालचीनी आदि के नुस्खे भी संजीवनी साबित हुए है। हल्दी एक महत्वपूर्ण औषधि है, जिसका इस्तेमाल हमारी रसोई में खाने में स्वाद बढ़ाने के लिए किया जाता है। वहीं कुछ लोग घाव लगने पर हल्दी की पट्टी भी करते हैं, जो वैज्ञानिक नजरिए से भी सही है। एंटी–बैक्टीरियल गुणों से भरपूर हल्दी घाव भरने में मदद करती है। उल्टा लेटकर ऑक्सीजन प्राप्त करने के नुस्खे को एलोपेथी की मान्यता मिली है। यही नहीं इनमें से ज्यादातर नुस्खों का कोई साइड इफेक्ट नहीं होता। लोग खांसी से राहत पाने के लिए तरह–तरह के घरेलू नुस्खे अपनाते हैं। उन्हीं में से एक नुस्खा गर्म पानी की भाप का भी है। गर्म पानी की भाप हमारे शरीर में जमी बलगम को हल्का करने के साथ ही स्वास नलिका को आराम देने का काम करती है। अगर आपको खांसी आती है तो आप 5 से 10 मिनट तक गर्म पानी की भाप लें। इससे गले को राहत मिलेगी और खांसी दूर होगी। दादी–नानी का यह नुस्खा कारगर होगा। विशेषज्ञ कहते है, अगर सर्दी–खांसी तीन दिन से ज्यादा बनी रहे या बुखार के साथ बढ़े, तो तुरंत डॉक्टर से संपर्क करें।

हल्दी वाला दूध हो या नमक मिले गरम पानी के गरारे जुकाम और गले दर्द में दोनों ही कारगर इलाज है। अदरक को पानी में उबालकर और फिर शहद के साथ खाया जाए तो यह कफ, गले में खराश और गला खराब होने की दिक्कत से छुटकारा दिला सकती है। अदरक को शहद के साथ खाने से गले में होने वाली सूजन और जलन में भी राहत मिलती है।

दादी–नानी के नुस्खे शुरुआती लक्षणों में बेहद कारगर हैं, लेकिन लंबे समय तक राहत न मिले तो चिकित्सकीय सलाह लेना जरूरी है। दादी–नानी के ये पुराने नुस्खे आज भी उतने ही असरदार हैं। इन घरेलू और प्राकृतिक उपायों को अपनाकर हम न सिर्फ सर्दी–खांसी से बच सकते हैं बल्कि दवाइयों पर निर्भरता भी कम कर सकते हैं।

असल में हमारी बीमारी का इलाज हमारे पास ही होता है। कई बार उसके बारे में जानकारी नहीं होती और कई बार जानकारी होती है तो हम उस दिशा में प्रयास नहीं करते। प्रकृति के बिना हमारा जीवन संभव नहीं है। सचमुच प्रकृति, पर्यावरण और आयुर्वेद का अद्भुत संगम है। मानव जीवन के लिए तीनों कारकों के एकाकार होने की आज के समय महती जरूरत है। इससे प्रकृति को जहाँ साफ सुथरा रखा जा सकता है वहां पर्यावरण भी हमारे अनुकूल होगा जिससे आयुर्वेद को भी संरक्षित रखा जा सकेगा। जो मनुष्य प्रकृति के जितना अधिक अनुकूल है। स्वास्थ्य की दृष्टि से वह व्यक्ति उतना ही अधिक निरापद एवं व्याधियों के आक्रमण से दूर होगा।

–अतिथि संपादक,
बाल मुकुन्द ओझा,
वरिष्ठ लेखक एवं पत्रकार

राशिफल शुक्रवार 16 जनवरी, 2026

पंडित अनिल शर्मा

माघ मास, कृष्ण पक्ष, त्रयोदशी तिथि, शुक्रवार, विक्रम संवत 2082, मूल नक्षत्र शनिवार प्रातः 8:12 तक, धुव्र योग रात्रि 9:06 तक, गरकरण प्रातः 9:19 तक, चन्द्रमा आज प्रातः 5:48 से धनु राशि में संचार करेगा।

गृह स्थिति: सूर्य–मकर, चन्द्रमा–धनु, मंगल–मकर, बुध–धनु, गुरू–मिथुन, शुक्र–मकर, शनि–मीन, राहु–कुम्भ, केतु–सिंह

आज भद्रा रात्रि 10:22 से आरम्भ होगी। आज प्रदोष व्रत, मास शिवरात्रि, मेरू त्रयोदशी (जैन), श्री आदिनाथ निर्वाण दिवस है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चर सूर्योदय से 8:40 तक, लाभ–अमृत 8:40 से 11:18 तक, शुभ 12:36 से 1:55 तक, चर 4:33 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 10:30 से 12:00 तक। सूर्योदय 7:21, सूर्यास्त 5:51

मेष
मेषः नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं। व्यावसायिक यात्रा संभव है।

वृष
अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। मित्रों/रिश्तेदारों से वाद-विवाद टालना ठीक रहेगा। आज बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है।

मिथुन
परिवार में आपसी सहयोग–समन्वय बना रहेगा। आपसी सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। परिवार में धार्मिक–मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

कर्क
स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। दिनचर्या में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

सिंह
व्यावसायिक कार्यों से संबंधित विवादों का निपटारा हो सकता है। नौकरीपेशा व्यक्तियों को भागदौड़ रहेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कन्या
घर–परिवार में सुख–शांति बनी रहेगी। परिवार में सुख–सुविधाओं में वृद्धि होगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों का प्रभाव–प्रभुत्व बढ़ेगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

तुला
व्यावसायिक कार्यों से संबंधित वार्ता के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे।

वृश्चिक
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक वार्ता के लिए दिन अच्छा रहेगा।

धनु
मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनोबल–आत्मविश्वास बढ़ेगा। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। घर–परिवार में सुख–सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

मकर
घर–गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। मन में असंतोष बना रहेगा। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

कुंभ
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। परिवार में सुख–सुविधाएं बढ़ेगी।

मीन
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

गांव की चौपाल की चर्चाएं -- संसद की चर्चाओं से कम नहीं

महावीर सिंह

घुमंतू अपने पुराने मित्र के साथ, एक बड़े गांव की चौपाल पर पहुंचा। शाम को दिन ढलने के बाद बहुत से ग्रामीण किसी ऐसे आदमी की पोली (बैठक) में एकत्र हो जाते है जहां हुक्के की व्यवस्था हो और अलाव जला कर तपने के लिए लकड़ियों की सुविधा हो। मित्र के साथ जब मैं पहुंचा तब 15,20 आदमियों की चौपाल जुड़ चुकी थी। उस वक्त उनकी चर्चा का विषय था बंगाल में एक जगह ईडी की रैड का। एक सदस्य का कहना था कि ममता बनर्जी ने ईडी के काम में दखल डाल के ठीक नहीं किया। दूसरे का मत था ममता बनर्जी अपने प्रदेश में होने वाले चुनाव की गोपनीय सूचनाएं वहां से लेकर आई है जिसका उसे पूरा अधिकार है। जो मामला ईडी बता रही है वह तो 5,7 साल पुराना है। ईडी को अभी होने वाले चुनाव से ठीक पहले ही क्यों याद आया?

तीसरे सदस्य में कहा वहां तो दोनों पक्ष कोर्ट चले गए वहीं से सही गलत का फैसला होगा। कोई ओर बात करो।किंतु लगता है ईडी ने इस बार बर्र के छत्ते में हाथ डाल दिया। एक भाई में कहा, देखो यह जो संस्थाएं है ईडी, सीबीआई आदि पर राजनीतिक आकाओं का दबाव तो हमेशा ही रहता है किंतु पहले इनका हर चुनाव चाहे राज्य का हो या फिर देश का इतना उपयोग/दुरुपयोग नहीं होता था। अब तो दिखने में आ रहा है कि हर सुनाव के 1,2,3 महीने पहले यह संस्थाएं अतिसक्रिय हो जाती है। लगता है सत्तासीनों को चहुं ओर अपनी ही विजय पताका दिखनी चाहिए।

चौपाल की चर्चा इंटरेस्टिंग होती जा रही थी। चर्चा शुरू हुई जीरामजी कानून पर। एक सदस्य का विचार था कि यह कानून तो केंद्र सरकार की मर्जी वाला कानून है। विपक्ष ने तो पुरजोर मांग की थी कि बिल को समीक्षा के लिए संसदीय समिति को सौंपा जाए किंतु बहुमत के अहंकार के आगे विपद की क्या बिसात। ओर नहीं तो जनता की ही राय ले लेते। अब काम कहां पर होंगे अर्थात जहां काम होंगे वह क्षेत्र, राज्य केंद्र सरकार तय करेगी।कौन से काम होंगे यह भी केंद्र सरकार तय करेगी और पहले 90 प्रतिशत खर्चा केंद्र सरकार से आता था अब वह घटा के 60 प्रतिशत कर दिया।यह सोचने की बात है कि कर्जे में डूबी अधिकांश राज्य सरकारों में से कितनी सरकारें ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार सृजन के लिए कितना बजट निकाल पाएंगी???? राज्य सरकारों और ग्राम पंचायतों की भूमिका तो लगभग शून्य सी हो गई। यह कोई अच्छी बात है क्या???

चर्चा आगे बढ़ी। एक नवयुवक में कहा मनरेगा में भ्रष्टाचार चरम बिंदु तक पहुंच गया था। शुद्धिकरण के लिए सरकार को यह कदम उठाना पड़ा। तीसरे ने कहा हां, शुरू के 1,2,3 साल खूब भ्रष्टाचार था। काम मशीन से करवाते, मजदूरों का मस्टरोल भरते। मशीन को किराया चुकाने के बाद जो पैसा बचाता वह मजदूरों और ग्राम स्तर के अधिकारी, नेता बांट लेते थे। मस्टरोल में फर्जी हाजरी लगती थी। ओर भी कई तरीके थे भ्रष्टाचार करने के किंतु पिछले 15 साल से तो बहुत सुधार हो गया था। मजदूरी सीधे बैंक खाते में जाती थी। रोजगार चाहने वालों के चयन, कामों के चयन का तरीका भी काफी हद तक पारदर्शी हो गया था।

मजदूरी भुगतान की रकम को किए गए काम से जोड़ा गया। डिजिटाइजेशन शुरू किया इसका श्रेय अब की सरकारें ले रही है। स्वर्गीय मन मोहन सिंह को किन किन गैर वाजिब उपाधियों से नहीं नवाजा गया। अब तो इसे खत्म करना कोई बुद्धिमानी का काम नहीं कहा जा सकता। चलते रस्ते यों ही गांधीजी का नाम हटाया। इसका विरोध तो होगा किंतु शायद उतना असरदार शायद नहीं हो जितना, लगभग साल भर चले किसान आंदोलन का हुआ था। सरकार को कानून वापिस लेने पड़े यद्यपि कीमत के रूप में लगभग 700 किसानों की बलि हुई। आतंकवादी, खालिस्तानी, कुलक किसानों का आंदोलन जैसे विशेषणों से भी अत्यंत निंदनीय तरीकों से उन्हें नवाजा गया। एमएसपी के लिए कानून बना नहीं।

अच्छा होता यह जीरामजी कानून बनाने से पहले जनता की राय और संसदीय समिति की राय ले लेते। सरकार ज्यादा लोकतांत्रिक दिखती। खैर सरकारों का अपना अहंकार होता है, बहुमत होता है, कुछ भी कानून पास करा सकते है। फिर एक सदस्य ने राय व्यक्त कर दी कि विपक्ष का काम आलोचना करना होता है सो कर रहा है किंतु संसद में बहुमत का अर्थ ही यह है कि बनाए गए कानून जनहित में है। विपक्ष ने तो नौटबंदी, लोकडाउन, मतदाता सूचियों के रिवीजन का भी घणा विरोध कर लिया, क्या निकला?? जनता ने चुनाव जीता कर उन फैसलों पर मोहर लगा दी न।

एक बुजुर्ग में राय व्यक्त की कि बहुमत सदा ही सही हो यह भी जरूरी नहीं। चुनाव तो कई दूसरे मुद्दों, तात्कालिक जन भावनाओं, सघन प्रचार अभियान और दूसरे पक्ष के साधनों पर तरह तरह के अंकुश लगा कर भी जीते जाते है। अभी तक चुप एक युवक में कहा दादा बिल्कुल ठीक कह रहा है। यह बताओ चुनाव के दौरान 5,10 हजार रुपए सीधे सीधे मतदाताओं के खाते में डाल दें तो लोग प्रभावित नहीं होंगे???? उसका कहना था चुनाव आयोग की निष्पक्षता संदेहपूर्ण तो लगने लगी, हालांकि अपने कहने से कुछ होने वाला नहीं।

चर्चा घूमकर आगई देश के उच्च न्यायालयों, सुप्रीम कोर्ट की कार्य प्रणाली और सारी न्याय व्यवस्था पर। एक बंधु में कहा, यह भी कोई बात हुई कि जो काम अत्यंत रूटीन में जिला व उसके नीचे के स्तर के कार्यालयों में होने चाहिए उनके लिए लोग इन बड़े न्यायालयों में जाते हैं या जाने को विवश हो जाते है। पिछले छैएक महीने से दिल्ली में आवारा कुत्तों को कौन रखे, कहां रखे, कैसे रखे इसी पर ही बहस चल रही है। उच्चतम स्तर से भी कोई क्लियर कट आदेश, निर्णय नहीं आया है। लगता है डॉग लवर्स बड़े–बड़े लोग हैं जो सुप्रीम कोर्ट में जाने को तैयार बैठे रहते है। एक सज्जन में कहा छोटा सा आदेश जारी करना चाहिए --जो कोई पालतू कुत्ता रखे, वह सुनिश्चित करे कि कुत्ता सड़क, रास्ते में मलमूत्र नहीं करे। उसे अपने घर में फ्री कराए और फिर घुमाए। आवारा कुतों को सड़क पर कोई व्यक्ति खाद्य सामठी नहीं दे। आवारा कुतों के लिए गौशालाओं की तर्ज पर, कुत्ता घरों का सृजन हो। गौशालाओं के लिए बजट की पूर्ति के लिए किसानों पर लाग (टैक्स का ही रूप) लगा दी वैसे ही कुत्ता शालाओं के लिए भी आम आदमी को दंडित कर दो, कौन विरोध करने वाला है????

वैसे आवारा गायों, सांडों से गांवों में किसान खासे परेशान हैं किंतु आस्था के आगे उनकी कौन सुने? सुप्रीम या उच्च न्यायालयों में कोई अर्जी पानडा लगाने के लिए मंहगे वकील की फीस उनके बस की बात नहीं, सो दिन रात पहरा देकर बचाओ अपनी फसल। वैसे यह खर्चा की गणना में शामिल नहीं होता, घर से ही भुगतना होता है।

आश्चर्य की बात तो यह कि राजस्थान की विधान सभा ने कानून बनाया कि 3 साल के बछड़े की खरीद फरोख्त व परिवहन नहीं होगा। किसानों को इनको आवारा छोड़ना ही पड़ता है। शायद कानून बनाने वाले कृषि व ग्रामीण व्यवस्था से जुड़े विधायक तो यह भली भांति समझते ही होंगे कि एक गैर उत्पादक बछड़े को पाला जाए तो कितना खर्चा प्रतिदिन किसान को करना पड़ेगा???? किंतु फिर भी चुप रहे,क्यों??? प्राचीन काल में गाय–बैल, बछड़े कृषि व ग्रामीण अर्थव्यवस्था के महत्वपूर्ण सहयोगी थे किंतु अब कृषि के यंत्रीकरण के बाद नहीं?? बछड़े व बाखड़ी गाय पर कोई किसान, पशु पालक क्यों खर्चा करे??

अब परबतसर के प्रसिद्ध मेले में कितने बैलों की खरीदी होती है???? कृषि यंत्रीकरण के बाद हम सब को गाय के नाम पर भावनाओ के आधार पर नहीं धरातलीय आधारों पर निर्णय करने चाहिए।

न्याय व्यवस्था पर चर्चा होते होते चर्चा गाया, गोशालाओं पर चली गई। एक सज्जन में इसे मोड़ा और मंहगी होती न्याय व्यवस्था की बात चलाई। एक अधेड़ उम्र वाले सज्जन में यों कहा कि पहले लोग यों कहते थे कि जिस घर के मानगी (बीमारी) और मुकद्दमा लग जाए उसकी तो बर्बादी तय है। अर्थात मुकद्दमा लड़ना मंहगा होता है। यह वर्षों से लोग जानते हैं। दूसरे सज्जन ने कहा भाई वकील इतने मंहगे हो जाए कि आम आदमी के लिये अच्छा पैरवीकार लेना दुस्वप्न हो जाए, यह तो ठीक नहीं। फिर तो लोग सही ही कहते है न्याय केवल अमीर ही प्राप्त कर सकते है या खरीद सकते हैं, जैसा आजकल आम आदमी रूटीन में कहने लगा।

एक कानून की पढ़ाई करने वाला नवयुवक भी ताप सेक रहा था बोला कि अगर बड़े न्यायालय चाहें तो एक एक फैसले से हजारों मुकदमों का फैसला एक साथ कर सकते है।जैसे नीचे के न्यायालयों से लेकर उच्चतम न्यायालय तक दसियों हजार जमानत अर्जियां वर्षों से लंबित है जबकि सुप्रीम कोर्ट एक बार नहीं अनेक बार कह चुका की जमानत अधिकार है जेल अपवाद है। सुप्रीम कोर्ट जमानत अर्जी में 1,2,5,10 जो भी शर्ते लगानी हों वे स्पष्ट लिखदे और अधीनस्थ समस्त न्यायालयों को आदेश दे की उनके फैसले के अनुसार समस्त पेंडिंग बेल अर्जियों को 1,2 माह में रिव्यू करे और उनके आदेश के अनुसार जिनमें जमानत दी जा सकती है उनमें जमानत दे और सुप्रीम कोर्ट,उच्च न्यायालयों को पालना रिपोर्ट भेजें।

एक–दूसरे नवयुवक का कहना था कि जब पुलिस ने, जांच पूरी करके कोर्ट में चार्जशीट पेश कर दी तो फिर अभियुक्त को जेल में क्यों रखा जाए??? अनुसंधान पूर्ण होने का अर्थ है कि पुलिस समस्त लिखित, मौखिक साक्ष्य एकत्र कर चुकी,उसे अब कोई आगे जांच नहीं करनी तो फिर जेल में रखने का क्या औचित्य?? जो नजीरें कोर्ट में पेश होती हैं उन्हें यातो मानी जाए या पूर्ण विवेचना के आधार पर अमान्य किया जाए केवल तथ्य भिन्न का रूटीन लेख कर नजरअंदाज नहीं की जा सकेंगी,इस पर सख्त आदेश जारी हों।

इसी प्रकार के सिविल, सेवा संबंधित, राजस्व आदि क्षेत्रों के कई कानूनी मसले है जिन पर सुप्रीम कोर्ट सिद्धांत तय कर चुका किंतु फिर भी केसेज घूम फिर के उच्च न्यायालयों में पहुंच जाते है क्यों???

तथ्य भिन्न का एक ऐसा वाक्य, तर्क है जिस से किसी भी पुरानी नजीर को बेअसर कर दिया जाता है। इस प्रकार की अपील, पिटिशन आदि को एक साथ सुना जाए, निर्णय किया जाए जिनमें कानूनी आधारों को पुनर्स्मृत कराए जाए और अधीनस्थ न्यायालयों को उन आधारों के आधार रिव्यू के लिए आदेशित करें।अगर कोई नजीर लागू नहीं होती तो उस पर यह विवेचना कर ही रिव्यू निस्तारित हो की इन इन कारणों से व नजारें लागू नहीं होती।

काफी समय बीत चुका था, एक सज्जन में कहा अब बंद करो यह सब ओर सो जाओ किंतु चलते चलते एक युवक में प्रश्न दाग दिया कि आज के युग में हर घर में रेडियो, टीवी उपलब्ध है तो यह राजनीतिक पार्टियां करोड़ न करोड़ रुपए खर्च कर लाखों न लाख लोगों की भीड़ क्यों इक्कठी कर यातायात व दूसरी सेवाओं को दुष्प्रभावित क्यों करती है?? नेता लोग टीवी पर अपना भाषण दे दें,उनके कार्यकर्ता धर गांव स्तर पर स्क्रीन लगा कर सीधा प्रसारण लोगों को सुना दें। सोशल मीडिया का उपयोग कर सकते है तो फिर यह हजारों करोड़ रुपए का प्रचार क्यों??? साथ बैठे सज्जन में कहा क्योंकि उनके पास पैसा है। सैकड़ों,हजारों खर्चे वाले हर बड़े ठेके में सत्ताधारी पार्टियों को भारी राशि मिलती है। उसका उपयोग चुनाव के लिए भीड़ इक्कठी करने में किया जाता है। भीड़ के लिए परिवहन, खाना आदि की व्यवस्था और करोड़ों रुपए की स्टेजे तैयार की जाती है। चुनाव के समय नेता लोग हवाई जहाजों में ऐसे उड़ते नजर आते है जैसे शहर में स्कूटर सवारियां दिखती है, ओर करते क्या है तूं–तूं, मैं ही मैं, तुम काले हम सफेद घने!!!!!

बुजुर्ग लोग एक एक कर जाने लगे। कुछ युवा लोगों की इच्छा थी कि सूचना के अधिकार, अन्ना हजारे आंदोलन – भ्रष्टाचार – लोकपाल – सूचना आयुक्त ,दल बदल विरोधी कानून जिस से लोकसभा, विधान सभा में बहस के दौरान भी सांसद विधायक अपना स्वतंत्र विचार व्यक्त नहीं कर सकते, 2जी व कोयला घोटाला आदि पर भी चर्चा करो किंतु वे बहुमत के आगे हार गए और चौपाल बंद हुई।

जाते–जाते एक सज्जन बोला सूचना के अधिकार से अधिकार गायब हो गया और सूचना मनमर्जी से हो गई। रही बात 2, कोयला खनन घोटाले की सो खोदा पहाड़ निकली चुहिया। केवल भरम फैला कर जन भावनाएं भड़काई गई। दूसरा जो अभी तक मोबाइल देखने में ही व्यस्त था, जोर देकर बोला, कुछ भी कह लों किंतु हमारे प्रधानमंत्री जी अच्छा वक्त कोई है ही नहीं। विषय चाहे शासन की नीतियों का हो, मंदिरों–मस्जिदों का हो, धार्मिक ग्रंथों का हो, परीक्षार्थियों को टिप्स देने का हो, नई योजनाएं जनता को आसानी से याद रहे तो उनका संक्षिप्त नाम देना हो अब में उनके भाषण बेमिसाल। अब देखो आज ही सोमनाथ में भगवान भोलेनाथ पर क्या भाषण दिया, लोग दांतों तले अंगुली दबाने लगे --ऐसी तार्किक व्याख्या तो बड़ा से बड़ा पंडित भी नहीं कर सकता। जय राम जी।

–महावीर सिंह, पूर्व आईएएस

भाषा ही समाज को जिंदा रखती है

राजस्थानी भाषा मान्यता के उजले दिन आ रहे हैं

राजेन्द्र जोशी

केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने कहा कि अपने बच्चों की तरक्की के लिए जो भाषा बोलनी पड़े, सीखनी पड़े, बोलने व सीखने के लिए जितनी भी भाषा सीखे, कोई विरोध नहीं है, मगर घर में बच्चों के साथ मारवाड़ी व हिंदी में ही बात करें। स्वभाषा में बात करेंगे, सिखाएंगे तो बच्चे मारवाड़ राजस्थान के दैदीप्यमान इतिहास के साथ अपने आप जुड़ जाएगा। शाह ने माहेश्वरी समाज के एक कार्यक्रम में कहा कि भाषा ही समाज व धर्म को जिंदा रखती है, सद्बुद्धि को आगे बढ़ाती है। इसलिए बच्चों के साथ मातृभाषा का प्रयास कीजिए।

भारत के गृहमंत्री अमित शाह का भाषा प्रेम देखकर राजस्थानी भाषा साहित्य और संस्कृति के उजले दिन दिखाई दे रहे हैं। सच में अगर गृहमंत्री की बात को गंभीरता से लिया जाए तो ऐसा लगता है कि वे राजस्थानी भाषा से प्यार कर रहे हैं। लेकिन राजस्थानी भाषा तो बरसो से समाज, परिवार और पूरे विश्व को जोडे हुए हैं।

राजस्थानी भाषा दुनिया के किसी भी देश से अछूती नहीं है जिस मारवाड़ी भाषा की गृहमंत्री बात कर रहे हैं वह मारवाड़ी दुनिया भर में अपने व्यापार के माध्यम से दुनिया की सेवा कर रहे हैं। और वह सभी अपने घरों में राजस्थानी भाषा बोलते हैं और राजस्थानी संस्कृति के साथ प्यार करते हैं। गृहमंत्री जी जानते है कि जब देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जापान की यात्रा पर थे तो वहां के स्थानीय कलाकारों ने राजस्थानी गीतों के माध्यम से प्रधानमंत्री का स्वागत किया था। राजस्थानी भाषा–साहित्य और संस्कृति सात समंदर पार भी अपना परचम लहरा रही हैं।

मारवाड़ी– राजस्थानी भाषा की गृहमंत्री जी बात कर रहे हैं और राजस्थान के जोधपुर शहर में माहेश्वरी समाज के लोगों को सलाह देते हैं कि घर–परिवार में ज्यादा से ज्यादा मातृभाषा का उपयोग होना चाहिए। उनकी यह बात शत प्रतिशत सही है। भाषा ही समाज को जिंदा रखती है। गृहमंत्री जी राजस्थान ही नहीं अपितु दुनिया–भर में रह रहे राजस्थानी आपकी बात की शत–प्रतिशत हम पालन करते हुए आपसे आग्रह करते हैं की भाषा तभी जिंदा रहेगी जब वह सरकारी संरक्षण में भी होगी, जब रोजगार का साधन बनेगी और रोजगार का साधन तभी बनेगी जब भारत सरकार द्वारा संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल होगी। गृहमंत्री जी की जिम्मेदारी भी है कि वह भाषाओं को संरक्षण दे, भाषाओं को जिंदा रखने में सरकार खुद आगे आए ,किसी भी भाषा को संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल करने का जिमा गृह मंत्रालय का है।

गृहमंत्री जी यह भी जानते हैं कि दुनिया में व्यापार उद्योग का बड़ा हिस्सेदार राजस्थानी समाज ही हैं। जब भारत सरकार के गृहमंत्री मातृभाषा के प्रेम की बात कर रहे थे तो उस समय सुखद एहसास हुआ संभवतः भारत सरकार का मन राजस्थानी भाषा को मान्यता देने का बन गया है। ऐसा इसलिए भी लगा कि गृहमंत्री जी की उपस्थिती में कार्यक्रम में मौजूद केंद्रीय संस्कृति मंत्री गजेंद्र सिंह जी ने भी अपना अधिकांश भाषण राजस्थानी भाषा में दिया था।

हम वर्षों से यह मांग कर हैं और साथ ही साथ दुनिया भर में रह रहे राजस्थानी भी भारत सरकार से निरंतर प्रयासरत रहे हैं की राजस्थानी भाषा को सरकार की मान्यता मिलनी चाहिए। राजस्थानी भाषा को सरकारी मान्यता मिलने से व्यापार, उद्योग, संस्कृति और आर्थिक क्षेत्र में भी भारत को विकसित बनाने में सहयोग मिलेगा। विकसित भारत तभी बन पाएगा तब राजस्थानी संस्कृति राजस्थानी भाषा साहित्य की उसमें सहभागिता होगी। सौभाग्य से इस कार्यक्रम में लोकसभाध्यक्ष ओम बिरला भी मौजूद रहे।

इस अनुकूल वातावरण में लोकसभाध्यक्ष राजस्थान के पैंतीस सांसदो के साथ गृहमंत्री जी को आठाह करे तो बात बन सकती है। दूसरी तरफ राजस्थान के प्रभावशाली लोग अब गंभीरता से बात करें, उन्हें राजस्थानी भाषा की खूबसूरती की ठीक से जानकारी दी जाए तो राजस्थानी भाषा की मान्यता के उजले दिन देखे जा सकते हैं।

–राजेन्द्र जोशी,
शिक्षाविद-साहित्यकार

बीकानेर में पारा 24 डिग्री पहुंचा, सर्दी से राहत

दिन में ठंड कम, वेस्टर्न डिस्टर्बेंस से बदल सकता है मौसम

- **पिछले दो दिन से बीकानेर में सर्दी का असर लगातार कमजोर बना हुआ है, सुबह और दिन के समय गर्माहट महसूस की जा रही है, जबकि रात में हल्की ठंड बनी हुई है**
- **अगले कुछ दिनों तक मौसम में ज्यादा बदलाव की संभावना नहीं है, फिलहाल सर्दी से राहत बनी रहेगी, हालांकि यदि आने वाले दिनों में नया पश्चिमी विक्षोभ सक्रिय होता है तो तापमान में गिरावट आ सकती है**

बीकानेर, (निसं)। यहां तापमान बढ़ने और कोहरा पूरी तरह खत्म होने से सर्दी से फिलहाल राहत देखने को मिल रही है। दिन में धूप तेज रहने से ठंड का असर कम हुआ है, जबकि रात में हल्की सर्दी बनी हुई है।

मौसम विभाग के अनुसार अगले कुछ दिन मौसम इसी तरह रहने की संभावना है, हालांकि पश्चिमी विक्षोभ सक्रिय होने पर बदलाव आ सकता है। बीकानेर में अधिकतम तापमान 24 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया, जबकि न्यूनतम तापमान 9 डिग्री सेल्सियस रहा। दिन के समय ठंड का असर काफी कम रहा। चटक धूप खिली रहने से लोगों को सर्दी से राहत मिली और दिन में गर्माहट का एहसास हुआ। सुबह के समय मौसम पूरी तरह साफ रहा। शहर में कोहरे की स्थिति बिल्कुल नहीं रही, जिससे विजिबिलिटी सामान्य बनी रही। इसका असर लोगों की आवाजाही और रोजमर्रा की गतिविधियों पर भी दिखा, जो बिना किसी बाधा के सामान्य रूप से चलती रहीं।

पिछले दो दिनों से बीकानेर में सर्दी का असर लगातार कमजोर बना हुआ है। सुबह और दिन के समय गर्माहट महसूस की जा रही है, जबकि रात में हल्की ठंड बनी हुई है।

मौसम विभाग के निदेशक राधेश्याम शर्मा के अनुसार अगले कुछ दिनों तक मौसम में ज्यादा बदलाव की संभावना नहीं है। फिलहाल सर्दी से राहत बनी रहेगी। हालांकि यदि आने वाले दिनों में नया पश्चिमी विक्षोभ सक्रिय होता है, तो तापमान में गिरावट आ सकती है और ठंड एक बार फिर बढ़ सकती है।

पिछले पांच दिनों के तापमान पर नजर डालें तो बीकानेर में सर्दी का असर धीरे–धीरे कमजोर होता दिखाई दिया है। न्यूनतम तापमान में बढ़ोतरी दर्ज की गई है, जिससे सुबह और रात की ठंड पहले के मुकाबले कम महसूस हुई। वहीं अधिकतम तापमान बढ़ने से दिन में धूप की गर्माहट साफ नजर आई।

'हमारी सरकार प्रदेश के साहित्य तथा सांस्कृतिक विरासत को संजोने के लिए प्रतिबद्ध'

मुख्यमंत्री ने की सभी से साहित्य को जीवन का हिस्सा बनाने की अपील

जयपुर। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि हमारे देश की संस्कृति एवं साहित्य अद्भुत है। यहां वृक्षों, पेड़ों, पहाड़ों और नदियों को पूजा जाता है। हमें अपनी इस सांस्कृतिक विरासत को संजोते हुए आगे बढ़ना है, ताकि आगामी पीढ़ी इससे प्रेरणा ले तथा गर्व की अनुभूति करे।

उन्होंने कहा कि हमारी सरकार प्रदेश के विकास के साथ-साथ अपनी संस्कृति और साहित्य के विकास के लिए भी प्रतिबद्ध है। उन्होंने सभी से साहित्य को जीवन का हिस्सा बनाने की भी अपील की।शर्मा गुरुवार को जयपुर में आयोजित जयपुर लिटरेचर फेस्टिवल के उद्घाटन सत्र को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि राजस्थान की धरती सदियों से ज्ञान, कला और संस्कृति की संवाहक रही है। जयपुर लिटरेचर फेस्टिवल विचारों का उत्सव एवं महासागर है। यह आयोजन साहित्य के साथ राजस्थान की सांस्कृतिक धरोहर को और अधिक उजागर करने में मददगार साबित होगा।

मुख्यमंत्री ने कहा कि राजस्थान साहित्य, संगीत और कला की पुण्य भूमि है। यहां आमेर के किले से लेकर हवा

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा जयपुर में आयोजित लिटरेचर फेस्टिवल के उद्घाटन सत्र में शामिल हुए।

महल तक हर विरासत में संस्कृति की झलक देखने को मिलती है। पृथ्वीराज रासो राजस्थान की वीरगाथात्मक संस्कृति का अद्वितीय उदाहरण है। उन्होंने कहा कि मीरा की भक्ति, ढोला-मारू की कहानियां आज भी करोड़ों हृदयों को स्पर्श करती है। विजयदान देथा, कन्हैयालाल सेठिया, कोमल कोठारी जैसे साहित्यकार राजस्थान की साहित्यिक और सांस्कृतिक चेतना की मशाल हैं। उन्होंने कहा कि राजस्थान की धरा भक्ति और शक्ति की धरा है। महाराणा प्रताप, पन्नाधाय, अमृता देवी जैसे शूरवीरों ने अपने त्याग, बलिदान और समर्पण से प्रदेश की मिट्टी को गौरवान्वित किया है।

शर्मा ने कहा कि किताबें जीवन को समझने का नया दृष्टिकोण देती हैं। साथ ही साहित्य मनुष्य को संवेदना और करुणा से जोड़कर चिंतनशील और विनम्र बनाता है। हमारे पूर्वजों ने ज्ञान, विज्ञान, अनुसंधान और जनकल्याण के ग्रंथ श्लोक में लिखे और इस ज्ञान को साहित्य के द्वारा लोगों तक पहुंचाकर

> ■ इस अवसर पर उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी, डॉ. प्रेम चंद बैरवा, पुलिस महानिदेशक राजीव कुमार, जेएलएफ डायरेक्टर नमिता , उपस्थित रहे

लोकप्रिय बनाया। उन्होंने कहा कि मुगल आक्रांताओं के विरुद्ध वीरों को प्रेरित करने, आजादी के आंदोलन में सेनानियों में जोश भरने, आपातकाल के दिनों में तानाशाही शासन को चुनौती देने से लेकर युद्ध में सेना का हौसला बढ़ाने तक हर समय साहित्य ने राष्ट्रनिर्माण का कार्य किया।

इस अवसर पर उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी, डॉ. प्रेम चंद बैरवा, पुलिस महानिदेशक राजीव कुमार शर्मा, जेएलएफ डायरेक्टर नमिता गोखले, विलियम डेलरिंपल, टीमवर्क आर्ट्स के एमडी संजय रॉय सहित ख्यातनाम लेखक, साहित्यकार एवं बड़ी संख्या में आमजन उपस्थित रहे।

शराब की बोतलों पर सचित्र चेतावनी क्यों नहीं : हाईकोर्ट

'उपभोक्ताओं में कैंसर को लेकर जागरूकता फैल सके'

जयपुर। राजस्थान हाईकोर्ट ने प्रदेश में बेची जा रही शराब की बोतलों पर कैंसर की स्पष्ट और सचित्र वैधानिक चेतावनी नहीं करने पर स्वास्थ्य मंत्रालय, सामाजिक न्याय मंत्रालय, मुख्य सचिव, प्रमुख आबकारी सचिव, एफएसएसएआई और आबकारी आयुक्त से जवाब तलब किया है। एक्टिंग सीजे संजीव प्रकाश शर्मा और जस्टिस संगीता शर्मा की खंडपीठ ने यह आदेश अवनीन्द्र मिश्रा की जनहित याचिका पर प्रारंभिक सुनवाई करते हुए दिए।

जनहित याचिका में बताया कि खाद्य सुरक्षा एवं मानक अधिनियम के तहत मादक पदार्थों के लेबल पर अंग्रेजी भाषा में वैधानिक चेतावनी प्रकाशित करने का प्रावधान किया गया है। वहीं

> ■ शराब की बोतलों पर कैंसर की स्पष्ट और सचित्र वैधानिक चेतावनी नहीं करने परजवाब तलब किया

एम्स, दिल्ली के तीन वरिष्ठ विशेषज्ञ चिकित्सकों ने भी अपनी रिपोर्ट में माना है कि मादक पदार्थों के कैंसर की वैधानिक चेतावनी का प्रकाशन किया जाना चाहिए। इसके बावजूद शराब की बोतलों पर कोई स्पष्ट और प्रभावी वैधानिक चेतावनी प्रकाशित नहीं की जाती। याचिका में यह भी कहा गया कि अधिकांश शराब पीने वाले लोग निरक्षर या बहुत कम पढे-लिखे होते हैं। ऐसे में शराब की बोतल पर स्वास्थ्य संबंधी चेतावनी सचित्र और स्थानीय भाषा में होनी चाहिए। इसके अभाव में शराब का उपभोग करने वालों को यह जानकारी ही नहीं मिल पाती कि इसे पीने से कैंसर जैसी गंभीर बीमारी भी हो सकती है। याचिका में कहा गया कि याचिकाकर्ता ने संबंधित अधिकारियों को अभ्यावेदन देकर शराब की पैकेजिंग पर सचित्र और स्थानीय भाषा में वैधानिक चेतावनी प्रकाशित करने की गुहार की, जिससे इसके उपभोक्ताओं में कैंसर को लेकर जागरूकता फैल सके और स्वास्थ्य संबंधी खतरा कम हो सके। इसके बावजूद भी अधिकारियों ने कोई कार्रवाई नहीं की। जिस पर सुनवाई करते हुए खंडपीठ ने संबंधित अधिकारियों से जवाब तलब किया है।

पेड काटना गंभीर, दोषी अधिकारियों पर एक लाख रुपए का हर्जाना

जयपुर। राजस्थान हाईकोर्ट ने पंचायत भवन बनाने के लिए बिना सक्षम अधिकारी की अनुमति और तय संख्या से कई गुणा पेड़ काटने को गंभीर माना है। इसके साथ ही अदालत ने दौसा जिले के सिकराय के तत्कालीन एसडीएम सहित अन्य दोषी अफसरों पर एक लाख रुपए का हर्जाना लगाया है। एक्टिंग सीजे संजीव प्रकाश शर्मा और जस्टिस संगीता शर्मा की खंडपीठ ने यह आदेश विमला देवी की जनहित याचिका का निस्तारण करते हुए दिए। अदालत ने कहा कि सार्वजनिक उपयोग के लिए भवन निर्माण जरूरी हो सकता है, लेकिन इको सिस्टम को बनाए रखने के लिए मौजूदों पेडों की रक्षा करना भी उतना ही जरूरी है। भवन निर्माण योजना इस तरह बनाई जानी चाहिए की वृक्षों को कोई नुकसान नहीं पहुंचे।

अदालत ने अपने आदेश में कहा कि जनहित याचिका दायर होने के बाद वर्तमान एसडीएम ने नए पौधे लगाए हैं। जनहित याचिका में अधिवक्ता आरके शर्मा ने बताया कि ग्राम पंचायत पाटन का भवन बनाने के लिए तत्कालीन स्थानीय एसडीएम ने बिना अधिकार पेड़ काटने की अनुमति दे

> ■ अदालत ने दौसा जिले के सिकराय के तत्कालीन एसडीएम सहित अन्य दोषी अफसरों पर एक लाख रुपए का हर्जाना लगाया

दी। एसडीएम ने 17 बडे और 8 छोटे पेड़ काटने की अनुमति दी थी, लेकिन प्रशासन ने करीब 150 पेड़ काट दिए। वहीं राज्य सरकार की ओर से शपथ पत्र पेश कर कहा गया कि पंचायत भवन के निर्माण के लिए पेड़ों की कटाई के बदले अलग से भूमि चिन्हित कर वहां करीब पांच सौ पेड़ लगाए गए हैं।

इस पर अदालत ने कहा कि सरकार के शपथ पत्र में केवल 25 पेड काटने की बात कही है, लेकिन पेश किए गए दस्तावेजों से साबित है कि यह क्षेत्र घने वृक्षों से भरा हुआ था, जिन्हें अवैध रूप से काटा गया है।

वहीं संबंधित एसडीएम ने वृक्षों की कटाई के लिए किसी भी प्राधिकरण से कोई अनुमति नहीं ली है।

जयपुर सेंट्रल जेल में बंदियों के बीच झगड़ा, दो जेल प्रहरी घायल

जयपुर। जयपुर सेंट्रल जेल में बंदियों के बीच आपसी विवाद भड़क गया। जिसमें दोनों गुटों के बीच धक्का-मुक्की हुई और बीच-बचाव करने पर दो जेल प्रहरियों के घायल होने की खबर सामने आई है। इस संबंध में थाने में दोनों पक्षों ने एक-दूसरे के खिलाफ एफआईआर दर्ज कराई है।

लालकोठी थानाधिकारी प्रकाश राम विश्नोई ने बताया कि जेल में बंदियों को बाहर निकालकर गिनती की जा रही थी। इसी दौरान हाथ लगाने को लेकर विचाराधीन और सजायाफ्ता बंदियों में विवाद बढ़ गया और मारपीट तक पहुंच गया। घटना के समय दो जेल प्रहरी बीच-बचाव करने पहुंचे, लेकिन उन्हें भी चोटें आई। थाने में दोनों पक्षों ने एक-दूसरे के खिलाफ एफआईआर दर्ज करवाई है। जहां विचाराधीन बंदी संतोष उर्फ बच्चा नागल ने दंडित बंदी हरिशंकर और विष्णु के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज करवाई। संतोष ने आरोप लगाया कि पिछले करीब पन्द्रह दिन से ये बंदी जेल प्रहरियों की मदद के बहाने उसके साथ गलत व्यवहार कर रहे थे। सुबह गिनती के दौरान दंडित बंदी हरिशंकर ने उसे गेट से बाहर निकालकर धक्का दिया, जिससे झगड़ा शुरू हुआ।

सिंगल यूज़ प्लास्टिक पर निगम का बड़ा प्रहार, 1.32 लाख का कैरिंग चार्ज वसूला

जयपुर। नगर निगम की स्वास्थ्य शाखा ने नगर निगम आयुक्त डॉ गौरव सैनी के निर्देश पर अतिरिक्त आयुक्त प्रवीण कुमार के नेतृत्व में सिंगल यूज़ प्लास्टिक के खिलाफ बड़ी और सख्त कार्रवाई की गई। इस अभियान में राजस्थान राज्य प्रदूषण नियंत्रण मंडल, जयपुर एवं नगर निगम जयपुर के चालान प्रकोष्ठ (स्वास्थ्य शाखा) की संयुक्त टीम शामिल रही।संयुक्त कार्रवाई के दौरान

> ■ 150 किलो प्रतिबंधित प्लास्टिक जब्त, प्रदूषण फैलाने वालों पर सख्त कार्रवाई

शहर के विभिन्न क्षेत्रों में निरीक्षण कर प्रतिबंधित सिंगल यूज़ प्लास्टिक के उपयोग, भंडारण एवं वितरण में लिप्त प्रतिष्ठानों पर कार्रवाई की गई। मौके से करीब 150 किलोग्राम प्रतिबंधित सिंगल यूज़ प्लास्टिक जब्त किया गया। कार्रवाई के तहत नियमों का उल्लंघन करने वालों से कैरिंग चार्ज की राशि 1,32,100 रुपये (एक लाख बत्तीस हजार एक सौ रुपये) वसूल की गई।अतिरिक्त आयुक्त प्रवीण कुमार ने स्पष्ट किया कि सिंगल यूज़ प्लास्टिक पर्यावरण के लिए गंभीर खतरा है और इसके खिलाफ नगर निगम की कार्रवाई आगे भी निरंतर जारी रहेगी। उन्होंने व्यापारियों और आम नागरिकों से प्रतिबंधित प्लास्टिक का उपयोग न करने तथा पर्यावरण संरक्षण में सहयोग करने की अपील की। नगर निगम जयपुर ने चेतावनी दी है कि भविष्य में भी नियमों का उल्लंघन पाए जाने पर कठोर दंडात्मक कार्रवाई की जाएगी।

चोरी की बाइक के साथ आरोपी गिरफ्तार

जयपुर। चाकसू थाना पुलिस ने वाहन चोरी के एक मामले का खुलासा करते हुए चोरी की मोटरसाइकिल सहित आरोपी को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने आरोपी से बाइक जब्त कर अन्य वाहन चोरी की वारदातों के संबंध में पूछताछ शुरू कर दी है। उपायुक्त जयपुर दक्षिण राजर्षि राज ने बताया कि चाकसू इलाके में बजाज शोरूम के पास से 31 दिसंबर 2025 को एक अज्ञात बदमाश ने मोटरसाइकिल चोरी कर ली थी। पीड़ित की रिपोर्ट पर पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू की। विशेष टीम के गठन के बाद पुलिस ने कार्रवाई करते हुए राजेंद्र उर्फ गोलू सैनी (22) निवासी निवाई जिला को गिरफ्तार किया।

'पतंजलि में गुणवत्ता व मानकों का शीर्ष प्राधिकरण'

हरिद्वार/जयपुर। पतंजलि विश्वविद्यालय और भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान रुड़की के तत्वावधान में, अमेरिकन इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट एंड टेक्नोलॉजी के सहयोग से अमेरिका की शैक्षिणक शाखा ग्लोबल नॉलेज फाउंडेशन, निदेशक, भारतीय मानक ब्यूरो,

> ■ सनातन संस्कृति का गौरव वैश्विक स्तर पर स्थापितः श्रद्धेय आयुर्वेद शिरोमणि आचार्य बालकृष्ण

देहरादून और यूनिवर्सिटी ऑफ मैरीलैंड ईस्टर्न शोर के बिजनेस, मैनेजमेंट और अकाउंटिंग विभाग की संयुक्त पहल में 'स्वास्थ्य सेवा और प्रबंधन में स्मार्ट तकनीकों के एकीकरण' पर त्रिदिवसीय अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी 15-17 जनवरी को पतंजलि रिसर्च फाउंडेशन एवं विश्वविद्यालय के सहयोग से सभागार में आयोजित की गई। संगोष्ठी का आयोजन स्मार्ट तकनीकों के एकीकरण के माध्यम से प्रौद्योगिकी-प्रेरित, दीर्घकालिक स्वास्थ्य प्रबंधन को बढ़ावा देने और वैश्विक स्तर पर जन-स्वास्थ्य सुधार को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से किया गया।

पूज्य आचार्य बालकृष्ण जी ने अतिथियों का स्वागत पुष्पगुच्छ, अंगवस्त्र, स्मृति चिह्न देकर किया। शुभारंभ दीप प्रज्वलन, धन्वंतरि वंदना और चंद्रमोहन व उनकी टीम के समूहगान से हुआ।

'स्वास्थ्य सेवा और प्रबंधन में स्मार्ट तकनीकों के एकीकरण' पर त्रिदिवसीय अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित हुई।

कार्यक्रम का स्वागत उद्बोधन कुलपति प्रो. मयंक कुमार अग्रवाल ने दिया, तत्पश्चात आचार्य एवं अतिथियों ने सार पुस्तक का लोकार्पण किया।

अपने प्रेरक संबोधन में डॉ. देव शर्मा ने कबीर के दोहे के माध्यम से सेवा और लोककल्याण पर जोर दिया, डिजिटल स्वास्थ्य प्रबंधन, साइबर सुरक्षा और एआई-सहायित स्मार्ट प्रणालियों के माध्यम से सुरक्षित, प्रभावी और उन्नत चिकित्सा देखभाल की आवश्यकता रेखांकित की। कार्यक्रम में आईआईटी मंडी के निदेशक प्रो. लक्ष्मीधर बेहरा ने कहा कि आधुनिक एआई जीवन के हर पहलू को प्रभावित करता है, पर नैतिकता आवश्यक है। उन्होंने सिंक्रोना सिटी, नवाचार, स्टार्टअप्स और पतंजलि द्वारा भारतीय ज्ञान और सनातन मूल्यों के संरक्षण पर भी बल दिया।

अपने प्रेरक संबोधन में पूज्य आचार्य बालकृष्ण जी ने कहा कि 'सहस्त्र चंद्र दर्शन' भारतीय सनातन परंपरा में दीर्घायु, स्वस्थ और ज्ञानपूर्ण जीवन के उत्सव का प्रतीक है, जिसका सांस्कृतिक और आध्यात्मिक महत्व अत्यंत गहरा है। उन्होंने बताया कि सनातन के मूल सिद्धांत खेती और किसान के जीवन में रचे-बसे हैं, जहाँ प्राकृतिक कृषि, पंचमहाभूतों के सम्मान और प्रकृति से सामंजस्य के माध्यम से सुखी एवं संतुलित जीवन का संदेश निहित है। आज सनातन संस्कृति का गौरव वैश्विक स्तर पर स्थापित हो रहा है। उन्होंने भूमंडलीकरण की अवधारणा पर चर्चा करते हुए कहा कि इससे विश्व के देश आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक रूप से एक-दूसरे से जुड़े हैं, जिससे विश्व 'वैश्विक गांव' बन रहा है। इस संदर्भ में 'वसुधैव कुटुंबकम्' का सिद्धांत वैश्विक एकता, साझा उत्तरदायित्व और सामूहिक समाधान की भावना को सुदृढ़ करता है।

वसुन्धरा राजे ने 'आशीर्वाद पदयात्रा' को हरीझंडी दिखाकर रवाना किया

झालावाड़। पूर्व मुख्यमंत्री वसुन्धरा राजे ने कहा है कि जब वे सांसद थी,तब पदयात्रा करती थी।पावों में छाले पड़ जाते तो उन्हे पिन से फोड़ कर आगे बढ़ जाती।उन्होंने कहा 'मैं चलती रही उम्रभर दुआओं के साथ,पांव के छाले कभी मेरी राहें नहीं रोक पाए।' वे उन्हेल में सांसद दुष्यंत सिंह की 'आशीर्वाद पदयात्रा' को हरीझंडी दिखाकर रवाना कर रही थी। उन्होंने कहा कि यह पदयात्रा' इस क्षेत्र की उन्नित,विकास और आपके विश्वास की यात्रा है।ज्यादातर नेता चुनाव के समय आते हैं और चुनाव जीत कर चले जाते हैं।पूरे पाँच साल एसी में रहते हैं।पर हम ऐसा नहीं करते।हम हमारे क्षेत्र को परिवार मानते हैं।हम क्षेत्र के लोगों को मतदाता नहीं,भाग्य निर्माता मानते हैं। राजे ने कहा आपके सांसद दुष्यंत सिंह हमेशा जनता के बीच रहते हैं।सब जगह पहुँचने की कोशिश करते हैं।

उन्होंने कहा यह यात्रा राजनीतिक यात्रा नहीं,यह यात्रा अपनों की,अपनों के लिए अपनों के द्वारा यात्रा है।जन-जन से जुड़ने,जनता की आवाज़ सुनने और लोगों के सपनों को पूरा करने की यात्रा है। इस यात्रा का लक्ष्य है हर नागरिक का सम्मान हो।हर नागरिक का उत्थान हो। हर वाजिब समस्या का समाधान हो। यह एक ऐसी यात्रा है,जिसमें सांसद आपके खेतों की मिट्टी, आपके बच्चों की मुस्कान,आपकी मेहनत को अपनाने आयें हैं।आपकी तकलीफ़ को गले लगाने आयें हैं।

आर्मी एरिया से बाहर पहली बार आर्मी डे परेड का आयोजन जयपुर स्थित महल रोड जगतपुरा में किया गया जिसमें हजारों लोग इस कार्यक्रम के साक्षी बने आर्मी डे परेड में सड़क पर ब्रह्मोस मिसाइल अर्जुन टैंक भीष्म व कई आधुनिक हथियारों को देख लोगो ने भारत माता की जय लगाई। अपाचे हेलीकॉप्टर व जगुआर भीनज़र आये।

जोधपुर, बीकानेर और नागौर में घी कारोबारी के यहां आयकर टीम का छापा

कार्रवाई में आयकर विभाग को क्या गड़बड़ी मिली है, इस बारे में कोई जानकारी नहीं दी गई है

जोधपुर/बीकानेर, (कासं)। जोधपुर के एक घी कारोबारियों के यहां आयकर विभाग की टीम ने छापा मारा। जोधपुर में मालाणी डेयरी कारोबारी के पांच अलग-अलग ठिकानों पर कार्रवाई चल रही है। कार्रवाई व्यवसायी घनश्याम सोनी और उनसे जुड़ी फर्मों पर की जा रही है। इसमें मंडोर मंडी, न्यू पावर हाउस रोड, बोरानाडा इंडस्ट्रियल एरिया, शहर के भीतरी हिस्से में स्थित घर, शास्त्री नगर का बंगला शामिल है। कार्रवाई के दौरान किसी भी बाहरी व्यक्ति को अंदर जाने या अंदर से बाहर आने की अनुमति नहीं दी गई है। पुलिस को तैनात किया गया है। बताया जा रहा है कि विभाग को समूह की ओर से बड़े पैमाने पर टैक्स चोरी और अघोषित आय के इनपुट मिले थे, जिसके आधार पर यह सर्च ऑपरेशन चलाया गया है।

- **बताया जा रहा है कि विभाग को समूह की ओर से बड़े पैमाने पर टैक्स चोरी और अघोषित आय के इनपुट मिले थे, जिसके आधार पर यह सर्च ऑपरेशन चलाया गया है**

विभागीय सूत्रों के अनुसार यूपी से आयकर इन्वेस्टिगेशन विंग की टीम बुधवार को फ्लाइट से जोधपुर पहुंची थी। यहां से टीम कार्रवाई के लिए पहुंची थी। नागौर और बीकानेर में भी कार्रवाई चल रही है। मालाणी ग्रुप जोधपुर सहित पश्चिमी राजस्थान में डेयरी उत्पादों, विशेषकर घी के थोक व्यापारी है। समूह के संबंध में ऑनलाइन उपलब्ध कंपनी डेटा के अनुसार, मालाणी डेयरी प्राइवेट लिमिटेड के निदेशकों में घनश्याम सोनी के अलावा सुनीता सोनी, विनोद सोनी और विवेक सोनी शामिल है।

विभिन्न बिजनेस लिस्टिंग प्लेटफॉर्म पर कंपनी का टर्नओवर 500 करोड़ रुपए से अधिक बताया गया है, जो इसके बड़े पैमाने के कारोबार को दर्शाता है। कंपनी का रजिस्टर्ड ऑफिस गुलाब सागर क्षेत्र में है, जबकि गोदाम और कामकाज मंडोर मंडी और बासनी, बोरानाडा औद्योगिक क्षेत्रों से संचालित होता है। कार्रवाई की सूचना के बाद मंडोर मंडी और बोरानाडा औद्योगिक क्षेत्र के अन्य कारोबारियों में हड़कंप मच गया। फिलहाल विभाग की ओर से आधिकारिक तौर पर कोई जानकारी साझा नहीं की गई है।

बीकानेर संवाददाता के अनुसार :- यहां इनकम टैक्स डिपार्टमेंट ने एक फर्म पर रेड की कार्रवाई की है। फर्म के यहां कोयला गली स्थित ऑफिस पर सुबह से इनकम टैक्स ऑफिसर रिकार्ड की छानबीन कर रहे हैं। बीकानेर में घी वितरक फर्म मोहनलाल आशीष कुमार के यहां आयकर विभाग ने रेड की है। कोयला गली में स्थित इस फर्म के ऑफिस में आयकर अधिकारी अकाउंट से संबंधित सभी रिकॉर्ड चेक किए जा रहे हैं। ये फर्म एक घी कंपनी के ब्रांड की वितरक है, जिसकी बीकानेर में बड़ी डिमांड है। कार्रवाई इस फर्म की हो रही है न कि संबंधित घी कंपनी की। फर्म मोहनलाल आशीष कुमार के जीएसटी बिलों को लेकर पहले भी सवाल उठ चुके हैं, जिसकी जांच अलग से चल रही है। सुबह जल्दी फर्म के ऑफिस पर आयकर विभाग के अधिकारी पहुंच गए थे। इसके बाद से फर्म संचालकों के अलावा किसी बाहरी व्यक्ति को न तो अंदर प्रवेश दिया और न किसी को बाहर जाने दिया। किसी तरह के कागज व सामान भी अंदर-बाहर नहीं किया। आयकर विभाग की रिपोर्ट पर कोटगेट पुलिस भी मौके पर है। पुलिसकर्मी किसी को अंदर आने जाने नहीं दे रहे हैं। इस कार्रवाई में आयकर विभाग को क्या गड़बड़ मिली है इस बारे में कोई अधिकृत जानकारी नहीं दी गई है। आयकर विभाग के अधिकारी फिलहाल इस पर कुछ नहीं बोल रहे हैं।

ट्रेन की चपेट से युवक की मौत

डूंगरपुर, (निसं)। जिले के बिछीवाड़ा थाना क्षेत्र अंतर्गत आतरसोबा गांव में रेलवे ट्रैक पर ट्रेन की चपेट में आने से एक व्यक्ति की मौत हो गई। मृतक की पहचान आंतरसोबा निवासी विजयपाल के रूप में हुई है। घटना की सूचना मिलने पर रेलवे सुरक्षा बल आरपीएफ और बिछीवाड़ा पुलिस मौके पर पहुंची।

आरपीएफ के सब इंस्पेक्टर पंकज कुमार ने बताया कि अहमदाबाद से कोटा जाने वाली असारवा-कोटा ट्रेन की चपेट में आने से आंतरसोबा और बिलपण गांव के बीच एक युवक की मौत की जानकारी मिली थी। पुलिस दल ने मौके पर पहुंचकर रेलवे ट्रैक पर पड़े शव को हटवाया। इस घटना के कारण असारवा-कोटा ट्रेन लगभग 15 मिनट तक ट्रैक पर रुकी रही, जिससे यातायात प्रभावित हुआ। मृतक की पहचान होने के बाद परिजनों को सूचित किया गया। परिजनों ने पुलिस को दी गई रिपोर्ट में बताया कि विजयपाल पिछले करीब 20 साल से मानसिक रूप से बीमार थे। उन्होंने शव का पोस्टमार्टम कराने से इंकार कर दिया। परिजनों के लिखित आग्रह पर पुलिस ने पंचनामा कार्रवाई पूरी कर शव उन्हें सौंप दिया।

मादक पदार्थ सहित तीन गिरफ्तार

कोटा, (निसं)। देवली मांझी पुलिस टीम ने चैकिंग के दौरान अवैध मादक पदार्थ गांजा सहित तीन आरोपियों को गिरफ्तार किया है। ग्रामीण पुलिस अधीक्षक सुजीत शंकर ने बताया कि देवली मांझी थाने के थानाधिकारी सुनील कुमार सिंह ने इलाके में बाइक सवार तीन जनों को रोककर तलाशी ली तो तलाशी के दौरान अवैध मादक पदार्थ 299 ग्राम गांजा बरामद हुआ। पुलिस टीम ने एनडीपीएस एक्ट में गिरधरपुरा निवासी विष्णु, महावीर एवं दीनदयाल को गिरफ्तार किया। पकड़े गये आरोपियों से अनुसंधान जारी है।

राजस्थान सरकार
कार्यालय जिला रसद अधिकारी, जालोर
जिला उपभोक्ता संरक्षण अधिकारी
क्रमांक-रसद/लेखा/निविदा/2026 दिनांक-
NOTICE INVITING BID 03/2026
e-Bids For Selection Of Transporter For The Transportation Of Food grains under MDM From FCI Depots in District Jalore are invited From interested bidders up to 20.01.2026. other particulars of the bid may be visited on The Procurement Portal (http://eproc.rajasthan.gov.in or http:sppp.rajasthan.gov.in) of The State.
UNB FCC2526SLOB00189
NIB Code FCC2526A0154
(अलोक झरवाल)
जिला रसद अधिकारी
जिला उपभोक्ता अधिकारी
जिला उपभोक्ता संरक्षण अधिकारी
जालोर
DIPR/C/517/2026

अजमेर विकास प्राधिकरण, अजमेर
टेक्समल लेन, सिविल लाईन्स, अजमेर, Email :- ajmerada@gmail.com, Website :- www.rajasthan.gov.in/ada, Tel.No. :- 0145-2627748-2627749
क्रमांक :- अविप्रा/प.2/तकनीकी/2026-27/राजकाज 19859246 दिनांक :- 13/01/2026
ई-निविदा सूचना संख्या 50/2026-27
अजमेर विकास प्राधिकरण, अजमेर की ओर से विभिन्न कार्यो अनुमानित लागत राशि रु. 655.20 लाख की ई-निविदा क्रम संख्या (1-2) दिनांक 05.02.2026, क्रम संख्या (3-4) दिनांक 27.01.2026 सांय 06:00 बजे तक आमंत्रित की जाती है। निविदा से संबंधित समस्त विवरण वेबसाईट (http://eproc.rajasthan.gov.in) एवं (http://sppp.raj.nic.in) http://www.urban.rajasthan.gov.in/ada पर देखा जा सकता है।
UBN : AJD2526WSOB00243-44, AJD2526SLOB00245, AJD2526WSOB00246
राज.संवाद/सी/25/17650 अधिशाषी अभियन्ता

अजमेर के कांग्रेसियों ने जयपुर में सचिन पायलट से मुलाकात की

अजमेर, (कासं)। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के राष्ट्रीय महासचिव एवं पूर्व उप मुख्यमंत्री सचिन पायलट से जयपुर में अजमेर के कांग्रेस पदाधिकारी एवं कार्यकर्ताओं ने अजमेर उत्तर विधानसभा क्षेत्र से कांग्रेस के प्रत्याशी महेंद्र सिंह रलावता के नेतृत्व में मुलाकात की।

- **सचिन पायलट को मतदाता सूची में विशेष समुदाय के नाम कटवाने के षड्यंत्र की जानकारी दी**

पूर्व उप मुख्यमंत्री सचिन पायलट का अजमेर के कांग्रेस पदाधिकारी एवं कार्यकर्ताओं ने स्वागत किया।

कांग्रेसियों ने एस आई आर अभियान में भारतीय जनता पार्टी की प्रदेश सरकार द्वारा सत्ता का दुरुपयोग कर समुदाय विशेष के मतदाता सूची में से नाम कटवाने की साजिश की जानकारी दी। राष्ट्रीय महासचिव पायलट ने अजमेर के कांग्रेस पार्टी के सभी स्थानीय नेता, विधायकों, प्रत्याशियों, जिलाध्यक्ष और पदाधिकारियों से आव्हान किया है कि तुरंत जिला प्रशासन से संपर्क साधें, हर वोट की सख्त निगरानी करें और किसी भी वैध मत को कटने न दें।

वहीं कांग्रेसियों ने राष्ट्रीय महासचिव पायलट का साफा एवं माला पहनकर स्वागत किया एवं संगठात्मक रिपोर्ट दी। इस मौके पर अजमेर उत्तर विधानसभा क्षेत्र से कांग्रेस के प्रत्याशी एवं पीसीसी मेंबर महेंद्र सिंह रलावता, पूर्व विधायक नाथूराम सिनोदिया, अजमेर शहर जिला कांग्रेस कमेटी के पूर्व अध्यक्ष विजय जैन, मुकेश सिंह राठौड़ सहित बड़ी संख्या में अजमेर के कांग्रेसजन उपस्थित रहे।

पाली : घर में बने टैंक में डूबी तीन साल की मासूम, मौत

पाली, (नि.सं.)। पाली के कोतवाली थाना क्षेत्र की दुर्गा कॉलोनी में बुधवार शाम एक दर्दनाक हादसे में 3 साल की मासूम बच्ची की घर में बने पानी के टैंक में डूबने से मौत हो गई। परिजन करीब चार घंटे तक बच्ची को मोहल्ले में ढूंढते रहे, सोशल मीडिया पर भी लापता होने का संदेश डाला गया, लेकिन अंत में बच्ची घर के टैंक में बेसुध हालत में मिली।

कोतवाली थाना के जसवंत सिंह राजपुरोहित ने बताया कि दुर्गा कॉलोनी निवासी निर्मल जीनगर की 3 वर्षीय बेटी तमन्ना (तनु) मकर संक्रांति के दिन घर के बाहर खेल रही थी। शाम करीब पांच बजे बच्ची नजर नहीं आई तो परिजनों ने आसपास तलाश शुरू की। रिश्तेदारों और परिचितों को फोन किए गए, पड़ोसियों से पूछताछ की गई, लेकिन बच्ची का कोई सुराग नहीं मिला। इसके बाद परिजनों ने सोशल मीडिया पर तनु की फोटो के साथ उसके लापता होने की सूचना साझा की। मोहल्ले के लोग भी बच्ची की तलाश में जुट गए। इसी दौरान घर में बने पानी के टैंक पर परिजनों की नजर गई, जहां बच्ची पानी में डूबी हुई मिली। उसे तुरंत पाली के बांगड़ अस्पताल ले जाया गया, लेकिन डॉक्टरों ने जांच के बाद मृत घोषित कर दिया। परिजनों के अनुसार घटना के समय बच्ची के पिता निर्मल जीनगर, जो लोडिंग टैक्सी चलाते हैं, घर पर नहीं थे। मां रिंकू अपनी 1 साल की बेटी अंजली के साथ थी। खेलते-खेलते तमन्ना घर में बने टैंक तक पहुंच गई। टैंक का ढक्कन थोड़ा खुला हुआ था, जिसे बच्ची ने पूरी तरह खोल दिया और संतुलन बिगड़ने से टैंक में गिर गई।

- **चार घंटे तक मोहल्ले में ढूंढते रहे परिजन, सोशल मीडिया पर भी संदेश डाला**

बताया गया कि तलाश के दौरान एक बार टैंक में भी देखा गया था, लेकिन अंधेरा होने और बच्ची के पानी में डूब जाने के कारण वह नजर नहीं आई। करीब चार घंटे बाद दोबारा देखने पर बच्ची का शव टैंक में दिखाई दिया। पुलिस ने शव को मोर्चरी में रखवाया है और मामले की जांच की जा रही है।

जोधपुर विद्युत वितरण निगम लिमिटेड
(पदार्थ प्रबन्ध एवं अनुबन्ध शाखा) नया पावर हाऊस परिसर, हैवी इंडस्ट्रीयल एरीया, जोधपुर-342003
ई-निविदा सूचना
ए.सी. डिजीटल टोंग टेस्टर तथा साईट टेस्टिंग के लिए टोंग टेस्टर TN 2113 (JVV2526GLOB00816) की खरीद हेतु ई-निविदा आंमत्रित की जाती हैं।
अन्य विवरण जैसे निविदा मुल्य, धरोहर राशि, निविदा प्रस्तुत करने / खुलने की तिथि का विवरण इत्यादि वेबसाईट www.energy.rajasthan.gov.in/jdvvnl एवं http://sppp.rajasthan.gov.in द्वारा जानी जा सकती हैं।
अधीक्षण अभियंता (पदार्थ प्रबन्ध एवं अनुबंध)
राज.संवाद/सी/25/17669
बिजली संबंधी शिकायतों के लिए टोल फ्री नम्बर 1800 180 6045

राजस्थान ऊर्जा विकास एवं आईटी सर्विसेज लिमिटेड
(राजस्थान सरकार का उपक्रम), पंजि.कार्या. : विद्युत भवन, ज्योति नगर, जयपुर - 302005
निविदा आमंत्रण विज्ञप्ति
रा. ऊ. वि. एवं आईटी सर्विसेस लि. जयपुर द्वारा एन. आई. टी संख्या HR 10/2025-26 में यथा उल्लेखित नियमों / शर्तो/ तकनीकी विशिष्टता के अनुसार ईछुक निविदा दाता/ फ़र्म /एजन्सी से हायरिंग ऑफ मैनपावर सर्विस हेतु अलग अलग मोहरबंद लिफाफो मे निविदा आमंत्रित की जाती है। अधिक जानकारी के लिए कृपया www.sppp.rajasthan.gov.in तथा https://eproc.rajasthan.gov.in की वैबसाइट देखें। UBN-RUV2526SLOB00014
राज.संवाद/सी/25/17647 आरयूवीआईटीएल/पीआर- 112 (2026) उप निदेशक (मा. सां.)
बिजली शिकायतों के लिए टोल फ्री नम्बर 1800 180 6507

Rajasthan University of Veterinary and Animal Science (Jobner)
B2 Bypass & Shipra Path Red-Light Crossing, Mansarovar, Jaipur-302020 (Rajasthan)
No. :- F.3 ( )/RUVAS/Comp/Purch./2025-26/ Dated :-
"पशु खाद्य" की दर-अनुबंध पर आपूर्ति हेतु ई-टेंडर सूचना संख्या-02
योग्य एवं फसल काटने वालो / किसानों / निर्माताओं / वितरकों से "विभिन्न प्रकार की पशु खाद्य सामग्री" की दर-अनुबंध और आपूर्ति के लिए ई-टेंडर आमंत्रित किए जाते हैं, जिसकी अनुमानित लागत 115.00 लाख रुपये है। टेंडर आवेदन 07-01-2026 से 28.01.2026 (शाम 5:00 बजे) तक जमा करने के लिए खुले रहेंगे और इसके बाद अगले दिन (29.01.2026) दोपहर 2:00 बजे से रुवास, (जोबनेर) जयपुर में टेंडर खोलने वाली समिति द्वारा बोलियां खोली जाएंगी। टेंडर के लिए विस्तृत नियम और शर्तें राज्य खरीद पोर्टल http://www.sppp.rajasthan.gov.in वेबसाइट, ई-प्रोक पोर्टल http://eproc.rajasthan.gov.in/ और विश्वविद्यालय वेबसाइट https://ruvasjaipur.rajasthan.gov.in/ पर उपलब्ध हैं। फाइनेंस कम्पट्रोलर, रुवास, (जोबनेर) जयपुर को एक या अधिक टेंडर रद्द करने का अधिकार है। जो बोलियां अथवा टेंडर निर्धारित नियमों और शर्तों को पूरा नहीं करते हैं, या नियत तारीख के बाद जमा किए जाते हैं, उन्हें रद्द कर दिया जाएगा।
इस ई-टेंडर के लिए, UBN नंबर RVJ2526GLRC00013 है।
राज.संवाद/सी/25/17662 वित्त-नियंत्रक

श्रीगंगानगर में पारा 3.7 डिग्री दर्ज, फिर छाया कोहरा

श्रीगंगानगर, (निसं)। बीते दो दिनों से दिन में खिली धूप ने लोगों को कड़ाके की ठंड से कुछ राहत दी, लेकिन आज सुबह घने कोहरे ने एकबार फिर शहर को अपनी चपेट में ले लिया। कोहरे के विजिबिलिटी 2 मीटर के आस-पास रही, जिससे ट्रैफिक पूरी बाधित हो गया। ठंड के कारण बसों में यात्रियों की संख्या भी बहुत कम देखी गई। श्रीगंगानगर जिले में गुरुवार को घना कोहरा छाया रहा जिसके कारण विजिबिलिटी 2 मीटर के आस-पास रही।

मौसम राडार स्टेशन, श्रीगंगानगर पर गुरुवार सुबह न्यूनतम तापमान 3.7 डिग्री रिकॉर्ड किया गया। न्यूनतम 3.6 डिग्री और अधिकतम 19.9 डिग्री, जबकि मंगलवार को न्यूनतम 1.4 डिग्री और अधिकतम 18.4 डिग्री दर्ज हुआ था। पिछले कई दिनों से न्यूनतम तापमान 3-4 डिग्री के आसपास बना हुआ है।

- **विजिबिलिटी दो मीटर तक रही**

कृषि अधिकारियों के अनुसार न्यूनतम तापमान 4 डिग्री से नीचे जाने पर रात में पाला जमने की आशंका बनी रहती है, जिससे फसलों को भारी नुकसान हो सकता है। किसान फसलों में सिंचाई करें और रात में खेतों के आस-पास अलग-अलग स्थानों पर धुआं करें ताकि तापमान स्थिर रहे और पाला न जमे। मौसम विभाग ने अगले दो दिनों तक ऐसा ही मौसम बना रहेगा। इसके बाद तापमान में 2 से 3 डिग्री की बढ़ोतरी होने की संभावना है, जिससे ठंड में कुछ राहत मिल सकती है।

कोटा में गांजा सहित आरोपी गिरफ्तार

कोटा, (निसं)। नयापुरा पुलिस टीम ने इलाके में गश्त के दौरान नशे के खिलाफ चलाये जा रहे अभियान ऑपरेशन गरूड् व्यूह के तहत कार्यवाही करते हुए अवैध मादक पदार्थ एक किलो 24 ग्राम गांजा सहित आरोपी को गिरफ्तार किया है। नयापुरा थानाधिकारी विनोद कुमार ने बताया कि थाने के उप निरीक्षक नवल किशोर शर्मा ने मय जाप्ता इलाके में गश्त के दौरान उम्मेद सिंह स्टेडियम के समीप एक जने पर संदेह होने पर उसको डिटेन कर उसकी तलाशी ली तो उसके पास से एक किलो 24 ग्राम अवैध मादक पदार्थ गांजा बरामद किया गया। पुलिस टीम ने मौके पर सीसवाली निवासी कुलदीप सुमन उर्फ केडी को गिरफ्तार किया। पकड़े गये आरोपी से अनुसंधान जारी है।

बेटी की शादी के दिन की थी पिता की हत्या, पांच आरोपियों को उम्रकैद

अलवर, (निसं)। अलवर के एडीजे कोर्ट संख्या-3 ने चार साल पुराने हत्या मामले में पांच आरोपियों को दोषी माना है। कोर्ट ने अभियुक्तों को आजीवन कारावास एवं 20-20 हजार रुपए के जुर्माने से दंडित किया गया है। एडीजे कोर्ट की न्यायाधीश ज्योति सोनी ने यह फैसला गुरुवार को सुनाया। अभियुक्तों ने एक्सीडेंट का बदला लेने के लिए पीड़ित पर हमला किया था। इस पर उसकी मौके पर मौत हो गई थी। हादसे के दिन उनकी बेटी की शादी थी।

सरकारी वकील अजीत यादव ने बताया कि परिवादी सुब्बी ने 3 मार्च 2022 को थाना नौगांवा में रिपोर्ट दर्ज कराई थी। रिपोर्ट के अनुसार 2 मार्च 2022 को उसके बड़े भाई भबल (50) का दामाद गफ्फार गांव नंगला भूरिया से रसगण आ रहा था। इसी दौरान आरोपी हनीफ की नवासी अचानक बाइक के आगे आ गई, जिससे बाइक गिर गई। हालांकि बच्ची को कोई चोट नहीं आई, लेकिन इसके बावजूद आरोपियों ने गफ्फार के साथ मारपीट की। सरकारी वकील अजीत यादव ने बताया कि 3 मार्च 2022 को परिवादी के घर में बेटी का शादी समारोह था। उसी दिन परिवार के कुछ लोग नौगांवा कस्बे से लकड़ी के गुटखे लेने जा रहे थे। रास्ते में आरोपी हनीफ (50), जुहरु (55), हासम (40), माजिद और साजिद ने अपने गांव के पास उन्हें रोककर मारपीट शुरू कर दी। जब भबल और अन्य लोग बीच-बचाव करने पहुंचे तो आरोपियों ने भबल के सिर पर फरसी और लाठी-डंडों से हमला कर दिया था। गंभीर चोट लगने से भबल की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि करीब चार अन्य लोग घायल हो गए थे।

- **अभियुक्तों ने एक्सीडेंट का बदला लेने के लिए पीड़ित पर हमला किया था**

सरकारी वकील ने बताया कि पुलिस ने मामले में आरोपियों को गिरफ्तार कर जांच पूरी की। अभियोजन पक्ष की ओर से कोर्ट में 22 गवाह और 51 दस्तावेज पेश किए गए। दोनों पक्षों की दलीलें सुनने के बाद कोर्ट ने पांचों आरोपियों को आजीवन कारावास की सजा सुनाई।

कोर्ट के आदेश की पालना नहीं करने पर डीडवाना तहसीलदार की गाड़ी कुर्क

वक्फ कमेटी बनाम राज्य सरकार के मामले में कार्रवाई की, इससे पहले एसडीएम की गाड़ी भी हुई थी कुर्क

डीडवाना, (निसं)। डीडवाना में वक्फ से जुड़े एक ओर मामले में आठ साल बाद भी कोर्ट के आदेश की पालना नहीं करने पर अपर जिला न्यायाधीश के आदेश पर बड़ी कार्रवाई करते हुए तहसीलदार डीडवाना की सरकारी गाड़ी को कुर्क कर दिया गया। इस दौरान कोर्ट के आदेश पर एडीजे न्यायालय के नाजिर ने पुलिस की मौजूदगी में तहसीलदार की गाड़ी को कुर्क वारंट आदेश 21 नियम 32 के तहत की कुर्क कर लिया और उसे अपने कब्जे में लेकर पुलिस थाना में खड़ा कर दिया गया। इसके बाद अब जिला कलैक्टर की गाड़ी भी कुर्क की जाएगी, जिसके लिए भी कानूनी कार्रवाई शुरू हो गई है।

पुलिस की मौजूदगी में गाड़ी को कुर्क कर थाने में खड़ा कराया।

जानकारी के अनुसार अपर सेशन न्यायाधीश राजेश कुमार गजरा ने वक्फ कमेटी डीडवाना बनाम राज्य सरकार के मामले में दायर इजराय याचिका पर सुनवाई करते हुए डीडवाना जिला कलैक्टर और तहसीलदार के वाहनों को कुर्क करने का आदेश दिया था। कोर्ट ने इस मामले में प्रशासनिक अधिकारियों द्वारा 8 सालों से बार बार जारी कोर्ट के आदेशों की पालना नहीं करने को कोर्ट की अवमानना का दोषी मानते हुए दोनों अधिकारियों की गाड़ियों को कुर्क करने के आदेश दिए थे। कोर्ट ने अपने फैसले में जिला कलैक्टर और तहसीलदार को ही लापरवाह अधिकारी बताया। कोर्ट ने कहा कि न्यायालय में 8 सालों से लंबित प्रकरण में बार-बार आदेश जारी होने के पश्चात भी प्रशासनिक अधिकारी केवल खानापूर्ति कर अगली तारीख प्राप्त कर मामले को लंबित रखने का प्रयास कर रहे हैं और अपने कर्तव्य से विमुख हो रहे हैं। यह अधिकारी जान बुझाकर कोर्ट के आदेशों की पालना नहीं कर रहे हैं। ऐसे में प्रशासन के इन लापरवाह अधिकारियों को न्यायालय के आदेश न मानने की खुली छूट नहीं दी जा सकती।

- **कोर्ट ने अपने आदेश में लिखा कि यह प्रकरण भी 8 सालों से लंबित है और बार-बार आदेश जारी होने के पश्चात भी प्रशासन कोई कार्रवाई नहीं कर रहा**

गौरतलब है कि राजस्थान वक्फ न्यायाधिकरण जयपुर ने सिविल वाद संख्या 42/2003 में 20 जून 2016 को फैसला सुनाते हुए यह आदेश दिया था कि गजट नोटिफिकेशन में डीडवाना में वर्णित भूमि कब्रिस्तान की वक्फ जायदाद है तथा गजट नोटिफिकेशन के अनुसार जिला कलैक्टर, उपखंड अधिकारी व तहसीलदार इस कब्रिस्तान की भूमि को राजस्व रिकॉर्ड में दर्ज करें तथा कब्रिस्तान की भूमि में किसी प्रकार की तब्दील करने व उसको किसी को अंतरण करने के लिए वह शाश्वत कल तक विरत रहेंगे। उक्त निर्णय की पालना के लिए अपर जिला न्यायाधीश की अदालत में वर्ष 2016 में इजराय याचिका दायर की गई थी।

इस याचिका के बाद न्यायालय ने राजस्थान वक्फ न्यायाधिकरण के निर्णय की पालना के लिए उपखंड अधिकारी, जिला कलैक्टर व तहसीलदार को बार-बार पत्र लिखे, वही 15 सितंबर 2025 को जिला कलैक्टर डीडवाना-कुचामन को उक्त आदेश की क्रियान्विति के लिए हुक्मनामा भी जारी किया गया था। इसके बावजूद डीडवाना-कुचामन प्रशासन की ओर से इजराय की पालना में कोई कार्य नहीं किया गया। कोर्ट ने अपने आदेश में लिखा कि यह प्रकरण भी 8 सालों से लंबित है और बार-बार आदेश जारी होने के पश्चात भी प्रशासन कोई कार्रवाई नहीं कर रहा। इस पर कोर्ट ने इस मामले में जारी हुकुमनामों की पालना न करने को अवमानना की श्रेणी में मानते हुए धारा 51 सीपीसी सपठित आदेश 21 नियम 32 के तहत डिक्री की पालना के लिए जिला कलैक्टर डीडवाना-कुचामन और तहसीलदार डीडवाना के वाहनों को कुर्क करने का आदेश दिया। जिसके बाद तहसीलदार को गाड़ी को कुर्क कर लिया गया।

बुजुर्ग महिला का शव सुजानगंगा नहर में मिला

भरतपुर, (निसं)। भरतपुर के मथुरा गेट थाना इलाके में एक महिला का शव सुजानगंगा नहर में पड़ा हुआ मिला। स्थानीय लोगों ने शव को देखा तो उन्होंने पुलिस को सूचना दी। मौके पर सिविल डिफेंस की टीम को बुलाया गया। टीम ने शव को बाहर निकाला। शव की शिनाख्त नहीं हो पाई है। पुलिस शिनाख्त के प्रयास कर रही है।

मथुरा गेट थाने के चौबुर्जा चौकी में तैनात एएसआई नरेंद्र कुमार ने बताया कि स्थानीय लोगों द्वारा सूचना मिली थी कि केतन गेट स्थित सुजान गंगा नहर में एक शव पड़ा हुआ है। जिसके बाद तुरंत टीम मौके पर पहुंची। शव को निकालने के लिए सिविल डिफेन्स की टीम को बुलाया गया। शव को सिविल डिफेंस के जवानों ने बाहर निकाला। शव को निकालने के बाद आसपास पूछताछ की गई लेकिन, शव की शिनाख्त नहीं हुई। मृतक महिला की उम्र लगभग 60 साल है। बाल सफ़ेद रंग के हैं। शव को आरबीएम अस्पताल की मॉर्च्युरी में रखवा दिया गया है। शव के शिनाख्त के प्रयास किए जा रहे हैं। शिनाख्त होने के बाद शव का पोस्टमार्टम करवाया जाएगा।

- **शिनाख्त होने के बाद शव का पोस्टमार्टम होगा**

जयपुर विद्युत वितरण निगम लिमिटेड
प्रभास्मि शशि सूर्ययोः
कार्यालय अधीक्षण अभियन्ता (एम.एम.-प्रथम),
पुराना पॉवर हाऊस, बनीपार्क, जयपुर, टेलीफैक्सः 0141-2208098
निविदा सूचना
एच टी एक्स एल पी ई केबल (33 KV, 3Cx300 Sq. mm) (निविदा संख्या-5027) (UBN-VVN2526GLOB00756), एच टी एक्स एल पी ई केबल (11 KV, 3Cx185 Sq. mm, 11 KV, 3Cx120 Sq. mm.) (निविदा संख्या-5028) (UBN-VVN2526GLOB00757), 4 कोर एलटी एक्स एल पी ई आरमर्ड केबल (4Cx185 Sq. mm., 4Cx120 Sq. mm.) (निविदा संख्या-5029) (UBN-VVN2526GLOB00758), एल टी एक्स एल पी ई इंसुलेटेड एरियल बन्च्ड केबल, बेयर मेसेन्जर वायर के साथ (1Cx25+25 Sq.mm) (निविदा संख्या- 5030) (UBN- VVN2526GLOB00760), एल टी एक्स एल पी ई इंसुलेटेड एरियल बन्च्ड केबल विद बेयर मेसेन्जर वायर (3Cx25+25 Sq.mm, 3Cx50+25 Sq.mm) (निविदा संख्या-5031) (UBN- VVN2526GLOB00762), 4 कोर एलटी पीवीसी आरमर्ड केबल (4Cx50, 4Cx25, 4Cx16, 4Cx10, 4Cx6 Sq. mm) (निविदा संख्या-5032) (UBN- VVN2526GLOB00764), 2 कोर एलटी पीवीसी आरमर्ड केबल (2Cx4 Sq.mm) (निविदा संख्या-5033) (UBN- VVN2526GLOB00765), ए सी एस आर डॉग कंडक्टर (निविदा संख्या-5034) (UBN- VVN2526GLOB00767), ए सी एस आर रैबिट कंडक्टर (निविदा संख्या-5035) (UBN- VVN2526GLOB00769), स्टे वायर (7/10, 7/8 SWG) (निविदा संख्या-5036) (UBN- VVN2526GLOB00770), सुरक्षा हेलमेट बिना एल ई डी लाइट (निविदा संख्या-5037) (UBN- VVN2526GLOB00773), रबर दस्ताने (निविदा संख्या-5038) (UBN-VVN2526GLOB00774), 9 मीटर 400 किग्रा पीसीसी पोल (निविदा संख्या-5039) (UBN-VVN2526GLOB00776), 9 मीटर 200 किग्रा पीसीसी पोल (निविदा संख्या-5040) (UBN-VVN2526GLOB00777), एमएस बोल्ट्स व नट्स साइज ('08"x5/8' '06"x5/8' '04"x5/8' '2.5"x5/8') (निविदा संख्या-5041) (UBN- VVN2526GLOB00778), फैब्रीकेटेड स्टील आइटम (नान वेल्डेड) 11/0.4 केवी ट्रॉन्सफार्मर सब स्टेशन स्ट्रक्चर ओन डीपीए 1.4 मीटर लम्बे एमएस चैनल मय क्लैम्प (निविदा संख्या-5042) (UBN- VVN2526GLOB00779), फैब्रीकेटेड स्टील आइटम (नान वेल्डेड) 33 केवी लाइन डी. पी., 1.8 मीटर लम्बे एमएस चैनल मय क्लैम्प, 33/11 केवी सब स्टेशन स्ट्रक्चर (रूरल), एरिया के लिये, 9 मीटर 400 और 200 किग्रा पीसीसी पोल के लिये स्टे क्लैम्प (निविदा संख्या-5043) (UBN- VVN2526GLOB00780), फैब्रीकेटेड स्टील आइटम (वेल्डेड) 33 केवी क्रॉस आर्म्स मय क्लैम्प (एंगल) व टॉप हैम्पर, 11 केवी क्रॉस आर्म्स (65x65x6) मय क्लैम्प (एंगल) व टॉप हैम्पर, 11 केवी टॉप हैम्पर बिना क्लैम्प, एलटी क्रॉस ब्रैकेट 4' लम्बे एवं 2' लम्बे, (निविदा संख्या-5044) (UBN- VVN2526GLOB00781), गैलवेनाईज्ड एम एस रोड टाईप अर्थिंग सैट (मय क्लैम्प और जी. आई. वायर) तीन/एक फेज ट्रॉन्सफार्मर के लिये (निविदा संख्या-5045) (UBN- VVN2526GLOB00782), एम एस फ्लैट (50x6 mm)ए एम एस चैनल (100x50x6 mm), एम एस एंगल (50x50x6 mm) एवं एम एस एंगल (65x65x6 mm) (निविदा संख्या-5046) (UBN- VVN2526GLOB00783), प्राथमिक उपचार पेटी (निविदा संख्या-5047) (UBN- VVN2526GLOB00784), लकड़ी की सीढ़ी (22 फीट) (निविदा संख्या-5048) (UBN- VVN2526GLOB00785), सेफ्टी बैल्ट (निविदा संख्या- 5049) (UBN-VVN2526GLOB00786), 33 केवी लैटिस स्ट्रक्चर (42' लम्बे), 33 केवी लैटिस स्ट्रक्चर (36' लम्बे) एवं 33/11 केवी सब स्टेशन स्ट्रक्चर अरबन एरिया के लिये (निविदा संख्या-5050) (UBN- VVN2526GLOB00787), 33 केवी एवं 11 केवी केबल टर्मीनेशन एवं जोईंटिंग किट (निविदा संख्या-5051) (UBN- VVN2526GLOB00759), 33 केवी जी आई पिन (निविदा संख्या-5052) (UBN- VVN2526GLOB00761), 11 केवी जी आई पिन (निविदा संख्या-5053) (UBN- VVN2526GLOB00763), जी एस स्टे सैट (20x2400 mm) एवं (16x1800 mm) (निविदा संख्या-5054) (UBN- VVN2526GLOB00766), एलुमीनीयम लग्स (185 Sq. mm.] 120 Sq. mm एवं 95 Sq. mm) (निविदा संख्या-5055) (UBN- VVN2526GSOB00768), शैकल हार्डवेयर (निविदा संख्या-5056) (UBN- VVN2526GLOB00771), 45 के एन टी एण्ड सी टाइप डिस्क इन्सुलेटर के लिय हार्डवेयर फिटिंग्स (निविदा संख्या-5057) (UBN-VVN2526GLOB00772), एबी केबल एसेसरीज (एन एफ सी टाईप) सस्पेन्षन क्लैम्प असैम्बली, डैड एंड क्लैम्प असैम्बली एवं इंसुलेशन पियर्सिंग कनैक्टर टाईप-ए (निविदा संख्या-5058) (UBN- VVN2526GLOB00775), 33 केवी पिन इंसुलेटर (पोर्सलीन) (निविदा संख्या-5059) (UBN- VVN2526GLOB00788), 33 केवी 800 एम्पीयर एवं 11 केवी 400 एम्पीयर आईसोलेटर बिना ईबी मय पोस्ट इंसुलेटर (निविदा संख्या-5060) (UBN- VVN2526GLOB00789), 11 केवी रोस्टर स्विच मय पोस्ट इन्सुलेटर (निविदा संख्या-5061) (UBN- VVN2526GLOB00790), 11 के वी 45 के एन टी एण्ड सी टाइप डिस्क इन्सुलेटर (पोर्सलीन) (निविदा संख्या-5062) (UBN-VVN2526GLOB00791), 11 केवी पिन इंसुलेटर (पोर्सलीन) (निविदा संख्या-5063) (UBN-VVN2526GLOB00792), 33 केवी एवं 11 केवी स्टे इंसुलेटर एवं एल टी शैकल इंसुलेटर (निविदा संख्या-5064) (UBN- VVN2526GLOB00793), 11 केवी पिन इंसुलेटर (पोलीमर) (निविदा संख्या-5065) (UBN- VVN2526GLOB00794), 45 के एन टी एण्ड सी टाइप टाइप डिस्क इन्सुलेटर (पोलीमर) (निविदा संख्या-5066) (UBN- VVN2526GLOB00797), 11 केवी हॉर्न गैप फ्यूज सैट पोस्ट इंसुलेटर के साथ (निविदा संख्या-5067) (UBN-VVN2526GLOB00799), पैन्थर कंडक्टर, डॉग कंडक्टर एवं रैबिट कंडक्टर के लिए पीजी क्लैम्प (निविदा संख्या-5068) (UBN- VVN2526GLOB00800), 33 केवी एवं 11 केवी आईसोलेटर के फिक्स्ड कॉन्टेक्ट (जॉ) एवं मुविंग कॉन्टेक्ट (पाइप) (निविदा संख्या-5069) (UBN- VVN2526GLOB00801) की खरीद हेतु 'ई-प्रोक्योरमेंट' प्रणाली के अन्तर्गत निविदाएं आमंत्रित की जाती हैं। निविदा के बारे में अन्य विवरण वेबसाईट www.eproc.rajasthan.gov.in एवं http://energy.rajasthan.gov.in/jvvnl द्वारा जाने जा सकते हैं। भविष्य में निविदा में किसी भी प्रकार के संशोधन / तिथि बढ़ाने की जानकारी केवल वेबसाईट www.eproc.rajasthan.gov.in एवं http://energy.rajasthan.gov.in/jvvnl पर उपलब्ध कराई जाएगी।
राज.संवाद/सी/25/17645 जेपीआर - 3110 (2026) अधीक्षण अभियन्ता (एम.एम. प्रथम)
बिजली शिकायतों के लिए टोल फ्री नम्बर 1800 180 6507

भ्रामक विज्ञापन करने पर सलमान खान के खिलाफ जमानती वारंट जारी

जयपुर। जिला उपभोक्ता आयोग क्रम-2 ने राजपान मसाला का भ्रामक प्रचार प्रसार और विज्ञापन करने पर रोक के बावजूद भी इसका विज्ञापन करने पर फिल्म अभिनेता सलमान खान के खिलाफ जमानती वारंट जारी कर 6 फरवरी को तलब किया है। आयोग अध्यक्ष ग्यारसी लाल मीना ने पुलिस कमिश्नर को कहा है कि वह इन दस हजार रुपए के जमानती वारंट की तामील कराए। आयोग ने यह आदेश योगेन्द्र सिंह के अवमानना प्रार्थना पत्र पर सुनवाई करते हुए दिए।प्रार्थना पत्र में कहा गया कि आमजन को भ्रमित करने के लिए राजपान मसाला का विज्ञापन किया जा रहा है। जिसमें बताया गया है कि इस उत्पाद को केसरयुक्त बनाया जा रहा है। इस उत्पाद से कंपनी के मालिक और विज्ञापन करने वाले फिल्म अभिनेता सलमान खान ने करोडों रुपए अर्जित किए हैं। इस उत्पाद से का उपयोग करने से कैंसर जैसी गंभीर बीमारी भी हो सकती है। ऐसे में आयोग ने गत 6 जनवरी को सुनवाई करते हुए राजपान मसाला के भ्रामक प्रचार प्रसार और विज्ञापन पर रोक लगा दी थी। अवमानना प्रार्थना पत्र में कहा गया कि इस आदेश की जानकारी होने के बावजूद भी कोटा के नयापुरा स्टेडियम के सामने गत 9 जनवरी को इस विज्ञापन का साइन बोर्ड लगाया गया है।

केन्द्रीय रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने सेना दिवस पर शौर्य संध्या कार्यक्रम को संबोधित किया

जयपुर। भारतीय सेना ने जयपुर में 78वां सेना दिवस पर दिन के उत्तरार्ध में माननीय रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने जयपुर मिलिट्री स्टेशन में सैनिकों से संवाद किया। शाम को आयोजित 'शौर्य संध्या'ने समारोह को और भी

- **रक्षा मंत्री ने 'फर्स्ट डे कवर'का अनावरण किया तथा 'नमन सेंटर्स' का वर्चुअल उद्घाटन किया। उन्होंने वीर शहीदों के परिजनों को सम्मानित कर राष्ट्र की कृतज्ञता व्यक्त की**

गौरवशाली बना दिया। इस कार्यक्रम में माननीय रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह, राजस्थान के माननीय राज्यपाल हरिभाऊ किसनराव बागड़े, माननीय मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा, थल सेनाध्यक्ष तथा अन्य वरिष्ठ सैन्य एवं सिविल गणमान्य व्यक्तियों ने शिरकत की। बड़ी संख्या में स्थानीय नागरिक इस भव्य आयोजन के साक्षी बने। इस

78वां सेना दिवस पर दिन के उत्तरार्ध में केंद्रीय रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह शामिल हुए।

अवसर पर रक्षा मंत्री ने 'फर्स्ट डे कवर'का अनावरण किया तथा 'नमन सेंटर्स' का वर्चुअल उद्घाटन किया। उन्होंने वीर शहीदों के परिजनों को सम्मानित कर राष्ट्र की कृतज्ञता व्यक्त की। शौर्य संध्या में ऑपरेशन सिंदूर का जीवंत मंचन, 1,000 ड्रोन का भव्य प्रदर्शन तथा कलारीपयट्टू और मलखंब जैसी पारंपरिक युद्ध कलाओं की प्रस्तुतियों ने दर्शकों को रोमांच और गर्व से भर दिया।

समूचा आयोजन भारतीय सेना के अदम्य साहस, आधुनिक शक्ति और राष्ट्रभक्ति के अटूट संकल्प का जीवंत प्रमाण बना, जिसने यह संदेश दिया कि भारतीय सेना हरचुनौती के लिए सदैव तैयार है और देश की सुरक्षा में कोई भी कसर नहीं छोड़ेगी।

पतंग उड़ाते समय छत से गिरे एक युवक की मौत

जयपुर। मकर संक्रांति पर पतंगबाजी करते समय घायल युवक ने सवाई मानसिंह अस्पताल में उपचार दौरान दम तोड़ दिया। इस पर परिजनों ने बिना अस्पताल प्रशासन ने जानकारी दिए शव को स्ट्रेचर पर रखकर अस्पताल से बाहर निकाला ओर जबरन घर ले जाने का प्रयास किया। अस्पताल प्रशासन की सूचना पर मौके पर पहुंची एसएमएस पुलिस ने परिजनों को पकड़ लिया और शव को मुर्दाघर में भिजवाया। इस दौरान मृतक के परिजनों ने पुलिस से अभद्रता की। लेकिन पुलिस ने आपसी समझाईश से मामला शांत करवाया।एएसआई राजेंद्र ने बताया की सवाई मानसिंह अस्पताल के ट्रॉमा सेंटर में बुधवार शाम झालाना डूंगरी निवासी बबलू बैरवा (27) पतंग उड़ाते समय छत से नीचे गिर कर घायल हो गया था। हॉस्पिटल की इमरजेंसी में चेकअप के बाद उसे 113 नंबर वार्ड में एडमिट किया गया था। करीब 2 घंटे बाद उपचार दौरान बबलू बैरवा ने दम तोड़ दिया। जिसके बाद अस्पताल प्रशासन ने मामले की जानकारी मृतक के परिजनों को दी ओर शव को पोस्टमार्टम के लिए मुर्दाघर में भेजने की तैयारी की। रात करीब साढ़े 8 बजे शव को वार्ड में रख दिया। लेकिन मृतक के परिजन अस्पताल प्रशासन को बिना बताए अी शव को स्ट्रेचर पर रखकर अस्पताल परिसर से बाहर ले आए।

याचिका पर सुनवाई के लिए पांच लाख रुपए की शर्त के खिलाफ अपील

जयपुर। राजस्थान हाईकोर्ट ने राजस्थान विश्वविद्यालय के कुलगुरु पद पर प्रोफेसर अल्पना कटेजा की नियुक्ति को लेकर दायर याचिका पर सुनवाई के लिए एकलपीठ की ओर से पांच लाख रुपए जमा कराने की शर्त लगाने के खिलाफ दायर अपील पर विवि चांसलर और अल्पना कटेजा से जवाब तलब किया है। एक्टिंग सीजे संजीव प्रकाश शर्मा और जस्टिस संगीता शर्मा की खंडपीठ ने यह आदेश प्रोफेसर महिपाल सिहाग की ओर से दायर अपील पर सुनवाई करते हुए दिए।

- **सुनवाई के लिए एकलपीठ की ओर से पांच लाख रुपए जमा कराने की शर्त लगाने के खिलाफ दायर अपील पर विवि चांसलर और अल्पना कटेजा से जवाब तलब किया**

अपील में अधिवक्ता सविता सिहाग ने अदालत को बताया कि राजस्थान विश्वविद्यालय के कुलपति के पद पर नियुक्ति के लिए 1 अगस्त, 2023 को विज्ञापन जारी किया गया था। जिसमें प्रोफेसर अल्पना कटेजा ने आवेदन किया था। जिसमें आवेदन करते समय अल्पना कटेजा ने अपने खिलाफ लंबित आपराधिक प्रकरण की जानकारी नहीं दी। जबकि नियमानुसार उन्हें इस संबंध में जानकारी देनी चाहिए थी। ऐसे में उन्होंने तथ्य छिपाकर नियमों की अवहेलना की है। इसलिए कुलपति पद पर उनके चयन को निरस्त किया जाए। वहीं एकलपीठ ने मामले की सुनवाई करने के लिए पांच लाख रुपए जमा कराने की शर्त लगा दी। इसलिए एकलपीठ के आदेश को रद्द किया जाए। इस दौरान विवि की ओर से केवियेटर के तौर पर अधिवक्ता रचित शर्मा पेश हुए।

वीवीआईपी आगमन के मद्देनजर जयपुर के कई थाना क्षेत्रों में नो-ड्रोन जोन घोषित

जयपुर। राजधानी जयपुर में 16 जनवरी 2026 को वीवीआईपी के प्रस्तावित जयपुर आगमन को लेकर सुरक्षा व्यवस्था को देखते हुए पुलिस आयुक्तालय ने बड़ा कदम उठाया है। ड्रोन के माध्यम से सुरक्षा में व्यवधान की आशंका को ध्यान में रखते हुए शहर के कई थाना क्षेत्रों में ड्रोन उड़ाने पर पूर्णतया प्रतिबंध लगा दिया गया है। अतिरिक्त पुलिस आयुक्त (कानून एवं व्यवस्था) डॉ. राजीव पचार ने भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता-2023 की धारा 163 के तहत प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए यह आदेश जारी किया है। आदेश के अनुसार वीवीआईपी की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए 16 जनवरी को गीदड़ आवासीय योजना, हरमाड़ा, सीकर रोड सहित आसपास के क्षेत्रों को अस्थायी नो-ड्रोन जोन (रेड ज़ोन) घोषित किया गया है।सांगानेर एयरपोर्ट, जवाहर सर्किल, शिप्रापथ, मुहाना, शास्त्री नगर एवं विद्याधर नगर थाना क्षेत्रों में सभी प्रकार के ड्रोन उड़ाने पर पूर्ण प्रतिबंध रहेगा।

दो साल से फरार चल रहा सीनियर टीचर चढ़ा एसओजी के हत्थे

गिरफ्तार आरोपी ने डमी कैंडिडेट के जरिए परीक्षा पास कर सरकारी नौकरी हासिल की थी

जयपुर। स्पेशल ऑपरेशन ग्रुप (एसओजी) ने कार्रवाई करते हुए दो साल से फरार चल रहे टीचर को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार आरोपी ने डमी कैंडिडेट के जरिए परीक्षा पास कर सरकारी नौकरी हासिल की थी। जिसके खुलासे के बाद आरोपी फरार हो गया और दो साल तक अपने ठिकाने बदल कर फरारी काटता रहा। जिसके बाद एसओजी ने आरोपी पर पांच हजार रुपये का इनाम घोषित कर दिया था। पुलिस गिरफ्तार आरोपी से फरारी काटने व सहयोग करने वालों के बारे में गहनता से पूछताछ करने में जुटी है।

एडीजी (एसओजी) विशाल बंसल ने बताया की राजस्थान लोक सेवा आयोग अजमेर की ओर से सीनियर टीचर सेकंड ग्रेड के कॉम्पिटिशन परीक्षा वर्ष-2022 में आयोजित की गई थी। कई मामले फर्जी सामने आने पर एसओजी की

आरोपी सम्पत लाल माली

ओर से रिपोर्ट दर्ज कर एग्जाम में बैठे कैंडिडेट्स की जांच की जा रही थी। जांच में सामने आया कि आरोपी सम्पत लाल माली (28) निवासी चितलवाना जालोर ने दोनों विषय की परीक्षा खुद नहीं दिए हैं। अपनी जगह डमी कैंडिडेट बैठाकर एग्जाम पास कर गवर्नमेंट जॉब हासिल की है। डमी कैंडिडेट के जरिए धोखाधड़ी कर

- **फर्जी डमी कैंडिडेट बैठाकर हासिल की थी नौकरी**
- **2022 में सीनियर टीचर सेकंड ग्रेड में हुआ था नियुक्त**

सीनियर टीचर (साइंस विषय) के पद पर आरोपी चयनित हो गया था। एसओजी में मामला दर्ज होने का पता चलने पर आरोपी संपत लाल माली फरार हो गया। लंबे समय से फरार चलने पर उसकी गिरफ्तारी को लेकर एसओजी की ओर से पांच हजार रुपए का इनाम रखा गया था। एसओजी टीम ने फरार इनामी बदमाश संपत लाल को बुधवार रात दबिश देकर धर-दबोचा। फर्जीवाड़े में शामिल अन्य आरोपियों के बारे में जानकारी प्राप्त करने के साथ आगे की जांच की जा रही है।

जयपुर लो फ्लोर बस कर्मचारियों का विरोध प्रदर्शन, 21को आंदोलन की चेतावनी

जयपुर। जयपुर लो फ्लोर बसों के कर्मचारियों ने बुधवार को बगराना आगार पर जेसीटीएसएल एम्पलाईज यूनियन (एटक) के बैनर तले 19 सूत्रीय मांगों को लेकर जोरदार विरोध प्रदर्शन किया। कर्मचारियों ने जेसीटीएसएल प्रबंधन के खिलाफ नारेबाजी करते हुए अपनी मांगों के शीघ्र समाधान की मांग की।

यूनियन अध्यक्ष बोदूराम वर्मा ने बताया कि जेसीटीएसएल प्रबंधन पिछले लगभग एक वर्ष से कर्मचारियों की मांगों और समस्याओं को गंभीरता से नहीं ले रहा है और अब तक कोई ठोस व परिणामात्मक कार्रवाई नहीं की गई है। इससे कर्मचारियों में भारी रोष व्याप्त है।

उन्होंने चेतावनी देते हुए कहा कि आंदोलन की अगली कड़ी में 21 जनवरी 2026 को जेसीटीएसएल मुख्यालय पर विरोध प्रदर्शन किया जाएगा। यदि इसके बाद भी मांगों का

कर्मचारियों ने बगराना आगार पर जेसीटीएसएल एम्पलाईज यूनियन के बैनर तले 19 सूत्रीय मांगों को विरोध प्रदर्शन किया।

समाधान नहीं हुआ तो आंदोलन को और तेज करते हुए कार्य बहिष्कार या हड़ताल का रास्ता अपनाया जा सकता है।कर्मचारियों के वेतन से एनपीएस के तहत काटी गई करोड़ों रुपये की राशि को शीघ्र उनके खातों में जमा कराया जाए। ब्रेकडाउन बसों का दबाव बनाकर संचालन करवाना तुरंत बंद किया जाए। चालकों को जिला पूल/मोटर गैराज में मर्ज किया जाए। मृतक कर्मचारियों के आश्रितों को पेंशन सुविधा प्रदान की जाए।

भाजपा में आज वीबी-जी रामजी पर कार्यशाला

जयपुर। विकसित भारत गारंटी रोजगार एवं आजीविका मिशन (ग्रामीण) - वीबी-जी रामजी विषय पर शुक्रवार को भाजपा प्रदेश कार्यालय में एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया जाएगा। वीबी जी रामजी अभियान के प्रदेश संयोजक जसवंत सिंह बिश्नोई ने बताया कि वीबी-जी रामजी की कार्यशाला में भाजपा के राष्ट्रीय महामंत्री अरूण सिंह, मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा, प्रदेश अध्यक्ष मदन राठौड़, किसान मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष राजकुमार चाहर की गरिमामय उपस्थिति रहेगी।

बिश्नोई ने बताया कि भाजपा प्रदेश कार्यालय में सुबह 10 बजे से आयोजित कार्यशाला में प्रदेश पदाधिकारी, सांसद, सभी विधायक, जिलाध्यक्ष, वीबीजी रामजी से जुड़े जिला संयोजक, प्रवक्ता-पेनेलिस्ट, मोर्चा, आयोग और बोर्ड अध्यक्ष भाग लेंगे।

मुख्यमंत्री ने बांसवाड़ा जिले के युवाओं से संवाद किया

जयपुर। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि वागड़ की धरती की असली ताकत हमारे युवा हैं। विकसित राजस्थान बनाने में भी इनकी भूमिका सबसे महत्वपूर्ण है। राज्य सरकार अपनी नीतियों और निर्णयों से युवाओं के लिए रोजगार के साथ ही स्वरोजगार के भरपूर अवसर उपलब्ध करवा रही है। उन्होंने कहा कि बांसवाड़ा के सर्वांगीण विकास के लिए भी राज्य सरकार कई महत्वपूर्ण कदम उठा रही है। शर्मा गुरुवार को मुख्यमंत्री आवास पर बांसवाड़ा जिले के युवाओं के साथ संवाद कर रहे थे। उन्होंने कहा कि हमारी सरकार ने पांच साल में 4 लाख सरकारी नौकरी तथा 6 लाख रोजगार निजी क्षेत्र में देने का लक्ष्य रखा है। इस कड़ी में 1 लाख से अधिक पदों पर नियुक्तियां दे दी गई हैं। उन्होंने कहा कि दो साल में एक भी पेपरलीक नहीं हुआ है। साथ ही, हमारी सरकार हर वर्ष का भर्ती कैलेण्डर जारी कर रही है। इस वर्ष भी 1 लाख सरकारी पदों की भर्ती परीक्षा का कैलेण्डर जारी किया है। उन्होंने कहा कि करीब 2 लाख युवाओं को इंटर्नशिप करवाई है और मुख्यमंत्री युवा संबल योजना में 4 लाख से ज्यादा युवाओं को 1150 करोड़ रुपये का भत्ता मिला है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रदेश में रोजगार के अवसर उपलब्ध कराने के लिए राइजिंग राजस्थान ग्लोबल इन्वेस्टमेंट समिट का आयोजन किया, जिसके तहत हुए कुल एमओयू में से 8 लाख करोड़ रुपये के एमओयू की ग्राउण्ड ब्रेकिंग हो चुकी है। इससे युवाओं को रोजगार के अवसर मिल रहे है। उन्होंने कहा कि युवाओं के लिए नवीन युवा नीति भी जारी की गई है। जिससे उन्हें उद्यमशीलता, स्टार्टअप्स सहित विभिन्न क्षेत्रों में आगे बढ़ने के पर्याप्त अवसर मिल सकेंगे। बांसवाड़ा में औद्योगिक क्षेत्रों के विकास से उद्योगों को बढ़ावा दिया जा रहा है।

विधान सभा अध्यक्ष देवनानी ने 28वें राष्ट्रमंडल संसदीय सम्मेलन के उद्घाटन समारोह में भाग लिया

जयपुर । विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी ने गुरुवार को नई दिल्ली में संसद के ऐतिहासिक संविधान भवन में राष्ट्रमंडल देशों के 28 वें संसदीय सम्मेलन के उद्घाटन समारोह में भाग लिया। सम्मेलन को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने संबोधित किया।

इस अवसर पर विधानसभाध्यक्ष वासुदेव देवनानी ने लोकसभाध्यक्ष ओम बिरला और केन्द्रीय मन्त्रियों जे पी नड्डा, अर्जुन राम मेघवाल, भागीरथ चौधरी के साथ ही प्रदेश के सांसदों ,विभिन्न प्रदेशों के विधानसभाध्यक्षों, संसद सदस्यों और अन्य कई नेताओं से शिष्टाचार भेंट की । 28वें संसदीय सम्मेलन के उद्घाटन समारोह में आईपीयू की प्रेसीडेंट, सीपीए के चेयरपर्सन, राष्ट्रमंडल देशों की संसदों के पीठासीन अधिकारीगण, भारत सरकार के मंत्रीगण, राज्य विधान मंडलों के पीठासीन अधिकारियों ने भाग

विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी ने गुरुवार को नई दिल्ली में संसदीय सम्मेलन में शामिल हुए।

लिया ।विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के राष्ट्रमंडल देशों के अध्यक्षों को संबोधित करते हुए दिए गए प्रभावशाली भाषण को प्रेरणादायी बताते हुए कहा कि प्रधानमंत्री मोदी ने लोकतंत्र की मजबूती

- **राष्ट्रमंडल देशों के स्पीकर्स 17 जनवरी को आएंगे जयपुर**
- **देवनानी ने ओम बिरला और केन्द्रीय मन्त्रियों जे पी नड्डा व अन्य कई नेताओं से शिष्टाचार भेंट की**

के लिए लोकतांत्रिक मूल्यों, संसदीय परंपराओं और जनभागीदारी की मजबूती पर जोर देते हुए राष्ट्रमंडल देशों के बीच सहयोग, श्रेष्ठ संसदीय प्रथाओं के आदान-प्रदान और क्षमता निर्माण के साथ ही साझा चुनौतियों का मिल कर समाधान करने का आ ान किया है। इस संदेश से राष्ट्रमंडलीय देश भी अपने - अपने देशों में लोकतांत्रिक मूल्यों और संसदीय परंपराओं को अपनाकर भारत की तरह ही विकास के मार्ग पर आगे बढ़ सकते है ।

विधानसभाध्यक्ष देवनानी ने बताया कि नई दिल्ली में आयोजित कॉमनवेल्थ देशों के सम्मेलन के बाद स्पीकर्स का 17 जनवरी को जयपुर भ्रमण का कार्यक्रम है। उन्होंने बताया कि राष्ट्रमंडल देशों के अध्यक्षों के सम्मान में जयपुर के कांस्टीट्यूशन क्लब में 17 जनवरी को सायं राज्य विधानसभा द्वारा एक सांस्कृतिक कार्यक्रम और रात्रि भोज का आयोजन रखा गया है। सभी स्पीकर्स का गुलाबी नगर जयपुर पहुंचने पर भारतीय परम्परा के अनुसार स्वागत किया जायेगा। इसमें लोकसभाध्यक्ष ओम बिरला, राज्यपाल हरिभाऊ बागड़े, मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा और राज्य मंत्री परिषद के सदस्यगण और नेता प्रतिपक्ष भी शामिल होंगे।

ढाबे के बेसमेंट में लगी आग से एक युवक की मौत

जयपुर। मानसरोवर थाना इलाके में बुधवार देर शाम एक ढाबे के बेसमेंट में अचानक से आग लग गई। जिसके बाद अफरा-तफरी का माहौल बन गया। ढाबे के बेसमेंट से धुआं निकलता देख छत पर मौजूद अन्य कर्मचारी भाग कर नीचे आए और घटना की जानकारी पुलिस और दमकल विभाग को दी। सूचना पर मौके पर पहुंची दमकल विभाग ने कुछ ही देर में आग पर काबू पा लिया। लेकिन इससे पहले एक युवक आग की चपेट में आ गया और उसकी दर्दनाक मौत हो गई। शव पूरी तरह से जल जाने के कारण मृतक की शिनाख्त नहीं हो पाई। राहुल कुमार सैन का गणेशम् नाम से ढाबा है। बुधवार देर शाम 7 बजे के करीब ढाबे का स्टाफ छत पर पतंगबाजी कर रहा था। इसी दौरान बेसमेंट से धुआं निकलता दिखाई दिया। स्टाफ भाग कर नीचे आया तो बेसमेंट में आग फेल चुकी थी। जिसके बाद स्टाफ ने घटना की जानकारी पुलिस और दमकल विभाग को दी।

सार-समाचार

युवोत्सव 2026 में जयपुर की रिषा जैन ने मोनो एक्ट में प्रथम स्थान प्राप्त किया

जयपुर। दा इन्स्टीट्यूट ऑफ कम्पनी सेक्रेटरी ऑफ इण्डिया द्वारा आयोजित राज्य स्तरीय युवोत्सव 2026 में जयपर की सी. एस. फायनिलिस्ट रिषा जैन ने मोनो एक्ट में प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया।रिषा को पुरस्कार आइ. सी. एस. आइ. के चेयरमेन विवेक शर्मा व सेक्रेटरी सी.एस. वरुण शर्मा द्वारा संयुक्त रुप से दिया गया।समारोह में ट्रेजरार सी.एस. राहुल शर्मा, पूर्व अध्यक्ष अभिषेक गोस्वामी मंचासीन थे। समारोह का संचालन आइ.सी.एस. आइ. कार्यालय के एक्जीकेटिव ऑफिसर मक्खनलाल ने किया। उल्लेखनीय है कि राज्य स्तर के युवोत्सव में राजस्थान के सभी शहरों से भारी संख्या में प्रतिभागी व दर्शक मोजूद थे।

प्रेमचंद सदैव प्रासंगिक हैं : हेमलता महिश्वर

दिल्ली/जयपुर। प्रेमचंद के साहित्य में दलित और वंचित जनता का स्वर है जिसे सुना जाना आवश्यक है। उनकी कहानियाँ स्वाधीनता संग्राम के युग का दस्तावेज बन गई हैं। विख्यात लेखिका और जामिया मिल्लिया विश्वविद्यालय में हिंदी की आचार्य डॉ हेमलता महिश्वर ने विश्व पुस्तक मेले में राजपाल एंड सन्ज़ द्वारा पल्लव द्वारा संपादित प्रेमचंद की कहानियों की शृंखला के लोकार्पण पर कहा कि प्रेमचंद अपने साहित्य में भारतीय जनमानस का सटीक और यथार्थ चित्रण करते हैं। उन्होंने पल्लव द्वारा संपादित प्रेमचंद कहानी शृंखला के सुरुचिपूर्ण प्रकाशन पर बधाई दी।सत्र की शुरुआत में अंग्रेजी साहित्य के अध्येता और हिंदू कालेज में आचार्य डॉ सिद्धार्थ कन्नौजिया ने प्रेमचंद की जीवन यात्रा को रेखांकित करते हुए उनके साहित्य और जीवन संघर्ष की साम्यता को दर्शाया। उन्होंने कहा कि कफ़न जैसी कुछ कहानियों से असहमति के बावजूद उनके द्वारा उठाए गए सवालों की अनदेखी नहीं की जा सकती। डॉ कन्नौजिया ने शृंखला को उपयोगी बताते हुए कहा कि ऐसे और चयन आएं तो नए पाठकों को लाभ होगा।चर्चा में सुप्रसिद्ध आलोचक प्रो बजरंग बिहारी तिवारी ने कहा कि प्रेमचंद के पाठक भारत के गांव गांव में हैं यही नहीं अन्य भारतीय भाषाओं के पाठक भी प्रेमचंद को अपना लेखक मानते हैं।

विधानसभा में पूर्व मुख्यमंत्री स्वर्गीय जगन्नाथ पहाड़िया को उनकी जयंती पर पुष्पांजलि

जयपुर। राजस्थान विधानसभा में गुरुवार को प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री स्वर्गीय जगन्नाथ पहाड़िया को उनकी जयंती पर पुष्पांजलि अर्पित की गई। प्रमुख सचिव भारत भूषण शर्मा ने विधानसभा परिसर के प्रथम तल स्थित पूर्वी लॉबी में स्वर्गीय पहाड़िया के चित्र पर पुष्प अर्पित कर उन्हें नमन किया। इस अवसर पर उपसचिव श्रीमती इंदिरा शर्मा सहित विधानसभा के अधिकारी एवं कर्मचारियों ने स्वर्गीय पहाड़िया के चित्र पर पुष्प अर्पित कर पुष्पांजलि दी। उल्लेखनीय है कि स्वर्गीय जगन्नाथ पहाड़िया 6 जून 1980 से 13 जुलाई 1981 तक राजस्थान के मुख्यमंत्री रहे।

पूर्व उप मुख्यमंत्री सचिन पायलट से शिष्टाचार भेंट की

जयपुर। जयपुर स्थित सिविल लाइन आवास पर ए आई सी सी महासचिव एवं पूर्व उप मुख्यमंत्री सचिन पायलट साहब से सदस्य ओ बी सी. , एडवाईजरी काउंसिल एवं पूर्व राष्ट्रीय समन्वयक राजेन्द्र सेन , उपाध्यक्ष नरेन्द्र मारवाल, आर एस देव एवं ओ बी सी टीम के साथ शिष्टाचार भेंट कर बताया कि प्रदेश में भाजपा सरकार के दबाव से एस आई आर के तहत लगभग 57 लाख मतदाताओं के नाम काटे गये है वोटर लिस्ट मे काटे गये नामो मे अधिकतर गरीब दलित पिछड़े लोग है जो रोज मजदूरी करके अपने परिवार का पेट पालते है इनके पास निवास प्रमाण पत्र बनवाने का समय नही है और इनका पूर्व वोटर लिस्ट में नाम है अब यह 2002 से नाम मांग रहे है और ये सभी कांग्रेस के परम्परागत मतदाता है ।

बीजेपी के किसान मोर्चा अध्यक्ष पर जानलेवा हमला

जयपुर। आमेर थाना इलाके में बुधवार देर रात दुकान से घर जा रहे बीजेपी के किसान मोर्चा के अध्यक्ष पर दो दर्जन से अधिक अज्ञात बदमाशों ने मामूली कहासुनी के बाद जानलेवा हमला कर उसे गंभीर रुप से घायल कर दिया। यहीं नहीं बदमाशों का गुस्सा इतने में भी शांत नहीं हुआ तो उन्होने पीड़ित की कार में भी जमकर तोड़ फोड़ कर डाली। बदमाशों के चगुल से मुक्त होने के बाद पीड़ित ने मामले की जानकारी पुलिस को दी। पुलिस ने घटना स्थल के आसपास लगे सीसीटी फुटेज के आधार पर मामला दर्ज कर आरोपियों की तलाश शुरु कर दी है। पुलिस ने बताया कि पीड़ित विश्वास सैनी बीजेपी के किसान मोर्चा का अध्यक्ष और बुधवार देर रात कुंडा मोड़ से अपनी दुकान बंद कर घर जा रहा था। इसी दौरान किसी बात को लेकर उसकी कुछ लोगों से कहासुनी हो गई और देखते ही देखते करीब 20 से 25 अज्ञात बदमाशों ने एकराय होकर विश्वास सैनी पर लाठी,डंडे,सरिए और पत्थरों से हमला कर दिया और पीड़ित को बुरी तरह से घायल कर दिया। बदमाशों ने इसके बाद पीड़ित के गाड़ी में भी जमकर तोड़ फोड़ की । सूचना पर मौके पर पहुंची पुलिस ने घायल अवस्था में विश्वास सैनी को अस्पताल भिजवाया । प्राथमिक उपचार के बाद छुट्टी दे दी गई। पुलिस ने पीड़ित की शिकायत पर अज्ञात बदमाशों के खिलाफ मामला दर्ज कर उनकी तलाश शुरु कर दी है।

मकर संक्रांति पर आतिशबाजी के दौरान हुई हवाई फायरिंग

जयपुर। शास्त्री नगर थाना इलाके में मकर संक्रांति के अवसर पर देर शाम आतिशबाजी के दौरान किसी अज्ञात बदमाश ने हवाई फायरिंग कर दी । जिसके बाद मकर संक्रांति पर तनाव का माहौल बन गया और अफरा-तफरी मच गई। हवाई फायरिंग की बुलेट एक युवक के हाथ को छूकर छत पर गिर गई। जिससे युवक मामूली रुप से चोटिल हो गया। छत पर बुलेट पड़ी देख पीड़ित मकान मालिक ने घटना की जानकारी पुलिस को दी। सूचना पर मौके पर पहुंची पुलिस ने एफएसएल टीम की मदद से सबूत जुटाए और बुलेट जब्त कर छानबीन शुरू की।

ARBIT it happens here...

राष्ट्रदूत
FRIDAY
16 January 2026
A-B

International Hot and Spicy Food Day

International Hot and Spicy Food Day celebrates the bold flavours and fiery sensations that spice up cuisines around the world. Observed annually, this day encourages food enthusiasts to explore dishes that feature chili, peppers, and a variety of piquant ingredients. From sizzling curries to tangy sauces, it's a tribute to the culinary creativity that transforms ordinary meals into exciting experiences. Food lovers are invited to experiment with heat levels, try new recipes, and share their spicy adventures on social media. The day also highlights the cultural significance of spicy food in traditions, festivals, and everyday cooking globally.

#SNIPPETS

The Important, Beautiful And Handsome All Here

A large number of soirees sport local writers, as one sees the calendar, one can yelp with delight at the rise of the Jaipur intelligentsia

Clarkes looked alive! The never ending long path to the portico, or even the side slip to the marriage venues, one skipped quickly through. The organizers took great pains to NOT change the entry décor of the tried and found successful in the previous venue, Diggi Palace. The same streamers, pretty, ethnic, colourful, set the mood, as also the memory of past festival. The lack of actual history in the venue was pasted over by the lovely panels encasing the various soiree points.

The first discussion did get washed away by the entry of the C.M. They had to exchange time with the 'opening'. Hope this session gets another slot? In the coming session days. People were well dressed. A must go and look, and revamp your wardrobe session all on its own. There was some very fine Kashmiri Phirans, done with zardozi. Sarees have made a bang of a comeback. So, older ladies can go home laughing, and redo some of their own grandmother's stuff. The ethnic styles are home for a delicious long stay.

Looking for different venues is not a huge struggle, they are fewer. One is not running endlessly to reach one or the other point. You feel at home, mostly. A large number of soirees sport local writers, as one sees the calendar, one can yelp with delight at the rise of the Jaipur intelligentsia. We are seeing less and less of original English and more of ourselves here in the JLF.

The reason is that JLF holds sessions now in London, Australia and God knows where else. All called JLF. Now, we may chuckle at this compliment, but at a cost. Some people we will not meet here are visiting those venues. Our Government should do something to keep our U S P safe. There were some grown up people, very grown up. Some not so grown up, young. Some for the feel of being where they should be seen and seeing. The mela goers were not going to be disappointed. Mehndi wali and the jingbang are all here. Lovely JLF.

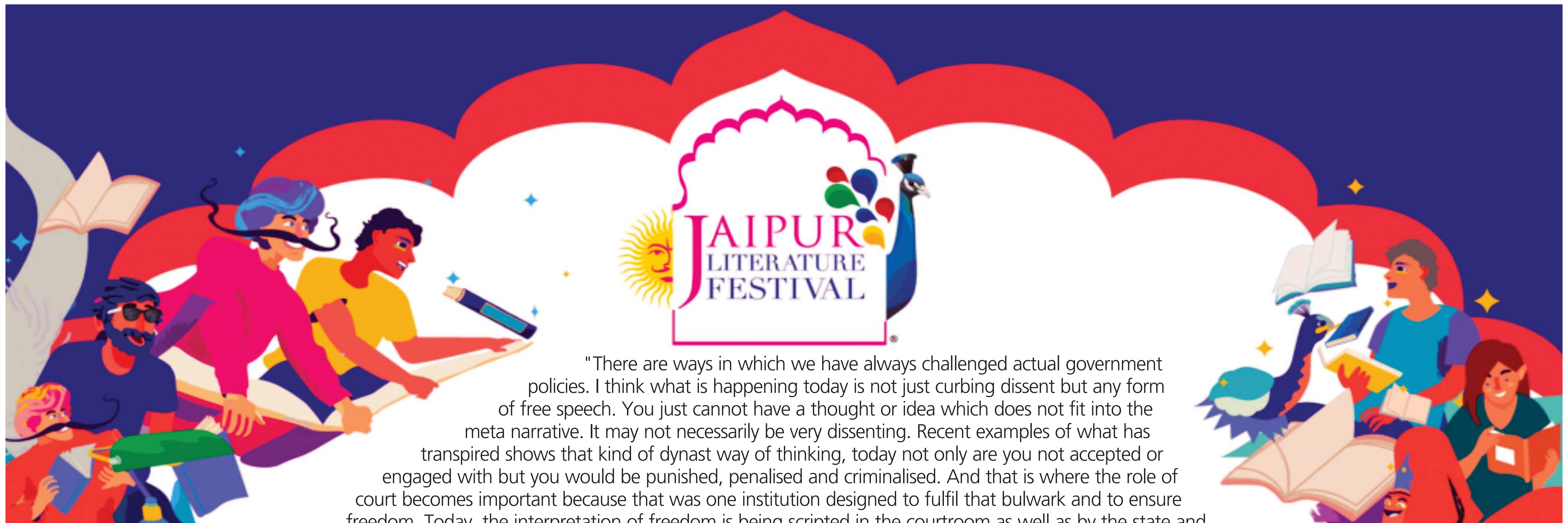

"There are ways in which we have always challenged actual government policies. I think what is happening today is not just curbing dissent but any form of free speech. You just cannot have a thought or idea which does not fit into the meta narrative. It may not necessarily be very dissenting. Recent examples of what has transpired shows that kind of dynast way of thinking, today not only are you not accepted or engaged with but you would be punished, penalised and criminalised. And that is where the role of court becomes important because that was one institution designed to fulfil that bulwark and to ensure freedom. Today, the interpretation of freedom is being scripted in the courtroom as well as by the state and the emerging truth is that freedom will be secondary to duty, liberty will be subservient to the state. But that is not how any freedom of liberty has ever existed in any society."

And Why Not Dissent!

#JLF

● Rakhee Roytalukedar

"Dissent was much easier way back in time. Now, you simply cannot have a thought or a new idea that does not fit into the meta narrative," this was the thought that emerged today at an interesting session on 'Threads of Dissent' at the literature extravaganza, Jaipur Literature Festival, which began here today.

The panelists say the new emerging idea may not be dissenting enough but one is mostly likely to be penalised for it in present times, rather than that the idea be debated or truly engaged with, which is deeply concerning. Today, the interpretation of freedom is being scripted both in the courtroom and by the state and what finally comes out as a result is that freedom is secondary to duty, liberty is subservient to the state.

Vrinda Grover, Supreme Court advocate and human rights activist, while reflecting on dissent and freedom at the session, talked about the present dispensation's attempts to silence dissent in response to sharp criticisms over its policies. She took the most recent example of student activist Umar Khalid, whom the Supreme Court denied bail in the 2020 Delhi riots conspiracy case and in the process legitimised the use of Unlawful Activities (Prevention) Act to criminalise political dissent, having put the organisers of mass protests behind bars for years without trial, setting forth a deeply troubling precedent.

The session had three more women authors and activists, Deepti Priya Mehrotra, a political scientist, bureaucrat Swati Pande and Booker-prize winner and lawyer Banu Mustaq, who is part of Bandaya Sahitya movement, which is a kind of protest literature tradition.

Vrinda, while speaking about Umar Khalid and his incarceration without trial, expressed concern, saying "any society which is not willing to engage, instead puts people behind bars, is instilling fear in society, which is actually going to stunt and stultify our society."

Talking about the present times, she said, "Today's script is not necessarily the one written in law in the Constitution, the script is changing. But this change of script is sometimes very concerning. Part of the script must change as time moves forward but part of the script can't be subverted altogether. I think in earlier times, raising new ideas in this country and in our society was easier. Back then, there was not necessarily such a strong reaction or condemnation from the state or from the society to any new thinking. This is concerning especially in terms of minorities' perspective. You may disagree with what somebody holds true."

Talking about the ongoing debate on Aadhar, SIR, Vrinda said, "There are ways in which we have always challenged actual government policies. I think what is happening today is not just curbing dissent but any form of free speech. You just cannot have a thought or idea which does not fit into the meta narrative. It may not necessarily be very dissenting. Recent examples of what has transpired shows that kind of dynast way of thinking, today not only are you not accepted or engaged with but you would be punished, penalised and criminalised. And that is where the role of court becomes important because that was one institution designed to fulfil that bulwark and to ensure freedom. Today, the interpretation of freedom is being scripted in the courtroom as well as by the state and the emerging truth is that freedom will be secondary to duty, liberty will be subservient to the state. But that is not how any freedom of liberty has ever existed in any society. So, I would rather see it as a passing phase, it is a very challenging time globally, not just domestically."

Dwelling upon the case of Umar Khalid, Vrinda said, "A young intellectual, Muslim leader, Khalid, whose speech is now under scrutiny, is languishing behind bars without trial. Any society which is not willing to engage, you may not agree to everything but to put people behind bars, to put fear is actually going to stunt and stultify our society. And if institutions are not able to wake up to this travesty, it is for all of us and for forums like these for engagements, conversations and dialogues."

Political scientist Deepti Priya Mehrotra, who has authored the book on feminist street theatres in India, "Walking out, Speaking Up, concurred saying the earlier times were magical and that as a group, they could come out on the streets, resisting and fighting. There was pain, anger and energy against the horrifying dowry deaths, all of which were brought poignantly out in the street plays. The women's feminist movement was important that time because they profiled how women protested. But violence has not stopped, especially against women and the marginalised. When the plays were performed in residential colonies, there was an immediate connection and empathy. It touched the hearts and many people reacted as the play was presenting their reality. The street plays were also open-ended, aimed to raise awareness and consciousness. Like at the end of play, there was the question like should a woman walk out or keep suffering."

Booker prize winner for Heart Lamp, Banu Mustaq, recollected how rebellion was her in-built nature and how she could not be tied down to her house and that she literally walked out of her house because her in-laws could not come to terms with her rebellious nature. She has been writing even before her marriage but there was a long gap. She was inspired by a group of Dalit youths who were singing rebel songs. She contacted these youths and joined them. She made it clear that she cannot stay home but would join the Bandaya Sahitya movement in the 1970s. This movement allowed a bunch of Dalit writers to change the Kannada literary landscape by introducing protest and rebel writing into an otherwise restricted buttoned up literature. Activist and lawyer Mustaq said hers' is confrontational writing and she writes from her heart, and her book Heart Lamp focuses on lives of Muslim women, who live restricted lives, whether poor or moneyed and feel threatened by money, power and prejudice.

In the same way, the sex workers of Kamathipura, the red light district of Mumbai, lead lives in penury where they earn around Rs. 200 after servicing around 12 clients per day, and they have kids, whom they want to protect and give education, which is nearly impossible, said Swati Pandey, a bureaucrat, who has worked with India Post, and has authored the book, 'Invisible in Plain Sight, Voices from the By-Lanes of Kamathipura.' She emphasised that these sex workers are often intrigued by why people want to take them out of this place, which they call their own as they have made a world there.

As she writes in her book that there is dissent and anger there too, "All was not fair game in her world. While it was true that they were sex workers, Kajol (a sex worker) believed that they should have the dignity of a human existence. Kajol had dethroned Maya and had freed the women and herself. No one owned them now. They were free. They traded as per their own convenience and stood by each other. Whenever they were not in the mood for work, physically or psychologically, they sat back in their pockets and relaxed." And perhaps, this dissent against the set system, which is imperative in a democracy, would ensure accountability, drive social progress and keep hope afloat.

rajeshsharma1049@gmail.com

Deepti Priya Mehrotra.

Swati Pandey.

Puneeta Roy.

Banu Mushtaq.

Vrinda Grover.

#KHUD SE BAAT

"Wo baat jo dusra koi samajh Nahin sakta Khud se kah lete hain hum…"

Vicharon ke Dhage uljhte jate hain apne antarman me
Khud se baat karne lagte hain hum

The interesting session touched on the horizon of poetic imagination as well. A poet's observation doesn't necessarily differ from others but the courage, the depth, and a distinct perspective to express makes the poet different from other people. That's why goes the old saying "jahan na pahunche Ravi, wahan pahunche kavi".

● Abha Sharma

Poetry is an exchange with the self, a self-reflection where the poetic expression becomes both the question and the answer, said Anshu Harsh, author, publisher and editor at the session Khud Se Baat on the inaugural day of the Jaipur Literature Festival on Thursday.

In an engrossing conversation with Anshu was Jagdeep Singh, popularly known as Jags, himself a well-known poet and publicist. The writer of much acclaimed My Epitaph and his latest poetic anthology When God's Don't Matter discussed all facets of Anshu's poetry writing, art of translation and shift from poetry to fiction.

Referring to Anshu's four published volumes of verses covering varied topics from love, struggle in life, nature, religion, spirituality, Singh and Anshu engaged in the poetry of remembrance and self- reflection.

Anshu said, the moment a poet starts observing something, the writing process starts within.

Jante ho
Vichar kabhi thahrate Nahin hain, chalte rahte hain anvarat
Jeevan me aane ke saath hi shuru ho jata hai ye Silsila
Vicharon ke Dhage uljhte jate hain apne antarman me
Khud se baat karne lagte hain hum
Wo baat jo dusra koi samajh Nahin sakta
Khud se kah lete hain ham…

(Thoughts keep flowing in my mind, get interwined and they take shape in a poetic form. What a poet talks to his/her own self, no one else can understand.)

No poem can be written without self- reflection, she added. This gives utmost satisfaction and also mean leaving out your vajud, your legacy when you are no more or around.

Singh asked her to elaborate about inclusion of both Hindi and English in her third anthology. "If one wants to cross borders and make one's global presence felt, translation is important. Referring to Ret Samadhi by Geeta Shree, Anshu said the translation helped her reach a wider audience and also a Booker prize. The importance of translation is essential for global outreach and market", she added.

Singh pointed out the challenges of translation. A good translation doesn't mean translating simply words, it means capturing the right expressions in the original language.

Speaking about her simplistic approach in writing poetry, she said she doesn't go by the specific rules of rhyme or poetic meter. "I let the words flow with ease." She doesn't use symbols, metaphors or imagery. "I just keep writing and don't fall for the rules."

She was asked at a JLF session a few years ago, when there is so much strife all around and she still prefers to write on love. She strongly feels everybody has a purpose, like some work to revolutionize, some like to do something else, she loves to spread love. It is like kindling a flame to spread light.

Anshu's writing career incidentally synchronized with her motherhood. Her initial poems revolved around mother-child relationship, childhood, relationships but ruhaniyat or the spirit of love remains centre to her poetry writing. It helps her unveiling the true purpose of her writing.

The session also had the unveiling of her debut novel Iccha Mrityu, which she wrote inspired by the life of Aruna Shaunbag and her quiet suffering. The novel covers the subject of passive euthanasia.

The interesting session touched on the horizon of poetic imagination as well. A poet's observation doesn't necessarily differ from others but the courage, the depth, and a distinct perspective to express makes the poet different from other people. That's why goes the old saying "jahan na pahunche Ravi, wahan pahunche kavi".

Singh also raised a poignant question on Catharsis. If poetry is self-reflection, khud se baat, does it help the poet feel relieve of his/her burden/ anger/ weight? Agreeing with him, Anshu said that writing is like a therapy, it helps you vent your feelings:

Kitne kaante chubhte hain rooh me
Tab zindagi ko muskurana aata hai

THE WALL

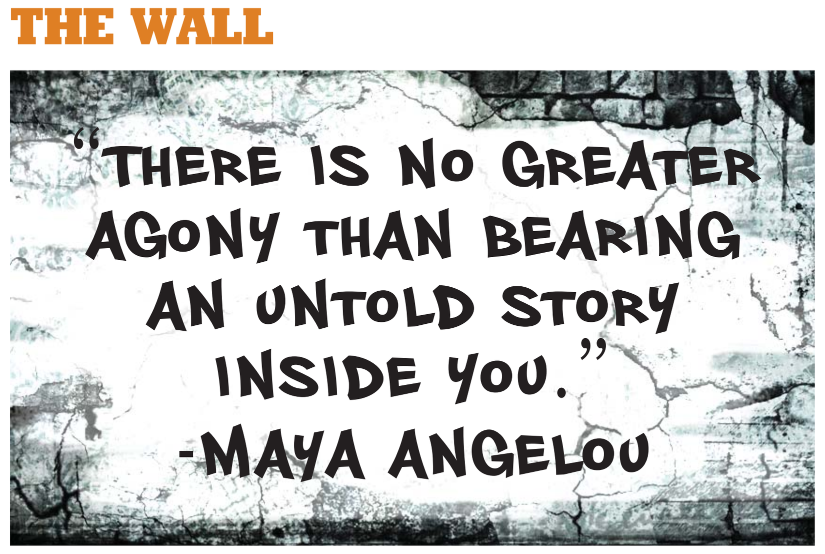

BABY BLUES

By Rick Kirkman & Jerry Scott

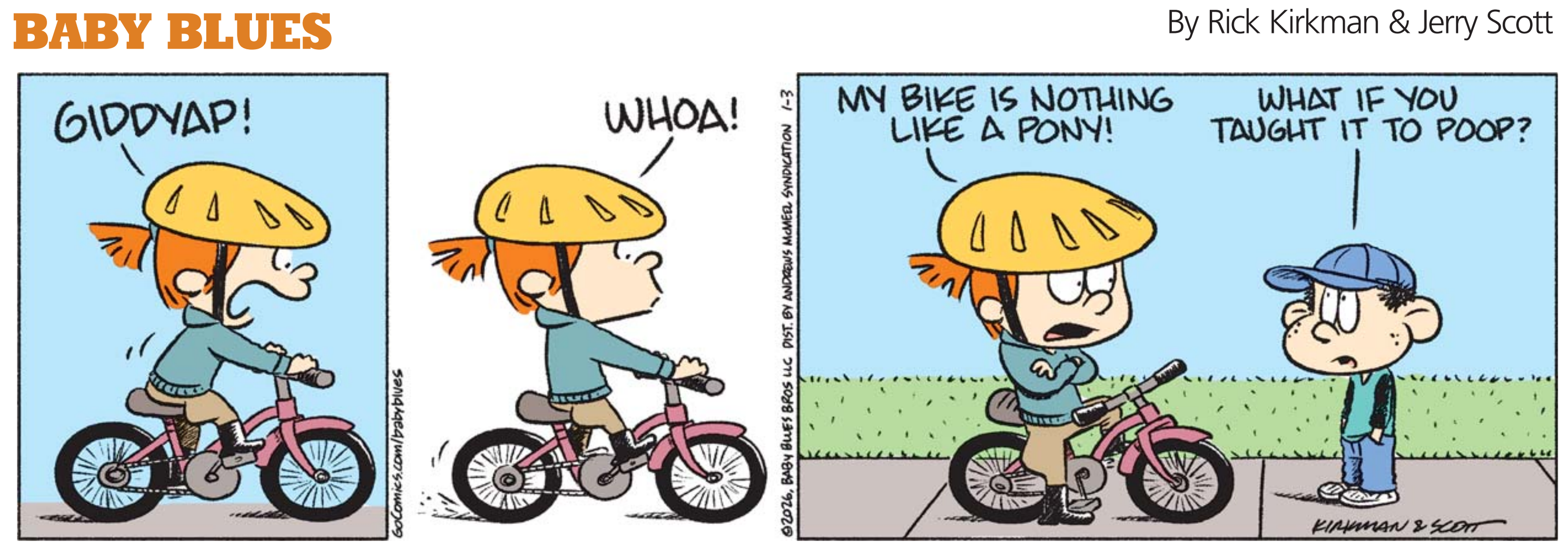

ZITS

By Jerry Scott & Jim Borgman

मिर्धा परिवार की जोधपुर स्थित मिर्धा फार्म की 150 गज जमीन की लड़ाई थाने पहुंची

पूर्व सांसद डॉ. ज्योति मिर्धा की तरफ से चचेरे भाई मनीष मिर्धा और अन्य के खिलाफ प्रतापनगर थाने में एफआईआर दर्ज

- **ज्योति मिर्धा की तरफ से उनके अधिकृत प्रतिनिधि प्रेमप्रकाश ने रिपोर्ट दी है, रिपोर्ट में सूथला स्थित फार्म हाउस पर जबरन कब्जे के प्रयास और तोड़फोड़ के आरोप लगाए गए हैं**
- **दूसरे पक्ष का दावा है कि यह विवाद केवल जमीन के टुकड़े का नहीं, बल्कि वहां बने पूर्वजों के समाधि स्थल को लेकर है, इसे वो बचाने का दावा कर रहे हैं**

जोधपुर, (कासं)। नागौर की राजनीति के सबसे रसूखदार मिर्धा परिवार की जोधपुर स्थित मिर्धा फार्म की 150 गज की जमीन की लड़ाई थाने पहुंच गई है। पूर्व सांसद डॉ. ज्योति मिर्धा की तरफ से चचेरे भाई मनीष मिर्धा और अन्य के खिलाफ प्रतापनगर थाने में एफआईआर दर्ज की गई है। ज्योति मिर्धा की तरफ से उनके अधिकृत प्रतिनिधि प्रेमप्रकाश ने रिपोर्ट दी है। रिपोर्ट में सूथला स्थित फार्म हाउस पर जबरन कब्जे के प्रयास और तोड़फोड़ का आरोप लगाए गए हैं। वहीं दूसरे पक्ष का दावा है कि यह विवाद केवल जमीन के टुकड़े का नहीं, बल्कि वहां बने पूर्वजों के समाधि स्थल को लेकर है। इसे वो बचाने का दावा कर रहे हैं। ज्योति मिर्धा का पक्ष इसे अतिक्रमण और अवैध कब्जा बता रहा है। विवाद को देखते हुए पुलिस ने समाधि स्थल पर पुलिसकर्मी को तैनात किया है।

एफआईआर के मुताबिक मामले की शुरुआत 13 जनवरी को दोपहर करीब 12 बजे हुई। जब मनीष मिर्धा अपने 10-12 साथियों के साथ जबरन फार्म हाउस में घुस आए। आरोप है कि उन्होंने वहां मौजूद केयरटेकर सलीम को डरा-धमकाकर तालों की चाबियां छीन लीं। इसके अगले दिन यानी 14 जनवरी को आरोपी पक्ष ने दोबारा ताले तोड़े और वहां बने समाधि स्थल के साथ छेड़छाड़ व तोड़फ़ोड़ शुरू कर दी। परिवादी प्रेमप्रकाश ने पुलिस को बताया कि मनीष और उनके साथी वीडियो में स्पष्ट रूप से तोड़फोड़ करते हुए दिखाई दे रहे हैं। मामले की गंभीरता को देखते हुए पुलिस ने त्वरित कार्रवाई की। प्रतापनगर पुलिस ने परिवादी प्रेमप्रकाश की रिपोर्ट के आधार पर भारतीय न्याय संहिता के तहत मनीष मिर्धा के खिलाफ संपत्ति में अनधिकृत प्रवेश करने, चोट पहुंचाने की तैयारी के साथ जबरन घर में घुसने और गैर-कानूनी जमावड़ा कर हमला करने की धाराओं में केस दर्ज किया है। पुलिस ने मौके के वीडियो फुटेज भी साक्ष्य के तौर पर सुरक्षित किए हैं। मामले की जांच थानाधिकारी भवानी सिंह कर रहे हैं।

जानकारी के अनुसार इस पूरे विवाद का केंद्र फार्म हाउस के अंदर बना 150 वर्ग गज का वह समाधि स्थल है, जो परिवार की भावनाओं से जुड़ा है। मनीष मिर्धा पक्ष का दावा है कि डॉ. ज्योति मिर्धा इस बेशकीमती जमीन को बेचना चाहती है, लेकिन बीच में आ रहा पैतृक समाधि स्थल सौदे में बाधा बन रहा है। मनीष का आरोप है कि ज्योति मिर्धा इस समाधि स्थल को हटाना चाहती हैं, जबकि वे अपने पूर्वजों की निशानी को बचाने के लिए संघर्ष कर रहे हैं। यहां पर सबसे पहले 1982 में नाथूराम मिर्धा की मां की समाधि बनाई गई थी। 1987 में मनीष के बड़े भाई रवि की समाधि बनी। नाथूराम मिर्धा के निधन के बाद 1996 में उनकी भी यही समाधि बनी। अब मनीष अपने पिता भानु प्रकाश मिर्धा की समाधि स्थल यहीं बना रहे हैं, जिसका विरोध किया जा रहा है। शिकायत पक्ष का कहना है कि मनीष ने गुंडा तत्वों के साथ मिलकर मालिकाना हक वाली जमीन हड़पने की नीयत से यह हमला किया है।

कोटा में चाइनीज मांझे से मासूम की गर्दन कटी, मौत

- **चाइनीज मांझे से मासूम की गर्दन, श्वास नली व रक्तवाहिनी धमनियां तक कट गई थी**

कोटा, (निसं)। मकर संक्रांति के आते ही प्रशासन ने चाईनीज मांझे पर प्रतिबंध लगाने के लिये अभियान शुरू किया, काफी चाईनीज मांझों को जब्त कर जलाया भी गया, लेकिन तमाम प्रयास एक मासूम की जिंदगी पर विफल हो गये। चाइनीज मांझे की डोर का उपयोग भले ही पतंगबाजी के दौरान पेंच काटने के लिये होता हो लेकिन इसी चाइनीज मांझे की डोर ने एक मां की गोद से उसका लाल छीन लिया। शहर में चाईनीज मांझे की चपेट में आने से एक मासूम बालक की मौत का मामला सामने आया है। चाइनीज मांझे की चपेट में आने से बालक को बुधवार को गंभीर घायल अवस्था में उपचार के लिए एमबीएस अस्पताल में भर्ती करवाया गया था, जहां पर उसका ऑपरेशन भी हुआ, इसके बाद गुरुवार को बालक ने आईसीयू में दम तोड़ दिया।

जानकारी के अनुसार सात वर्षीय मासूम धीर अपने पिता हेमंत सुवालका व मां बीना के साथ बाइक पर सवार होकर कुन्हाड़ी से नयापुरा की तरफ आ रहा था। कुन्हाड़ी के महाराणा प्रताप फ्लाईओवर पर कट कर जा रही पतंग का मांझा मासूम की गर्दन में फंस गया, जिससे उसकी गर्दन के साथ श्वास नली व रक्तवाहिनी धमनियां तक कट गईं और काफी ब्लीडिंग हुई, उसकी गर्दन तीन इंच तक कट गई थी। मेडिकल कॉलेज कोटा के सर्जरी विभाग अध्यक्ष डॉ. नीरज देवेंद्र ने बताया कि 7 वर्ष के बच्चे धीर को परिजन बुधवार को घायलावस्था में एमबीएस अस्पताल लेकर आए थे, उसके गर्दन पर गहरा घाव और कट था। इमरजेंसी में ही ईएनटी और सर्जरी विभाग की टीम ने बच्चे के खून का बहना रोका और इसके बाद ऑपरेशन किया और करीब 2 घंटे तक उसका ऑपरेशन चला। इसके बाद आईसीयू में उसका उपचार चल रहा था। उपचार के दौरान ही बालक ने दम तोड़ दिया। ईएनटी के डॉ. कुलदीप राणा का कहना है कि जिस तरह से बच्चा अस्पताल में पहुंचा था, तब लग रहा था कि रक्त की धार गर्दन से निकल रही है।

मृतक बालक धीर के परिजनों ने आरोप लगाया है कि रात में स्टाफ ने ठीक से केयर नहीं की, इसी के चलते उसकी मौत हुई है। परिजनों ने स्टाफ व एक रेजिडेंट डॉक्टर की शिकायत अस्पताल अधीक्षक को दी। अस्पताल अधीक्षक डॉ. धर्मराज मीणा ने बताया कि परिजनों ने शिकायत दी कि आईसीयू में भर्ती बालक की तबियत बिगडने पर परिजन लगातार रेजिडेंट डॉक्टर एवं स्टाफ के पास जा रहे थे, लेकिन उन्होंने कोई सुनवाई नहीं की, अधीक्षक ने कहा कि पूरे मामले की जांच के लिये कमेटी गठित की गई। डॉक्टर नर्सिंग स्टाफ को वार्ड से हटा दिया है।

डूंगरपुर में पतंग उड़ाते समय बच्चे को करंट लगा, उपचार जारी

- **चाइनीज मांझे के बिजली के तार के टच करते ही झटका लग गया था**

डूंगरपुर, (निसं)। डूंगरपुर में मकर संक्रांति के अवसर पर चाइनीज मांझे का उपयोग एक बच्चे के लिए खतरनाक साबित हुआ। जिले के माथुगामडा खास गांव में पतंग उड़ाते समय बिजली के तारों के संपर्क में आने से एक बच्चे को जोरदार करंट लगा। घायल बच्चे को डूंगरपुर जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया है, जहां उसका इलाज जारी है।

प्राप्त जानकारी के अनुसार यह घटना माथुगामडा खास गांव की है। यहां रहने वाले शंकर कटरा के बेटे शौर्य मकर संक्रांति के दिन अपने घर की छत पर पतंग उड़ा रहा था। बताया जा रहा है कि वह पतंग उड़ाने के लिए प्रतिबंधित चाइनीज डोर का इस्तेमाल कर रहा था।

पतंग उड़ाते समय अचानक यह डोर घर के पास से गुजर रही बिजली की लाइन में फंस गई। चाइनीज मांझे में अक्सर मैटेलिक कोटिंग धातु का बुरादा होती है, जिसके कारण तार के संपर्क में आते ही डोर में करंट दौड़ गया। डोर पकड़े हुए शौर्य को बिजली का जोरदार झटका लगा और करंट उसके शरीर में फैल गया। हादसे के बाद छत पर अफरा-तफरी मच गई। बच्चे की हालत देखकर परिजन तुरंत छत पर पहुंचे और आनन-फानन में घायल शौर्य को डूंगरपुर जिला अस्पताल ले गए,जहां उसे भर्ती कर लिया गया है।

जैन मंदिर में चोरी

बूंदी, (निसं)। जिले में हो रही लगातार चोरियों से आमजन में तो आक्रोश है ही, पर जैन मंदिर में लगातार तीसरी बार चोरी से जैन समाज के लोगों में भारी रोष व्याप्त है।

नैनवा कस्बे स्थित नेमीनाथ जैन मंदिर से चोर चोरी कर चांदी का छत्र और अन्य सामान ले उड़े। चोरी की घटना का पता तब लगा जब सुबह मंदिर में दर्शन करने के लिए समाज के लोग पहुंचे। सूचना मिलने पर थाना अधिकारी सहदेव सिंह मौके पर पहुंचे और घटना की जानकारी ली। सीसीटीवी फुटेज में चोरों की पहचान के प्रयास किया जा रहे हैं। सहदेव ने बताया कि जल्द ही चोरी की वारदात का खुलासा कर चोरों को पकड़ लिया जाएगा। जैन में हो रही लगातार चारियों से समाज के लोगों में आक्रोश है। समाज के लोगों ने पुलिस से मांग की है कि जल्द से जल्द मंदिरो में हुई चोरी की घटनाओं का खुलासा कर चोरो को गिरफ्तार किया जाए। रात के समय पुलिस गश्त बढ़े।

फर्जी बैंक अधिकारी बनकर ठगी करने वाला आरोपी जयपुर से गिरफ्तार

- **आरोपी ने डूंगरपुर के एक शिक्षक से लोन की राशि कम करने के नाम पर 3.47 लाख रुपए ठगे थे**

डूंगरपुर, (निसं)। सायबर थाना पुलिस ने ऑपरेशन सायबर हंट अभियान के तहत एक बड़ी सफलता हासिल की है। खुद को एक नामी निजी बैंक का अधिकारी बताकर लाखों रुपए की ठगी करने वाले एक सायबर ठग को जयपुर से गिरफ्तार किया गया है। आरोपी ने डूंगरपुर के एक शिक्षक से लोन की राशि कम करने के नाम पर करीब 3 लाख 47 हजार रुपए ठगे थे।

सायबर थाने के सीआई गिरधारसिंह ने बताया कि नेजपुर निवासी शिक्षक दिनेश चंद्र यादव ने इस संबंध में रिपोर्ट दर्ज कराई थी। पीड़ित को व्यक्तिगत ऋण की आवश्यकता थी। गत 9 अक्टूबर को दिनेश चंद्र यादव के फोन पर प्रियांशु शर्मा नामक व्यक्ति का फोन आया। उसने खुद को एक नामी निजी बैंक का अधिकारी बताया और लोन दिलाने का प्रस्ताव दिया। पीड़ित दिनेश ने पर्सनल लोन के लिए सहमति दी। आरोपी के कहने पर पीड़ित ने अपने आवश्यक दस्तावेज प्रियांशु के वॉट्सऐप नंबर पर भेज दिए। आरोपी ने पीडित का 21 लाख रुपए की जगह 23 लाख 54 हजार 23 रुपए का लोन पास करवा दिया, जबकि पीड़ित को केवल 21 लाख रुपए की आवश्यकता थी। जब शिक्षक दिनेश ने प्रियांशु से संपर्क कर लोन की राशि कम करवाने की बात कही, तो आरोपी ने बताया कि ज्यादा पास हुए लोन की राशि कम करवाने के लिए उन्हें कुछ पैसे वापस जमा करने होंगे। इस झांसे में आकर पीड़ित ने आरोपी द्वारा बताए गए बैंक ऑफ बड़ौदा के खाते में अलग-अलग किस्तों में कुल 3 लाख 47 हजार 927 रुपए जमा कर दिए। पैसे मिलने के बाद आरोपी ने फोन उठाना बंद कर दिया, जिसके बाद पीड़ित को ठगी का एहसास हुआ।

पीड़ित की रिपोर्ट पर सायबर थाना पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू की और आरोपी दिनेश चंद्र शर्मा उर्फ प्रियांशु शर्मा को जयपुर से गिरफ्तार किया। फिलहाल पुलिस आरोपी से पूछताछ कर रही है। पुलिस अब यह पता लगाने में जुटी है कि इस गिरोह में और कौन-कौन शामिल है और इन्होंने अब तक कितने लोगों को अपना शिकार बनाया है।

शादी का झांसा देकर यौन शोषण

जोधपुर, (कासं)। जिला पश्चिम में एक महिला को शादी का झांसा देकर उसका यौन शोषण किया गया। आरोपी ने महिला के फोटोग्राफ्स और वीडियो से उसे ब्लैकमेल कर रूपए और गहने हड़प लिए। पीड़िता ने इस बारे में बोरानाडा थाने में रिपोर्ट दी है। पीड़िता दलित वर्ग की बताई जाती है। फिलहाल पुलिस ने केस दर्ज किया है। अग्रिम जांच की जा रही है।

78वें भारतीय थल सेना दिवस पर बूंदी में गूंजा राष्ट्रभक्ति का संकल्प

''हर कदम देश के नाम'' दौड़ से वीर जवानों को याद किया

- **ब्रिगेडियर भूपेश सिंह हाड़ा ने किया फ्लैग ऑफ, 50 से अधिक युवाओं ने भाग लिया**

बूंदी में युवा मैराथन धावक गोविंद प्रजापत के नेतृत्व में 'हर कदम देश के नाम' शीर्षक से 15 किलोमीटर की विशेष देशभक्ति दौड़ का आयोजन किया गया।

बूंदी, (निसं)। 78वें भारतीय थल सेना दिवस के अवसर पर गुरुवार को बूंदी शहर देशभक्ति की भावना से सराबोर नजर आया। इस अवसर पर युवा मैराथन धावक गोविंद प्रजापत के नेतृत्व में 'हर कदम देश के नाम' शीर्षक से 15 किलोमीटर की विशेष देशभक्ति दौड़ का आयोजन किया गया। इस दौड़ का उद्देश्य भारतीय सेना के अदम्य साहस, त्याग और समर्पण को नमन करना तथा युवाओं में राष्ट्रसेवा की भावना को प्रोत्साहित करना रहा।

कार्यक्रम का शुभारंभ खेल संकुल, बूंदी से हुआ, जहां ब्रिगेडियर भूपेश सिंह हाड़ा (शौर्य चक्र, विशिष्ट सेवा पदक) ने तिरंगा झंडा दिखाकर दौड़ को फ्लैग ऑफ किया। इस दौरान युवाओं ने भारत माता की जय, जय जवान जय हिंद जैसे गगनभेदी नारों से वातावरण को राष्ट्रभक्ति के रंग में रंग दिया। ब्रिगेडियर हाड़ा ने युवाओं को संबोधित करते हुए कहा कि देश की वास्तविक शक्ति उसका युवा वर्ग है। जब युवा शारीरिक रूप से सक्षम, मानसिक रूप से मजबूत और अनुशासित होते हैं, तभी राष्ट्र सशक्त बनता है। भारतीय सेना केवल रोजगार नहीं देती, बल्कि युवाओं को एक कुशल, प्रशिक्षित और जिम्मेदार नागरिक बनाकर राष्ट्रसेवा का अवसर प्रदान करती है। उन्होंने युवाओं से सेना से जुड़ने का आव्हान भी किया।

इस अवसर पर प्रतिभागियों ने यह संदेश भी दिया गया कि भारतीय सेना के जवान सर्दी, गर्मी, वर्षा और हर कठिन परिस्थिति में सीमाओं पर डटकर देश की रक्षा करते हैं। सेना दिवस के माध्यम से उनके इसी त्याग और बलिदान को नमन करते हुए यह दौड़ आयोजित की गई। इस प्रेरणादायक आयोजन में खेलकूद विकास समिति के अध्यक्ष शक्ति तोषनीवाल, समिति सचिव दीपक गुर्जर एवं हिमांशु हाड़ा ने भी दौड़ में सहभागिता निभाई। कार्यक्रम में शहर के 50 से अधिक युवाओं ने अपनी क्षमतानुसार भाग लिया-किसी ने 1 किलोमीटर, किसी ने 2 किलोमीटर तो कई युवाओं ने पूरी 15 किलोमीटर की दौड़ पूर्ण कर सैनिकों के सम्मान में अपना योगदान दिया। दौड़ में फिजिकल कोच घनश्याम गुर्जर, अध्यापक पंकज पारिक एवं कमांडो विजय हाड़ा, विजय सोलंकी सहित अनेक युवाओं की सक्रिय भागीदारी रही।

आयोजन से जुड़े गोविंद प्रजापत ने कहा कि यह दौड़ हमारे वीर जवानों के सम्मान में एक छोटा-सा प्रयास है। देश की रक्षा करने वाले असली नायक हमारी सेना के जवान हैं, जो दुर्गम क्षेत्रों और कठिन परिस्थितियों में रहकर हमारी सुरक्षा सुनिश्चित करते हैं। आयोजन में खेलकूद विकास समिति अध्यक्ष तोषनीवाल ने संदेश दिया कि आज का युवा देशभक्ति, अनुशासन और राष्ट्रसेवा के मूल्यों को आत्मसात कर भारतीय सेना के प्रति कृतज्ञता व्यक्त कर रहा है।

पेट्रोल पंप लूट की योजना बनाते सात बदमाश गिरफ्तार

गैंग के मुखिया गोपाल गुर्जर और उसके छह साथियों को पकड़ा

- **तलाशी लेने पर बदमाशों के पास से 2 लोडेड पिस्टल और 8 जिंदा कारतूस बरामद हुए**

भीलवाड़ा, (निसं)। भीलवाड़ा पुलिस को एक बड़ी कामयाबी हाथ लगी है। करेड़ा पुलिस ने डकैती की योजना बनाते हुए कुख्यात गैंग के सरगना सहित सात बदमाशों को गिरफ्तार किया है। ये बदमाश एक पेट्रोल पंप को लूटने की फिराक में थे।

जिला पुलिस अधीक्षक धर्मेंद्र सिंह के निर्देश पर करेड़ा थाना पुलिस और टीम ने संयुक्त कार्रवाई करते हुए गैंग के मुखिया गोपाल गुर्जर और उसके छह साथियों को दबोच लिया है। घटना 13 जनवरी की है। प्रभारी हेड कांस्टेबल कालूराम की सूचना पर पुलिस ने नाकाबंदी की। इस दौरान एक काले रंग की स्कॉर्पियो को रोका गया। तलाशी लेने पर बदमाशों के पास से 2 लोडेड पिस्टल और 8 जिंदा कारतूस बरामद हुए।

पुलिस पूछताछ में खुलासा हुआ है कि ये सभी आरोपी पेट्रोल पंप पर बड़ी लूट को अंजाम देने जा रहे थे, लेकिन उससे पहले ही पुलिस ने इनके मंसूबों पर पानी फेर दिया। गिरफ्तार आरोपियों में गैंग का लीडर गोपाल गुर्जर और हिस्ट्रीशीटर प्रभु सिंह व नारूलाल बंजारा शामिल हैं। प्रभु सिंह चित्तौड़गढ़ में लूट के मामले में पहले से वांछित है। पुलिस ने स्कॉर्पियो कार भी जब्त कर ली है और सभी के खिलाफ आर्म्स एक्ट और डकैती की योजना बनाने का मामला दर्ज किया है। पुलिस की इस त्वरित कार्रवाई ने शहर को एक बड़ी वारदात से बचा लिया है।

पांच टीचरों के तबादले से नाराज छात्र धरने पर बैठे

- **अलवर जिले के बहादुरपुर स्थित राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय का मामला**

अलवर, (निसं)। अलवर जिले के बहादुरपुर स्थित राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के छात्रों ने गुरुवार को शिक्षकों के ट्रांसफर के विरोध में बहादुरपुर सड़क को जाम कर दिया। छात्रों ने स्कूल के गेट पर ताला लगाकर धरना शुरू कर दिया। जानकारी के अनुसार 10 जनवरी को एक साथ 5 टीचरों के ट्रांसफर से स्कूल में अचानक शिक्षकों की कमी हो गई और बच्चों की पढ़ाई प्रभावित होने लगी। इसी के चलते छात्रों ने आज सड़क पर जाम लगा दिया।

छात्रों का आरोप है कि जिन टीचर्स का ट्रांसफर हुआ है, वो अच्छा पढ़ाते थे, छात्रों के प्रति भी उनका व्यवहार अच्छा था। ऐसे में उन्हें वापस इसी स्कूल में लगाया जाए। छात्रों ने चेतावनी दी कि यदि उनकी मांगें नहीं मानी गईं तो दो दिन बाद तिजारा हाइवे जाम किया जाएगा और मिनी सचिवालय पर धरना दिया जाएगा। छात्र सुबह करीब साढ़े नौ बजे धरने पर बैठ गए। सूचना पर मामले की समझाइश करने तहसीलदार बलवंत सिंह और सदर थाना एएसआई अरुण पहुंचे दो दिन के आश्वासन पर धरना समाप्त कराया गया।

छात्र राजकुमार ने बताया कि 10 जनवरी को इतिहास विषय के शिक्षक मोहर सिंह मीणा का झालावाड़, भूगोल के शिक्षक रामफल यादव का बारां, अंग्रेजी के शिक्षक सत्येंद्र कुमार का झालावाड़, हिंदी की शिक्षिका सुमन गुप्ता और हिंदी साहित्य की शिक्षिका तनु गुप्ता का अलवर जिले की अन्य स्कूलों में ट्रांसफर कर दिया गया है। छात्रों ने बताया कि 12वीं कक्षा के छात्रों के प्रैक्टिकल भी शुरू हो रहे हैं और पांच विषयों के शिक्षकों के एक साथ तबादले से पढ़ाई पूरी तरह प्रभावित हो जाएगी। छात्रों ने यह भी आरोप लगाया कि किसी शिकायत के आधार पर अच्छे शिक्षकों को एक साथ हटाया गया है। तहसीलदार और सदर थाना पुलिस ने छात्रों से ज्ञापन लेकर उनकी मांगों को उच्च अधिकारियों तक पहुंचाने का आश्वासन दिया, जिसके बाद छात्र धरने से उठ गए।

कोटा में अंतर्राज्यीय नकबजनी गिरोह का पर्दाफाश, छह जने गिरफ्तार

- **गिरफ्तार आरोपियों में चोरी का माल खरीदने वाले तीन आरोपी भी हैं, 133 ग्राम सोना, 781 ग्राम चांदी सहित 29 लाख नकद रूपये बरामद**
- **पुलिस ने इस गिरोह से जुड़ी चंबल फर्टिलाइजर एंड केमिकल्स लिमिटेड (सीएफ सीएल) टाउनशिप में दिसंबर 2025 में हुई करोड़ों रुपए की चोरी का भी खुलासा किया**

कोटा, (निसं)। कोटा ग्रामीण पुलिस ने एक बड़े अंतर्राज्यीय नकबजनी गिरोह का पर्दाफाश करते हुए मुख्य आरोपी सहित छह लोगों को गिरफ्तार किया है, पुलिस टीम की कार्रवाई में गिरफ्तार किये गये लोगों में तीन मुख्य नकबजन (चोर) गिरोह के आरोपी हैं एवं जबकि तीन सोने-चांदी के जेवरात खरीदने वाले व्यापारी शमिल हैं। पुलिस ने इस गिरोह से जुड़ी चंबल फर्टिलाइजर एंड केमिकल्स लिमिटेड (सीएफ सीएल) टाउनशिप में दिसंबर 2025 में हुई करोड़ों रुपए की चोरी का भी खुलासा किया है।

सीमलिया थाना इलाके के गढेपान कस्बे में स्थित सीएफसीएल परिसर की टाउनशीप में 13 एवं 14 दिसम्बर 2025 को हुए नकबजनी के दर्ज मामले में पुलिस टीम ने कार्यवाही करते हुए अन्तर्राज्यीय नकबजन गिरोह के मुख्य आरोपी सहित उसके दो साथियों को गिरफ्तार किया, साथ ही चोरी का माल खरीदने के मामले में तीन सोनी को भी गिरफ्तार किया है। पुलिस टीम ने कार्यवाही के दौरान वारदात में प्रयुक्त कार एवं 133 ग्राम सोना, 781 ग्राम चांदी सहित नकद राशि 29 लाख रूपये बरामद की है।

ग्रामीण पुलिस अधीक्षक सुजीत शंकर ने बताया कि 14 व 15 दिसम्बर 2025 को दो फरियादीयों ने सीमलिया थाने मे अलग-अलग रिपोर्ट दी। एक फरियादी नें रिपोर्ट में कहा कि सीएफसीएल गढेपान में मैनेजर के पद पर है और टाउनशिप कॉलोनी में रहता हुं। रिपोर्ट में कहा कि 13 दिसम्बर को परिवार सहित सवाईमाधोपुर गया था, उसके पड़ोसी ने मकान में ताले टूटने की सूचना दी। मकान में चोरी होने की सूचना पर पहुंचा तो सारा सामान अस्त-व्यस्त था, अज्ञात बदमाश अलमारी में रखे नकद, सोने-चांदी के जेवरात चोरी कर ले गये। ग्रामीण एसपी ने बताया कि दूसरे फरियादी ने 15 दिसम्बर को सिमलिया थाने में रिपोर्ट दी। फरियादी ने रिपोर्ट में सोने-चांदी के आभूषण चोरी होने की बात कही। ग्रामीण एसपी ने कहा कि चोरी नकबजनी की वारदात को गंभीरता से लेते हुए

ग्रामीण अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक रामकल्याण मीना के निर्देशन में सिमलिया थानाधिकारी नन्द सिंह एवं डीएसटी प्रभारी राजेन्द्र प्रसाद के नेतृत्व में टीम का गठन किया गया। ग्रामीण एसपी ने बताया कि गठित टीम ने आसपास के सीसीटीवी फुटेज चेक करने पर एक कार को कई बार देखा लेकिन फुटेज क्लियर नहीं थे। इसके बाद खानपुर टोल प्लाजा के आसपास के टोल सीसीटीवी फुटेज चेक किए गए। पुलिस टीम ने 600 किलोमीटर तक की दूरी में लगे करीब 1500 सीसीटीवी फुटैज खंगाले और सीसीटीवी के आधार पर आरोपी कार की पहचान हुई और मुख्य आरोपी सामने आए।

ग्रामीण एसपी ने बताया कि आरोपियों की तलाश में कोटा ग्रामीण पुलिस ने टांडा, धार, राजगढ़, कुक्शी और इंदौर क्षेत्रों में छापेमारी की, टीम ने 15 दिनों तक फल-सब्जी वाहन चालक, मैकेनिक और ढाबा कर्मचारी बनकर सूचनाएं जुटाईं। इसी दौरान पुलिस टीम को इंदौर में मुख्य आरोपी करण भील स्कोडा कार के साथ दिखा, जो चोरी के लिए रेकी कर रहा था। पुलिस ने उसे डिटेन कर गिरफ्तार किया। पूछताछ में आरोपी करण ने संजय, मानसिंह और महेंद्र के साथ मिलकर चोरियां करने की बात कबूली।

ग्रामीण एसपी ने बताया कि चोरी में इस्तेमाल कार बरामद की गई, पकड़े गये आरोपी करण से पूछताछ में सामने आया कि 136 ग्राम सोना भारत सिंह ने इंदौर में 14 लाख में बेचा, बाकी सोना जोबट (अलीराजपुर) के राहुल सोनी और गारबाड़ा (दाहोद) के हार्दिक सोनी को 34 लाख में बेचा, जिसमें से 8 लाख दिए गए और 26 लाख शेष हैं। पुलिस टीम ने कार्यवाही करते हुए करण की निशानदेही पर भारत सिंह मंडलोई और अन सिंह मेहड़ा को भी गिरफ्तार किया। पुलिस ने घटना में प्रयुक्त कार, 134 ग्राम सोना (18 लाख रुपए मूल्य), 781 ग्राम चांदी के आइटम और 9 लाख रुपए नकद बरामद किए, इसके अलावा 20 लाख रुपए जेसीबी फर्म के अकाउंट से रिवर्ट करवाए जा रहे है।

पुलिस टीम ने टाण्डा निवासी मुख्य आरोपी करण, उसके दो साथी काकडकुआं निवासी भारत एवं उकाला निवासी अनसिंह को गिरफ्तार किया। साथ ही चुराये गये सोने के आभूषण खरीदने के मामले में जोबट निवासी राज सोनी, गरबाडा निवासी हार्दिक एवं इन्दौर निवासी संजय सोनी को गिरफ्तार किया है। शेष आरोपियों की तलाश जारी है।

ठगी का आरोपी गिरफ्तार

टोंक, (निसं)। पुलिस ने ऑनलाइन सायबर ठगी करने वाले आरोपी को गिरफ्तार किया है। अति. पुलिस अधीक्षक रतनलाल भार्गव के निर्देशन में उनियारा थानाधिकारी रतन लाल के नेतृत्व में गठित विशेष टीम द्वारा उनियारा क्षेत्र में बढ़ती सायबर ठगी की शिकायतों के बाद ठगों द्वारा मोबाइल में टेलीग्राम चैनल बनाकर अनजान लोगों को अलग-अलग सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर रुपयों का कई गुना मुनाफा करके वापस डालने का झांसा देकर सायबर ठगी करने वाले अपराधी राहुल पुत्र रामजीलाल मीणा निवासी कुण्डिया हाल शिव सज्जन कॉलोनी सवाई माधोपुर रोड को गिरफ्तार किया गया है। पुलिस ने बताया कि आरोपी राहुल मीणा ठगी की राशी अपने दोस्तों व परिचितों के बैंक खातों में कमीशन के आधार पर डलवाता था। आरोपी के कब्जे से दो मोबाइल, एक बैंक पास बुक, चैक बुक, दो एटीएम कार्ड व मोटरसाइकिल जब्त की गई तथा आरोपी को फर्जी खाते व फर्जी मोबाइल सिम कार्ड उपलब्ध करवाने वाले शेष आरोपियों की तलाश की जा रही है। आरोपी द्वारा अब तक की जांच से करीब 7.40 लाख रुपये की सायबर ठगी करना सामने आया है।

नॉनवेज पार्टी मामले में प्रिंसिपल को चार्जशीट मिलेगी

- **राजकीय प्राथमिक स्कूल तालाब की ढाणी हिंगोटिया के प्रिंसिपल को प्रथमदृष्टया दोषी पाया गया**

गंगापुर सिटी, (निसं)। राजकीय प्राथमिक स्कूल तालाब की ढाणी, हिंगोटिया में एक नॉनवेज पार्टी का वीडियो वायरल होने के मामले में नए तथ्य सामने आए हैं। जांच के दौरान स्कूल परिसर की चारदीवारी से सटी सैकड़ों खाली शराब की बोतलें मिली हैं। इस मामले में जांच रिपोर्ट में प्रिंसिपल को प्रथमदृष्टया दोषी पाया गया है। शिक्षा विभाग अब निलंबित प्रिंसिपल को चार्जशीट जारी करने की तैयारी कर रहा है। यह मामला सोमवार को सामने आया था।

आरोप है कि राप्रावि तालाब की ढाणी, हिंगोटिया में स्कूल समय के दौरान बच्चों को छुट्टी देकर कक्षाओं पर ताले लगा दिए गए थे। इसके बाद स्कूल परिसर में रसोइये द्वारा चूल्हे और गैस चूल्हे पर नॉनवेज भोजन पकाया जा रहा था। यह घटना विभागीय नियमों का उल्लंघन है। मामले की गंभीरता को देखते हुए शिक्षा विभाग ने तीन सदस्यीय जांच कमेटी का गठन किया था। जांच टीम मंगलवार को स्कूल पहुंची और मौके का निरीक्षण किया। टीम ने रसोइये इंदरराज सहित ग्रामीणों के बयान दर्ज किए और साक्ष्य जुटाए। जांच के दौरान साक्ष्य मिटाने के प्रयास भी सामने आए, जिसमें नॉनवेज की जगह आलू-गोभी की सब्जी रख दी गई और चूल्हा हटाकर सफाई कर दी गई थी। जांच के दौरान स्कूल परिसर की चारदीवारी से सटी सैकड़ों शराब की खाली बोतलें मिलीं। कमेटी ने सभी तथ्यों के आधार पर अपनी जांच रिपोर्ट उच्चाधिकारियों को सौंप दी है।

सूत्रों के अनुसार, रिपोर्ट में प्रधानाध्यापक को प्रथम दृष्टया दोषी माना गया है। शिक्षा विभाग ने प्रिंसिपल को पहले ही निलंबित कर दिया था और अब एक-दो दिन में चार्जशीट जारी करने की तैयारी है। जिला शिक्षा अधिकारी प्रारंभिक देवीलाल मीणा ने बताया कि जांच कमेटी ने अपनी रिपोर्ट सौंप दी है। प्रधानाध्यापक को पहले ही निलंबित किया जा चुका है और अब उन्हें जांच रिपोर्ट में प्रथम दृष्टया दोषी पाया गया है।

संक्षिप्त

बैंक के बाहर से बाइक चोरी

टोंक। देवली शहर में बैंक ऑफ बडौदा के बाहर से एक मोटरसाईकिल चोरी होने का मामला सामने आया है। जिसके बाद पीड़ित ने अज्ञात चोर के खिलाफ देवली थाने में रिपोर्ट दर्ज कराई है। परिवादी सुंदर लाल मीणा निवासी कासीर, देवली ने बताया कि गत 13 जनवरी को उसने अपनी मोटर साईकिल को बैंक ऑफ बडौदा के सामने स्थित एक खाद–बीज की दुकान पर रखा था, तभी दवाई लेकर वापस बाहर आए तो उनकी बाइक वहां से गायब मिली। आस–पास काफी तलाश करने और पूछताछ करने के बाद भी वाहन का कोई सुराग नहीं मिलने पर उन्होंने चोर के खिलाफ पुलिस में शिकायत दर्ज कराई।

बजरी से भरी एक ट्रैक्टर ट्रॉली जब्त

निवाई। दतवास थाना पुलिस ने अवैध बजरी खनन व परिवहन की रोकथाम को लेकर बजरी से भरे एक ट्रैक्टर-ट्रॉली को जब्त किया है। थानाधिकारी हीरालाल वर्मा ने बताया कि पुलिस अधीक्षक राजेशकुमार मीणा के निर्देशानुसार क्षेत्र में अवैध बजरी खनन व परिवहन की रोकथाम को लेकर अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक रतनलाल भार्गव व पुलिस उपाधीक्षक रवि प्रकाश शर्मा के सुपरविजन में पुलिस की विशेष टीम का गठन किया। टीम द्वारा अवैध बजरी खनन व परिवहन के विरूद्ध कार्रवाई करते हुए मुखबीर की सूचना पर मित्रपुरा रोड पर कोटडा मोड से पहले तन बाढ़ गाँव कलां से अवैध बजरी से भरा एक ट्रेक्टर–ट्रोली को जब्त किया है। उन्होंने बताया कि जब्त ट्रैक्टर–ट्रॉली को थाना परिसर में खड़ा करवा दिया है। पुलिस ने ट्रेलर के चालक व मालिक के विरूद्ध एमएमडीआर एक्ट में मामला दर्ज कर किया है।

बड़ागांव ने गोतोड को हराया

निवाई। बालाजी क्रिकेट क्लब के तत्वाधान में आयोजित क्रिकेट प्रतियोगिता में बुधवार को लीग मैच के दौरान रॉयल रेंजर बडागांव व गोतोड के मध्य हुआ। जिसमें रॉयल रेंजर बडागांव ने जीत दर्ज की। कमेटी के मनराज गुर्जर ने बताया कि मैच में गोतोड ने पहले बल्लेबाजी करते हुए निर्धारित 10 ओवर में 63 रन बनाए। जिसमें सीताराम जाट ने 3 विकेट लिए व अशोक लांगडी ने 2 विकेट लिए। लक्ष्य का पीछा करते हुए रॉयल रेंजर बडागांव ने 5 ओवर में ही जीत दर्ज की। जिसमें राधेश्याम चौधरी ने शानदार बल्लेबाजी करते हुए नाबाद 46 रन बनाए। प्रतियोगिता में राधेश्याम चौधरी मैन ऑफ द मैच बने।

हिंदू सम्मेलन की तैयारी

निवाई। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के शताब्दी वर्ष पर आयोजित हिंदू सम्मेलन की तैयारियों को लेकर दीनदयाल बस्ती शाखा परिसर में जिला सह कार्यवाह सतीश पाटीदार एवं प्रान्त पर्यावरण सह संयोजक रामप्रकाश विजय के सानिध्य में बैठक आयोजित हुई। बैठक में सर्व सम्मती से 1 फरवरी को दीनदयाल बस्ती में स्थित श्याम वाटिका में विराट हिंदू सम्मेलन का आयोजन करने का निर्णय लिया गया।

समक्ष न्यायालय अपर सिविल न्यायाधीश क्रम-01 जयपुर महानगर (द्वितीय), जयपुर
वाद संख्या-55/2025
सुनील शर्मा व अन्य बनाम नगर निगम व अन्य
प्रतिनिधित्व वाद (नोटिस अन्तर्गत आदेश-1 नियम-8 सीपीसी)
वादीगण ने मकान नंबर 1426, पीतलीयों का रास्ता, चौकड़ी विश्वेश्वर जी, वार्ड नंबर 73, जौहरी बाजार, जयपुर के संदर्भ में वादीगण ने एक प्रतिनिधित्व वाद प्रस्तुत किया है जिस कारण सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि यदि कोई भी व्यक्ति उक्त वाद में पक्षकार बनना चाहता है तो वह पेशी 16.01.2026 को प्रात 10.30 बजे इस न्यायालय में उपस्थित होकर पक्षकार के रूप में संयोजित हो सकते है भविष्य में कोई आपत्ति मान्य नहीं होगी।
आदेश आज दिनांक 22.12.2025 को मेरे हस्ताक्षर व न्यायालय की मुद्रा से जारी किया गया है। मोहर
अपर सिविल न्यायाधीश क्रम-01 जयपुर महानगर (द्वितीय) जयपुर

नम्बर मिलाइए
9587884433
सिर्फ एक फोन कॉल पर विज्ञापन घर बैठे बुक करायें।

मनरेगा को कमजोर नही होने दिया जावेगा : विधायक डीसी बैरवा

दौसा। विधायक डीसी बैरवा ने कहा कि कांग्रेस गरीब, मजदूर और ग्रामीणों के हक की लडाई लगातार लडती रहेगी और मनरेगा को कमजोर नहीं होने दिया जाएगा।

- केन्द्र सरकार मनरेगा को कमजोर कर गरीब, निर्धन, मजदूरों का हक का निवाला छीनने का काम कर रही है

दौसा विधायक डीसी बैरवा गुरुवार को मनरेगा बचाओ संग्राम के तहत ग्राम पंचायत भांकरी, जोपाड़ा, कालीपहाडी, कालोता, निमाली, कुंडल, सिंदोली, बडोली एवं तितरवाडा कला सहित अन्य ग्राम पंचायत मुख्यालय पर आयोजित ग्राम–ग्राम जनजागरण अभियान में

दौसा विधायक डीसी बैरवा ने मनरेगा बचाओ संग्राम के तहत ग्राम पंचायत भांकरी, जोपाड़ा आदि गांवों में लोगों को सम्बोधित किया।

उपस्थित ग्रामीणों को सम्बोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि केन्द्र सरकार मनरेगा को कमजोर कर गरीब, निर्धन, मजदूरों का हक का निवाला छीनने का काम कर रही है, जिसे किसी भी सूरत में बर्दास्त नहीं किया जावेगा। उन्होंने कहा कि रोजगार के लिए ग्रामीण क्षेत्रों से ग्रामीणों का लगातार पलायन हो रहा था, उस पलायन को रोकने के लिए कांग्रेस सरकार ने पूरे देश में मनरेगा को शुरु किया था ताकि जरुरतमंद को उसके ही गांव में रोजगार मिल सके तथा अपना परिवार पाल सके। लेकिन केन्द्र सरकार इस योजना में बदलाव कर जरुरतमंद का निवाला छीनने का काम कर रही है। उन्होंने कहा कि मनरेगा से सकारात्मक परिणाम आने के बाद गहलोत सरकार ने शहरी क्षेत्रों में भी रोजगार देने के लिए मनरेगा शुरु की थी, जिसे भी बंद कर दिया गया है। उन्होंने कहा कि केन्द्र सरकार ने मनरेगा का नाम पर बदलकर जी रामजी रख दिया है, कांग्रेस इसका विरोध करे तो वे अफवाह फैलायेगें कि देखो कांग्रेस राम का विरोध कर रही है। उन्होंने ग्रामीणों को आश्वासन दिया कि जब तक मनरेगा शुरु नही होगी कांग्रेस का आन्दोलन जारी रहेगा। विधायक डीसी बैरवा ने रोजगार की गारंटी, जैसे गंभीर मुद्दों को लेकर भाजपा सरकार की जनविरोधी नीतियों के खिलाफ आमजन को जागरूक किया गया।

'सशक्त महिला ही समृद्ध समाज की धूरी'

निवाई। राजकीय महाविद्यालय निवाई एवं कन्या महाविद्यालय निवाई के संयुक्त तत्वावधान में नोडल प्राचार्य डॉ. मीनाक्षी बघेल की अध्यक्षता में राज्य महिला नीति के तहत ग्राम पंचायतों में पारदर्शिता एवं महिला सहभागिता विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया गया। अध्यक्षता कर रहे नोडल प्राचार्य डॉ. मीनाक्षी बघेल ने बताया कि सशक्त महिला ही समृद्ध समाज की धूरी है। मुख्य वक्ता कन्या महाविद्यालय पीपलू के प्रोफेसर विकास नोटियाल ने ग्राम पंचायत में महिलाओं की सहभागिता पर विस्तृत जानकारी साझा करते हुए कहा कि आधी आबादी जब ग्राम पंचायत के अपने दायित्वों को सजग होकर निर्वहन करेगी तभी सशक्त समाज का निर्माण होगा। कार्यक्रम का संचालन करते हुए कन्या प्राचार्य व महिला नीति प्रभारी डॉ. प्रीति जैन ने कहा कि लोकतांत्रिक व्यवस्था की सबसे छोटी इकाई ग्राम पंचायत में महिलाओं की भूमिका अति महत्वपूर्ण है।

पावटा में 21 कुण्डीय महायज्ञ की व्यवस्थाओं पर मंथन

- बैठक में धार्मिक आयोजन की तिथियों, कार्यक्रम की रूपरेखा एवं विभिन्न व्यवस्थाओं को लेकर गहन चर्चा की

पावटा। कस्बा स्थित बाबा भूतनाथ जोहडा धाम मंदिर में आगामी 21 कुण्डीय यज्ञ एवं शिवमहापुराण कथा के भव्य आयोजन को लेकर मंदिर महंत जयराम दास महाराज के सान्निध्य में आयोजक समिति की एक विस्तृत एवं महत्वपूर्ण बैठक आयोजित की गई। बैठक में धार्मिक आयोजन की तिथियों, कार्यक्रम की रूपरेखा एवं विभिन्न व्यवस्थाओं को लेकर गहन चर्चा की गई, ताकि आयोजन को भव्य, सुव्यवस्थित एवं श्रद्धामय वातावरण में संपन्न कराया जा सके।

बैठक के दौरान यज्ञशाला निर्माण, आचार्य एवं विद्वान पंडितों की नियुक्ति, शिवमहापुराण कथा वाचक की व्यवस्था, कलश यात्रा, यज्ञ हवन, प्रसाद वितरण तथा प्रतिदिन होने वाले धार्मिक कार्यक्रमों की रूपरेखा तय की गई। श्रद्धालुओं की सुविधा को ध्यान में रखते हुए पेयजल, विद्युत, प्रकाश व्यवस्था, स्वच्छता, बैठने की व्यवस्था, सुरक्षा एवं पार्किंग जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर भी विस्तार से विचार–विमर्श किया गया।

आयोजक समिति ने आयोजन के सफल संचालन के लिए अलग–अलग समितियों का गठन कर सदस्यों को जिम्मेदारियां सौंपी। साथ ही यह निर्णय लिया गया कि आयोजन पूरी तरह धार्मिक परंपराओं एवं मर्यादाओं के अनुरूप शांतिपूर्ण ढंग से संपन्न कराया जाएगा। बैठक में उपस्थित विमल गर्ग, मुकेश गोयल, भीम चौधरी, विनय गोयल, दिनेश शर्मा, रामोतार शर्मा, बंटी शर्मा, मामराज शर्मा, विकास, प्रमोद, काल्लू प्रजापत, गोलू, आकाश बोहरा, धर्मेंद्र बटवाल सहित कमेटी के लोगों व जगन चौधरी, किशन ओला, महेंद्र ओला, महेश थानेदार, सुरेश शर्मा, गजानंद बोहरा सहित गणमान्य नागरिकों एवं समाजसेवियों ने आयोजन को सफल बनाने के लिए तन–मन–धन से सहयोग करने का आश्वासन दिया। अंत में समिति द्वारा क्षेत्रवासियों से अधिक से अधिक संख्या में सहभागिता कर पुण्य लाभ अर्जित करने की अपील की गई। बैठक में समिति पदाधिकारी, धर्मप्रेमी नागरिक एवं ग्रामीणजन उपस्थित रहे।

दौसा में श्याम मंदिर चरणधाम का पाटोत्सव शुरू

- मंगल कलश यात्रा और श्रीमद्भागवत कथा में शामिल हुए श्रद्धालु
- यात्रा में बड़ी संख्या में महिलाएं केसरिया रंग की साड़ी में कलश लिए उपस्थित थीं, जबकि पुरुष सफेद कुर्ता-पजामा में सिर पर रामायण की पोथी लिए चल रहे थे

दौसा। श्याम मंदिर चरणधाम में गुरुवार से 25वां रजत जयंती पाट महोत्सव का शुभारंभ हुआ। इस अवसर पर सहजनाथ महादेव से श्याम मंदिर तक भव्य मंगल कलश एवं रामायण शोभायात्रा निकाली गई।कलश यात्रा में गाजे–बाजे और शाही लवाजमे के साथ यात्रा लालसोट रोड, बरकत तिराहा, गणेश मंदिर, नया कटला, मानगंज, मंडी रोड होते हुए श्याम मंदिर पहुंची। लोगों ने जगह–जगह कलश यात्रा का स्वागत किया। यात्रा में बड़ी संख्या में महिलाएं केसरिया रंग की साड़ी में कलश लिए उपस्थित थीं, जबकि पुरुष सफेद कुर्ता–पजामा में सिर पर रामायण की पोथी लिए चल रहे थे। यात्रा में श्याम प्रभु का भव्य रथ भी चलाया गया। मंदिर परिसर और श्याम बगीची क्षेत्र को आकर्षक रोशनी और तोरण द्वारों से सजाया गया। नए कटला से श्याम मंदिर तक कुल 25 स्वागत द्वार लगाए गए। भागवत कथा का शुभारंभ पाटोत्सव में श्रीमद्भागवत कथा का शुभारंभ हुआ। कथा व्यास देवी प्रतिभा श्रीधाम वृंदावन ने कहा कि भागवत कथा का श्रवण करने से सभी तीर्थों का फल प्राप्त होता है और कलयुग में इससे मोक्ष की प्राप्ति संभव है। कथा के मुख्य यजमान सत्यनारायण और हितेश जौपाडा ने पूजन किया।

महोत्सव के दौरान 18 जनवरी को दोपहर 3 बजे विराट भजन "अमृत रस गंगा" का आयोजन होगा, जिसमें संजय पारीक, महेश परमार, दीक्षा राठौड़, राजू खंडेलवाल और अजय शर्मा प्रस्तुति देंगे। बसंत पंचमी को श्याम प्रभु का विशेष अभिषेक और दिव्य पोशाक धारण कराई जाएगी। 24 जनवरी से 108 आसनों पर रामचरित मानस अखंड पाठ शुरू होगा, जिसके मुख्य यजमान नरेंद्र कुमार और राजेंद्र कुमार अमेरिया होंगे। 25 जनवरी को संत आशीर्वचन का आयोजन होगा। महोत्सव का समापन हवन की पूर्णाहुति और भंडारे के साथ किया जाएगा। स्वागत अध्यक्ष विजय कुमार और संजय कुमार मित्तल ने बताया कि महोत्सव में श्रद्धालुओं की उपस्थिति और धार्मिक कार्यक्रमों का आयोजन श्रद्धा और उत्साह के साथ किया जाएगा।

कृषक भ्रमण दल रवाना

भरतपुर (निस)। कृषि विस्तार सुधार कार्यक्रम (आत्मा) परियोजना के अन्तर्गत वर्ष 2025–26 के लिए कृषि उद्यमों के श्रेष्ठ व उत्कृष्ट कार्यों को देखने के लिए 05 दिवसीय 02 (महिला एवं पुरुष) अन्तरा–राज्य कृषक भ्रमण दल को गृह राज्य मंत्री जवाहर सिंह बेढ़म ने हरी झण्डी दिखाकर कृषि परिसर से रवाना किया गया। गृह राज्य मंत्री ने कहा कि भ्रमण दल के किसानों को राज्य सरकार द्वारा कृषक हित में किये जा रहे नवाचारों को देखने का अवसर मिलेगा। कृषि में अनुसंधान कार्यक्रमों, प्राकृतिक एवं जैविक खेती, हाइटेक एग्रीकल्चर, बागवानी, जल का कुशल प्रबन्धन, पशु एवं पशुशाला प्रबन्धन को मौके पर जाकर देख सकेंगे। उन्होंने कृषक दल को बधाई देते हुए कहा कि भ्रमण के दौरान जो भी जानकारी मिले उसे स्वयं भी अपनाये तथा अन्य किसानों को प्रेरित करें। आत्मा परियोजना उप निदेशक डॉ तुलसी सैनी ने बताया कि जिले की सभी पंचायत समितियों से चयनित लगभग 100 महिला एवं पुरुष कृषि में नये नवाचारों से ज्ञान अर्जित कर अपने एवं क्षेत्र के किसानों को इस संबंध में बतायेंगे और उत्पादन में आत्म निर्भरता लायेंगे। इस दौरान जिला अध्यक्ष शिवानी दायमा, कृषि विभाग के अतिरिक्त निदेशक कृषि देशराज सिंह, संयुक्त निदेशक उद्यान योगेश कुमार शर्मा, संयुक्त निदेशक कृषि राधेश्याम मीना, उप निदेशक उद्यान जनकराज मीना, उप निदेशक कृषि डॉ हब्बल सिंह, व भ्रमण प्रभारी/सह प्रभारी जीतेन्द्र सिंह फौजदार आदि मौजूद रहे।

'राजस्थान के उचित मूल्य दुकानदारों को सम्मानजक मासिक मानदेय दिया जाए'

भरतपुर (निस)। ऑल इंडिया फेयर प्राइस शॉप डीलर्स फेडरेशन इकाई राजस्थान के भरतपुर संभाग अध्यक्ष गौरव सोनी के नेतृत्व में भरतपुर जिले के राशन डीलरों ने गृह राज्य मंत्री जवाहर सिंह बेढ़म को यूआईटी ऑडिटोरियम में बजट में राशन डीलरों को 30000 रुपया मासिक मानदेय देने के लिए ज्ञापन सौंपा।

सोनी ने बताया कि राजस्थान के लगभग 27000 उचित मूल्य दुकानदार पिछले कई वर्षों से लगातार संघर्षरत है लेकिन उसका अभी तक कोई समाधान नहीं किया गया है।

इसलिए उन्होंने मुख्यमंत्री से निवेदन किया है कि वर्तमान में राशन डीलरों द्वारा राज्य सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं को जनता तक पहुँचाने में राशन डीलर अपना अहम योगदान देते रहें हैं यहाँ तक कि कोरोना काल में भी सरकार की योजना घर–घर राशन वितरण में भी अपनी जान की परवाह किये बगैर लोगों को मुफ्त राशन मुहैया करवाया था जिसमें हमारे कई राशन डीलर शहीद भी हुए हैं।

इसलिए मुख्यमंत्री से विशेष आग्रह है कि हमारी मांग को स्वीकार कर बजट में शामिल करते हुए, गुजरात राज्य के तर्ज पर राजस्थान में भी 30000रू मासिक

राशन डीलरों ने मानदेय की मांग को लेकर गृह राज्य मंत्री जवाहर सिंह बेढ़म को ज्ञापन सौंपा।

- ऑल इंडिया फेयर प्राइस शॉप डीलर्स फेडरेशन इकाई राजस्थान के भरतपुर संभाग अध्यक्ष गौरव सोनी के नेतृत्व में भरतपुर जिले के राशन डीलरों ने गृह राज्य मंत्री जवाहर सिंह बेढ़म को यूआईटी ऑडिटोरियम में बजट में राशन डीलरों को 30000 रुपया मासिक मानदेय देने के लिए ज्ञापन सौंपा।

मानदेय देने की घोषणा करेंगे ताकि प्रदेश के राशन डीलरों की लंबे समय से चली आ रही मांग पूरी हो सके जो कि प्रदेश में एक ऐतिहासिक कार्य होगा। हमें आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है।

निःशुल्क लाइब्रेरी के लिए मकान दिया

निवाई। उप प्राचार्य कन्हैयालाल मीणा ने अपने वातानुकूलित मकान को गांव के बच्चों के लिए निःशुल्क लाइब्रेरी के लिए युवाओं को समर्पित किया है। कन्हैयालाल मीणा जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान टोंक में उप प्राचार्य के पद पर कार्यरत है।

उनके बड़े भाई मोहनलाल मीणा भी जयपुर में डॉक्टर के पद पर कार्यरत है तथा सबसे बड़ा भाई अमरचंद मीणा भी शारीरिक शिक्षक है। उप प्राचार्य कन्हैयालाल मीणा ने कोरोना काल में छात्रों का किराया माफ कर एक मिसाल पेश की थी। मीणा के सानिध्य में इसी सौ से अधिक शिक्षक राजकीय सेवा में चयन हो चुके है। उन्होंने जनहित सर्वोपरि कार्य करते हुए मकर संक्रांति के पावन पर्व पर कन्हैयालाल मीणा ने अपने गांव अहमदपुरा चौकी के वातानुकूलित मकान को गांव के ग्रामीण बच्चों के लिए निःशुल्क लाइब्रेरी के लिए युवाओं को समर्पित किया है।

राजस्थान आवासन मण्डल वृत्त– प्रथम, प्रताप नगर, जयपुर
क्रमांक: 9467 **जाहिर आम सूचना** दिनांक 01.01.2026
राजस्थान आवासन मण्डल की प्रताप नगर, सांगानेर योजना में आवास संख्या 261/459 (EWS), (एरिया 47.625 वर्गमीटर) प्रताप नगर, सांगानेर का आवंटन श्रीमती पप्पी पत्नी श्री पूरन मल गुप्ता को किया जाकर आवंटन पत्र क्रमांक 4302 दिनांक 29.11.2004 एवं संशोधित आवंटन पत्र क्रमांक 981 दिनांक 21.04.2005 को जारी किया गया। श्रीमती लक्ष्मी सोमानी पत्नी श्री किशन सोमानी के पक्ष में उक्त आवास का नियमितिकरण पत्र क्रमांक 933/1161 दिनांक 14.05.2013 के द्वारा किया गया। श्रीमती लक्ष्मी सोमानी के पक्ष में उक्त आवास के पंजीयन प्रपत्र दिनांक 24.06.2013 को उप पंजीयक सांगानेर-प्रथम, जयपुर के यहां पंजीकृत करवाये गये। श्रीमती लक्ष्मी सोमानी द्वारा श्री मगन जेठवानी पुत्र श्री लीलाराम जेठवानी को दिनांक 08.05.2019 को मुख्त्यारनामा आम धारक नियुक्त किया गया। श्री मगन जेठवानी द्वारा मुख्त्यारनामा आम की हैसियत से उक्त आवास को दिनांक 13.06.2019 के द्वारा श्रीमती लक्ष्मी देवी मंगल पत्नी श्री अनिल कुमार मंगल को विक्रय कर उप पंजीयक सांगानेर- प्रथम, जयपुर के यहां विक्रय पत्र पंजीकृत करवाया गया। श्रीमती लक्ष्मी देवी मंगल द्वारा उक्त आवास को दिनांक 14.05.2025 के द्वारा 1. कृष्ण कुमार बंसल एवं 2. श्री श्याम बंसल पुत्रान् श्री ओम प्रकाश बंसल को विक्रय कर उप पंजीयक द्वादश, जयपुर के यहां विक्रय पत्र का पंजीकृत करवाया गया। क्रेता/क्रेती 1. कृष्ण कुमार बंसल एवं 2. श्री श्याम बंसल पुत्रान् श्री ओम प्रकाश बंसल द्वारा आवासन मण्डल में उक्त आवास में अपना नाम मण्डल रिकॉर्ड में दर्ज कराने हेतु आवेदन पत्र प्रस्तुत किया गया है। अतः उक्त आवास के हस्तान्तरण बाबत किसी व्यक्ति/पक्षकार को कोई आपत्ति हो तो अधोहस्ताक्षर कर्ता के कार्यालय में 7 दिवस में अपनी आपत्ति प्रस्तुत करें अन्यथा यह मानते हुए की मण्डल रिकॉर्ड में नाम दर्ज करने में किसी को कोई आपत्ति नहीं है. 1.कृष्ण कुमार बंसल एवं 2. श्री श्याम बंसल पुत्रान् श्री ओमप्रकाश बंसल का नाम मण्डल रिकॉर्ड में दर्ज कर दिया जावेगा।
संपदा प्रबंधक,वृत्त प्रथम, राज. आवा. मण्डल, जयपुर

नाम परिवर्तन

मै सुनीता अहलावत पत्नी श्री कंवर सिंह अहलावत निवासी-ए-1, रोड नं. 1, गणपति नगर रेलवे कॉलोनी, रेलवे स्टेशन रोड, जयपुर। मेरी पुत्री के शैक्षणिक दस्तावेजों में मेरा नाम सुनीता है जो कि सही है। अत भविष्य में मुझे सुनीता अहलावत नाम से ही जाना पहचाना जाए।

I have changed my daughter name from Aishwarya Rishi to Aarahvini S. Saxena for all purpose in future. Rishi Saxena R/o F-31, Ram Path Shyam Nagar Jaipur- 302019

I LILA RAM father of Service No JC425064K RANK NB/SUB HARI SINGH YADAV Resident of Vill Rampura,Post Khera,Teh Bansur,Distt Alwar,Raj. Pin 301402. my name LEELA RAM Wrongly Recorded in my Son military Records. As par Aadhaar card my correct name is LILA RAM.affidavit No CB230819.

I SANTRA mother of Service No JC425064K RANK NB/SUB HARI SINGH YADAV Resident of Vill Rampura,Post Khera,Teh Bansur,Distt Alwar,Raj. Pin 301402. my name SANTRA DEVI Wrongly Recorded in my Son military Records. As par Aadhaar card my correct name is SANTRA.affidavit No CB230818.

I RAMKALA Wife of Service No JC425064K RANK NB/SUB HARI SINGH YADAV Resident of Vill Rampura,Post Khera,Teh Bansur,Distt Alwar,Raj. Pin 301402. my name RAM KALA Wrongly Recorded in my Husband military Records. As par Aadhaar card my correct name is RAMKALA.affidavit No CB230820.

I REENA YADAV Daughter of Service No JC425064K RANK NB/SUB HARI SINGH YADAV Resident of Vill Rampura,Post Khera,Teh Bansur,Distt Alwar,Raj. Pin 301402. my name RINA BAI YADAV Wrongly Recorded in my Father military Records. As par Aadhar card my correct name is REENA YADAV.affidavit No CB230821.

I have changed my name NAGMA BAIG W/O AKHTAR BEAG TO "NAGMA W/O AKHTAR BAIG". In future i will be known as Above name Nagma. Address:- A-99, SUMER KARAN JI KA RASTA, BABU KA TIBA, RAMGANJ, JAIPUR, RAJASTHAN

I have changed me and my Father name MO. WASIM AND MO. SHARIF TO "MOHAMMED WASIM AND MOHAMMED SHARIF". In future we will be known as Above names Mohammed Wasim Address:- 1100, HIRAN WALO KA MOHALLA, GHAT GATE, JAIPUR, RAJASTHAN

आम सूचना सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि मेरे मुवक्किल मोहम्मद हजरत अली खान पुत्र श्री इनाम अली, निवासी मकान नंबर 12-बी, एम.के. विहार विस्तार, नाई की थडी, रामगढ रोड, लालवास, जयपुर ने अपने पुत्र मोहम्मद शावेज अली जो कि उनके कहने में नहीं हैं एवं उनसे बदतमीजी करता है इसलिए इनको अपनी चल व अचल संपत्ति से बेदखल कर अपने सभी संबंध समाप्त कर लिये है एवं भविष्य में उसका मेरे मुवक्किल से कोई वास्ता नहीं रहा है, उसके किसी भी कृत्य के लिए मेरा मुवक्किल कतई जिम्मेदार नहीं रहेगा।
दिनांक-15.01.2026 (अरशद खान), एडवोकेट
मो.नं. 9351935379

प्रपत्र संख्या 7
(देखिये नियम 21)
कार्यालय सहायक आयुक्त (प्रथम) देवस्थान विभाग, जयपुर
राजस्थान सार्वजनिक प्रन्यास अधिनियम 1959 की धारा 18 (2) के अधीन नोटिस
समस्त सम्बन्धित व्यक्तियों को
मुकदमा नम्बर DEV/JAIPUR-I/TRUST/2025/1165
चूंकि प्रार्थी श्री कैलाश कुमार बिडसर पुत्र श्री गोविन्द राम बिडसर निवासी 41, अल्पना कॉलोनी, खातीपुरा रोड, झोटवाडा, जयपुर ने राजस्थान सार्वजनिक प्रन्यास अधिनियम 1959 की धारा 17(1) के अन्तर्गत गांधी उद्योग शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान समिति, कार्यालय पता-किशनगढ रेनवाल, जिला जयपुर राजस्थान के सम्बन्ध में अग्रिम जांच किये जाने के लिए आवेदन पत्र दिया है।
अतएवं धारा 18 की उपधारा (2) द्वारा प्रदत्त शक्तियों के प्रयोग में उपर्युक्त प्रन्यास जिसकी जांच की जा रही है में हित रखने वाले समस्त व्यक्तियों के नाम, व्यापक जानकारी के लिए यह नोटिस प्रकाशित किया जाता है कि वे इस नोटिस के जारी होने की तारीख से साठ दिन के भीतर उक्त प्रन्यास के सम्बन्ध में आपत्तियां, यदि कोई हो प्रस्तुत करें।
और यह सूचित किया जाता है कि यदि उपरोक्त निर्दिष्ट अवधि के भीतर कोई आपत्तियां नहीं की गई तो उक्त आवेदन पत्र निर्धारित रीति से निर्णित किया जावेगा तथा जांच ग्रसित मामले में निष्कर्ष अभिलिखित किया जावेगा।
मोहर अदालत
सहायक आयुक्त (प्रथम)
देवस्थान विभाग, जयपुर

हेतुक दर्शित करने के लिए सूचना
राजस्थान किराया नियंत्रण अधिनियम 2001 के अध्याय-5 में किराए के पुनरीक्षण एवं बेदखली बाबत प्रार्थना-पत्र
न्यायालय-किराया अधिकरण जयपुर महानगर (द्वितीय) (राज.)
निरंजन सुकलेचा विरूद्ध मोहनलाल अर्जी संख्या-6/22
नाम मोहन लाल जैन पुत्र श्री सिताब चन्द जैन मालिक प्रोपराईटर आशा पब्लिशिंग हाउस निवासी 1077, सुकलेचा भवन, चौडा रास्ता, अमर जैन हॉस्पिटल के पास, जयपुर दूसरा पता - मं.नं. 617, सेक्टर-4, जवाहर नगर, दादाबाडी के पास, जयपुर।
प्रार्थी ने आपके विरूद्ध किराये के पुनरीक्षण/बेदखली के लिए राजस्थान किराया नियंत्रण अधिनियम 2001 के तहत एक अर्जी प्रस्तुत की है जो पंजीयन कर ली गई है। आपको इस न्यायालय में तारीख 16.01.2026 को...बजे उक्त अर्जी का उत्तर देने के लिए उपसंजात (हाजिर) होने के लिए चेतावनी दी जाती है।
आपको सूचित किया जाता है कि यदि आप ऊपर बताई गई तारीख को इस न्यायालय में उपसंजात नहीं होंगे तो वाद की सुनवाई और उसका निपटारा आपकी अनुपस्थिति में किया जाएगा।
नोटिस आज दिनांक 13.01.2026 को मेरे हस्ताक्षर और न्यायालय की मुद्रा से जारी किया गया है।
मोहर अदालत
आज्ञा से-रीडर
किराया अधिकरण
जयपुर महानगर द्वितीय, राज.

राजस्थान आवासन मण्डल वृत्त– प्रथम, प्रताप नगर, जयपुर
क्रमांक: 9469 **जाहिर आम सूचना** दिनांक 01.01.2026
राजस्थान आवासन मण्डल की प्रताप नगर, सांगानेर योजना में आवास संख्या 261/458 (EWS), (एरिया 47.625 वर्गमीटर) प्रताप नगर, सांगानेर का आवंटन श्री नानग राम बंजारा पुत्र श्री कालूराम बंजारा को किया जाकर आवंटन पत्र क्रमांक 5900 दिनांक 17.10.2003 को जारी किया गया। श्रीमती मिथिलेश माथुर पत्नी श्री पुरुषोत्तम नारायण माथुर के पक्ष में उक्त आवास का नियमितिकरण पत्र क्रमांक 263 दिनांक 21.06.2019 के द्वारा किया गया। श्रीमती मिथिलेश माथुर के पक्ष में उक्त आवास के पंजीयन प्रपत्र दिनांक 16.06.2023 को उप पंजीयक सांगानेर-प्रथम, जयपुर के यहां पंजीकृत करवाये गये। श्रीमती मिथिलेश माथुर द्वारा मैसर्स देवांश बिल्ड होम्स प्रो. मुकेश कुमार गुप्ता पुत्र श्री लल्लू प्रसाद गुप्ता को दिनांक 07.07.2023 को मुख्त्यारनामा आम धारक नियुक्त किया गया। मैसर्स देवांश बिल्ड होम्स प्रो. मुकेश कुमार गुप्ता द्वारा मुख्त्यारनामा आम की हैसियत से उक्त आवास को दिनांक 14.07.2023 के द्वारा श्रीमती मनीषा पत्नी श्री कृष्ण कुमार अग्रवाल को विक्रय कर उप पंजीयक सांगानेर-प्रथम, जयपुर के यहां विक्रय पत्र पंजीकृत करवाया गया। श्रीमती मनीषा द्वारा उक्त आवास को दिनांक 06.09.2025 के द्वारा 1 श्री ओम प्रकाश अग्रवाल पुत्र श्री सीताराम अग्रवाल एवं 2. श्री रजत बंसल पुत्र श्री ओम प्रकाश बंसल को विक्रय कर उप पंजीयक द्वादश, जयपुर के यहां विक्रय पत्र का पंजीकृत करवाया गया। क्रेता/क्रेती 1. श्री ओम प्रकाश अग्रवाल पुत्र श्री सीताराम अग्रवाल एवं 2 श्री रजत बंसल पुत्र श्री ओम प्रकाश बंसल द्वारा आवासन मण्डल में उक्त आवास में अपना नाम मण्डल रिकॉर्ड में दर्ज कराने हेतु आवेदन पत्र प्रस्तुत किया गया है। अंतः उक्त आवास के हस्तान्तरण बाबत किसी व्यक्ति/पक्षकार को कोई आपत्ति हो तो अधोहस्ताक्षर कर्ता के कार्यालय में 7 दिवस में अपनी आपत्तिप्रस्तुत करें अन्यथा यह मानते हुए की मण्डल रिकॉर्ड में नाम दर्ज करने में किसीको कोई आपत्ति नहीं है 1 श्री ओम प्रकाश अग्रवाल पुत्र श्री सीताराम अग्रवाल एवं 2. श्री रजत बंसल पुत्र श्री ओम प्रकाश बंसल का नाम मण्डल रिकॉर्ड में दर्ज कर दिया जावेगा।
संपदा प्रबंधक,वृत्त प्रथम, राज. आवा. मण्डल, जयपुर

नाम संशोधन

मैं रामनरेश पुत्र मलखान निवासी तेसगांव तहसील नादौती जिला करौली,राजस्थान सशपथ बयान करता हूं कि मेरी माता जी का नाम मेरे पिताजी स्व. श्री मलखान के आर्मी रिकॉर्ड में कौशला (KUSHALA) एवं उनकी जन्मतिथि 27.10.1945 गलत दर्ज है जबकि मेरी माताजी के आधार कार्ड, जन आधार कार्ड, जन्म प्रमाण पत्र आदि दस्तावेजों में नाम कौश्यला एवं उनकी जन्मतिथि 1.1.1948 सही दर्ज है। अतः भविष्य में मेरी माताजी को नाम कौश्यला (KAUSHYLA) एवं जन्मतिथि 1.1.1948 से जाना जावे।

खोया पाया

मेरे खरीदशुदा प्लाट नं.11, शबीना विहार-1, खोह नागोरियान, जिला जयपुर राजस्थान का मूल आवंटन पत्र, रसीद, साईट प्लान दिनांक 10.01.2026 को ईदगाह, दिल्ली बाईपास रोड, जयपुर में कहीं गुम हो गये है मिलने पर सूचित करें। अब्दुल नदीम, मो.नं. 9928415003

मेरा फ्लैट नं. एल.ए.-605 प्रताप अपार्टमेंट, प्रताप नगर, सांगानेर जयपुर का मूल भौतिक कब्जा पत्र कहीं गुम हो गया है। मिलने पर संपर्क करें। AVNEET KAVR -8824620800

मैं श्रीराम कुमावत पुत्र श्री केशाराम जाति कुमावत दांतारामगढ जिला सीकर द्वारा अपंजीकृत वैचान पत्र के आधार पर श्री इब्राहीम खां मो. फजलूदीन पुत्रान श्री आमीन मोहम्मद किशनगढ रेणवाल के पट्टे को हमारे द्वारा 11.05.2018 को क्रय किया गया था उक्त पट्टा 26.04.1952 का बना हुआ है जो गुम हो गया है मिलने पर संपर्क- 9799181939

मेरे प्लाट नं. 10 कृष्णा सरोवर फस्ट शिकारपुर सांगानेर जयपुर द्वारा जारी मूल आवंटन पत्र, साइड प्लान रसीद कहीं गुम हो गया मिलने पर संपर्क करें रणजीत यादव पुत्र श्री प्रभु यादव- 9024055086

जयपुर विकास प्राधिकरण, जयपुर
रामकिशोर व्यास भवन, इन्दिरा सर्किल, जवाहर लाल नेहरू मार्ग, जयपुर-302004
क्रमांक:F-JDA/PRN-South/2526/D-19
आम सूचना
आवेदक द्वारा ऑनलाईन आवेदन क्रमांक 261701 दिनांक 14.10.2025 को निम्नांकित भूखण्ड का Change in Land Use (Residential to Commercial) जारी करने हेतु आवेदन प्रस्तुत किये गये है

क्र. सं.	आवेदक का नाम	मूल आवंटी लीजधारक का नाम	भूखण्ड संख्या	भूखण्ड क्षेत्रफल	गृ.नि.स.स./ निजी खातेदारी/ जविप्रा योजना	योजना का नाम	सेवा जिसके लिए आवेदन किया गया	कार्यवाही हेतु प्रस्तुत दस्तावेज
1	Shailendra Banjara S/o Jagdish Prasad Banjara	श्री शैलेन्द्र बंजरा पुत्र श्री जगदीश प्रसाद बंजरा	A/16/1	165.55SQ YARD	Cooperative	VARUN COLONY PRN Sector/ Block	Change in Land Use (Residential to Commercial)	डीजीपीएस सर्वे गुगल प्लान जोनल प्लान-10 मास्टर प्लान 2011 एवं मास्टर प्लान 2025 एवं पूर्व में जारी लीजडीड के आधार पर

उक्त भूखण्ड का आवेदक के पक्ष में Change in Land Use (Residential to Commercial) जारी करने पर किसी व्यक्ति, वारिस एवं संस्था को आपत्ति हो तो मय साक्ष्य के इस सूचना की प्रकाशन तिथि से 7 दिवस के भीतर jda.rajasthan.gov.in पर जाकर Objection module के माध्यम से आपत्ति Online सबमिट करें अन्यथा आपत्ति प्रस्तुत नहीं करने की दशा में उक्त भूखण्ड की नियमानुसार कार्यवाही कर दी जावेगी।।
उपायुक्त, जविप्रा, पीएन-दक्षिण-जोन

DEPARTMENT OF VISUAL ARTS, UCSSH
MOHANLAL SUKHADIA UNIVERSITY, UDAIPUR
Email: visualartucssh@gmail.com Website: www.mlsu.ac.in
NOTICE INVITING BID
No. UCSSH/VA/MLSU/2026/8627 Date 13.01.2026
Online bids are invited under RUSA 2.0 for the procurement of *ICT items, Cameras with accessories, Software, and Air Conditioners* (total estimated cost: ₹24.00 lakhs) up to 06:00 PM on 26.01.2026. Other details can be downloaded from the website shttps://sppp.rajasthan.gov.in, https://eproc.rajasthan.gov.in and www.mlsu.ac.in

NIB Code & UBN NO:	
SUU2526A0056	SUU2526GLOB00127

Head, Department of Visual Arts,UCSSH, MLSU

AJMER VIDYUT VITRAN NIGAM LIMITED
Corporate Identification Number [CIN] – U40109RJ2000SGC016482
Registered office – VidyutBhawan, Panchsheel Nagar, Makarwali Road, Ajmer -305004
CHIEF ENGINEER (AJMER ZONE) OLD POWER HOUSE,HATHI BHATA,JAIPUR ROAD, AJMER
Phone No.0145-2429196, Fax:0145-2626765, E-Mail- ZCEAJMERAVVNL2024@GMAIL.COM
क्र. :- अ.वि.वि.नि.लि./मु.अ.(अ.सं.)/उ.नि.का./जांच/पत्रावली/प्रे. दिनांक :-
सार्वजनिक सूचना
"यह है कि श्री मनोज श्रीवास्तव पुत्र श्री वरवीर प्रकाश श्रीवास्तव, कनिष्ठ अभियंता, कार्यालय सहायक अभियंता (डी–I), अविविनिलि अजमेर स्थायी निवासी बी–76, सेठी कोलोनी, जयपुर को सूचित किया जाता है कि आप कार्यालय से बिना सूचना/ बिना अवकाश स्वीकृति के ड्यूटी से अनुपस्थित चल रहे है आपके विरूद्ध पूर्ववर्ती राजस्थान राज्य विद्युत मण्डल के कर्मचारी वर्गीकरण, नियन्त्रण एवं अपील विनियम–1962 (निगम द्वारा अंगीकृत) के विनियम 7 के तहत अनुशासनात्मक कार्यवाही जारी है। आपको अंतिम अवसर प्रदान किया जाता है। यदि आप 07 दिवस के भीतर कार्यालय में उपस्थित नहीं होते अथवा प्रत्युत्तर प्रस्तुत नहीं करते है तो यह माना जावेगा कि आप निगम सेवा में कार्य करने के इच्छुक नही है। ऐसी स्थिति में एक पक्षीय कार्यवाही करते हुये आपके विरूद्ध अनुशासनात्मक कार्यवाही पूर्ण करते हुये सेवा बर्खास्तगी संबंधी अग्रिम कार्यवाही अमल में लायी जावेगी।"
राज.संवाद/सी/25/17670
मुख्य अभियंता (अ./सं.)
अ.वि.वि.नि.लि. अजमेर

सार्वजनिक नोटिस

जामनगर के चतुर्थ अतिरिक्त जिला न्यायालय के समक्ष (श्री एम.सी. वेमुला साहब का न्यायालय) जामनगर
एम.ए.सी.पी. संख्या 212/2019
मृतक परमार खीमा बिजल की वारिस
मंजूबेन खीमाभाई परमार,
शंकर टेकरी, जामनगर की निवासी है।.................................आवेदक
खिलाफ
१. टवेरा कार क्रमांक RJ-45-TA-0150
अशोक गजानंद, उ.वि. वयस्क, व्यवसाय: यात्रा,पुनः। हाथोज
ता.आमेर, जयपुर राजस्थान.................................विपरीत संख्या 1
याचिकाकर्ता बनाम श्री डी.ए. जीवराजानी।
उपरोक्त प्रतिवादी संख्या 1 को सूचित किया जाता है कि उपरोक्त आवेदक ने मोटर वाहन अधिनियम की धारा 166 के अंतर्गत आवेदकों को हुई चोटों के लिए 6,00,000/- रुपये के मुआवजे की वसूली हेतु इस न्यायाधिकरण के समक्ष एक आवेदन दायर किया है। और उपरोक्त आवेदक ने आपके विरुद्ध इस न्यायालय में एक आवेदन दायर किया है। अतः आपको निर्देशित किया जाता है कि आप उक्त आवेदन के प्रत्युत्तर में अपने बचाव के लिए लिखित साक्ष्य सहित, जिस पर आपका बचाव आधारित है, इस न्यायाधिकरण के समक्ष 30/01/2026 को प्रातः 11:00 बजे उपस्थित हों। आपको सूचित किया जाता है कि यदि आप उक्त अवधि के दौरान अनुपस्थित रहते हैं, तो आपकी अनुपस्थिति में उचित कार्यवाही की जाएगी।
यह आदेश मेरे हस्ताक्षर एवं न्यायालय की मुहर से दिनांक 13-01-2026 को दिया गया
तैयारी करने वाला (एम. ए. भट्ट) सहायक
प्रतियोगी (के.बी. अभलाणी) अधिवक्ता
आदेश से (ए. यु. काजी) रजिस्ट्रार- जिला न्यायालय, जामनगर

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर
उच्च माध्यमिक 2026 स्वयंपाठी परीक्षार्थियों की प्रायोगिक परीक्षा बाबत्
उच्च माध्यमिक 2026 स्वयंपाठी परीक्षार्थियों की प्रायोगिक परीक्षाऐं दिनांक 25 से 31 जनवरी 2026 तक निर्धारित केन्द्रों पर सम्पादित होंगी। प्रवेश–पत्र दिनांक 20.01.2026 से ऑनलाईन उपलब्ध होंगे, संबंधित परीक्षार्थी बोर्ड की वेबसाईट www.rajeduboard.rajasthan.gov.in पर संबंधित लिंक–Private Student Practical Exam 2026 Admit Card पर क्लिक कर अपना जिला व नाम दर्ज कर, अपने नामांक, परीक्षा केन्द्र व परीक्षा तिथि की जानकारी/प्रवेश–पत्र डाउनलोड कर परीक्षा में प्रविष्ठ होवें। परीक्षा के दौरान सभी परीक्षार्थी अपनी पहचान सुनिश्चित करने के लिये कोई भी फोटोयुक्त पहचान पत्र साथ ले जावे । निर्धारित तिथि पर परीक्षा हेतु उपस्थित नहीं होने पर परीक्षार्थी को अनुपस्थित मानकर परिणाम घोषित कर दिया जायेगा । परीक्षार्थी प्रायोगिक परीक्षा नियंत्रण कक्ष के दूरभाष 0145–2620739 व 2623776 से व कम्प्यूटर तकनीकी सहायता हेतु दूरभाष 0145–2632865 व 2627454 से जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।
सचिव

संक्षिप्त

घुमंतु समुदाय के लिए शिविर आयोजित

टोंक। जिला कलेक्टर के निर्देशन पर निवाई नगरपालिका में घुमंतु समुदाय के लिए एक विशेष शिविर का आयोजन किया गया। यह शिविर अधिशाषी अधिकारी मनोहरलाल जाट के नेतृत्व में आयोजित हुआ, जो विमुक्त, घुमंतू और अर्ध-घुमंतू लोगों को आवश्यक सुविधाएं उपलब्ध कराने के उद्देश्य से लगाया गया है। इस शिविर में ई-मित्र के माध्यम से घुमंतु समुदाय के लोगों को निशुल्क मतदाता पहचान पत्र, आधार कार्ड, जाति प्रमाण पत्र और मूल निवास प्रमाण पत्र जारी किए जा किये, यह पहल समुदाय के लोगों को सरकारी योजनाओं का लाभ उठाने में मदद करेगी। अधिशाषी अधिकारी मनोहरलाल जाट ने शिविर में उपस्थित कर्मचारियों को निर्देश दिए कि घुमंतु समुदाय के लोगों को किसी भी प्रकार की असुविधा न हो। उन्होंने सभी दस्तावेज समय पर तैयार करने की सुनिश्चितता करने को कहा, ये शिविर 31 जनवरी तक आयोजित किया जाएगा।

जरूरतमंदों को रजाइयां बांटी

टोंक। रेल लाओ संघर्ष समिति, अध्यक्ष एवं अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार एसोसिएशन के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष अकबर खान ने गुरूवा को हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी धन्ना तलाई चौराहे पर आर्थिक रूप से असहाय व जरूरतमंदों को गर्म रजाईयों का वितरण की है। इस दौरान अकबर खान ने बताया है कि जो असहाय व जरूरतमन्द कड़कड़ाती ठंड में साधारण चादर के सहारे अपनी पूरी रात ठंड में गुजारते है, उनकी समस्याओं को समझते हुए मैने हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी गर्म रजाईयों का वितरण किया। जिससे वह इस ठण्ड में अपनी जिन्दगी को खुशहाली से जियें।

वृद्धजनों की सेवा सबसे बड़ा धर्म

बहरोड / नीमराना। नगर परिषद बहरोड में वयो वृद्ध सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। आयोजित कार्यक्रम के भामाशाह रहे किसान नेता प्रधा न प्रतिनिधि बस्ती राम यादव ने बताया कि भयंकर सर्दी में जरूरतमंद वृद्ध जनों एवं महिलाओं को ऊनी कंबल देकर सम्मानित किया गया है। इस कार्यक्रम में अध्यक्षता कर रहे रोहतास मेघवाल पूर्व पार्षद बहरोड के नेतृत्व में सबलपुरा - जैतपुरा मोहल्ले के वृद्धजन- सम्मान समारोह में मकर संक्रांति पर क्षेत्र के गरी बों, बुजुर्गों एवं वरिष्ठ ना गरिकों की सेवा को सबसे बडा धर्म बताया गया। इस दौरान भारत भूषण शर्मा अधिशासी अभियंता, रो हताश सैनी पार्षद, अनिल सैनी, लोकेंद्र या दव, कमल यादव, मनोज एडवोकेट, रोहतास गुर्जर, सुनील यादव, सुरेश धानक, गुलाब सिंह सहित सैकडों बुजुर्ग व महिलाएं तथा युवा और बच्चे मौजूद रहे।

महापंचायत की बैठक 20 को

निवाई। किसान महापंचायत के तत्वावधान में किसानों की समस्याओं को लेकर कृषि उपज मंडी में बैठक आयोजित होगी। महापंचायत के ब्लॉक अध्यक्ष दशरथसिंह पलेई ने बताया कि किसानों की समस्याओं को लेकर कृषि उपज मंडी में स्थित भगवान श्री लक्ष्मीनारायण जी के मंदिर में 20 जनवरी को 12 बजे बैठक आयोजित होगी।

कलैक्टर की बैठक में ओवरलोड वाहन, अवैध पार्किंग, अतिक्रमण पर रहा फोकस

कोटपूतली। जिला कलक्टर प्रियंका गोस्वामी की अध्यक्षता में गुरुवार को कलेक्ट्रेट सभागार में जिला सड़क सुरक्षा समिति की बैठक आयोजित की गई। इस दौरान जिला पुलिस अधीक्षक देवेन्द्र कुमार बिश्नोई एवं एडीएम ओमप्रकाश सहारण भी मौजूद रहे। जिला कलेक्टर ने दुर्घटना संभावित अवैध कट्स और ब्लैक स्पॉट्स को बंद करने के लिए की गई कार्यवाही की समीक्षा करते हुए कहा कि संबंधित एजेंसी सुनिश्चित करें कि बंद कट्स पुन: शुरू ना हो साथ ही आमजन को प्रभावित करने वाले कट्स का सर्वे कर रिपोर्ट प्रस्तुत करें उन्होंने सड़क सुरक्षा पखवाड़े के तहत की जा रही कार्यवाही की समीक्षा करते हुए कार्यवाहियों में गति लाने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि डीटीओ की डीटीओ की टीम लगातार फील्ड में रहकर ओवरलोड वाहनों पर सख्त कार्यवाही कर उन्हें जब्त कर चालान करें। उन्होंने शहर में भारी वाहनों के आवागमन से सुगम यातायात

कोटपुतली जिला सड़क सुरक्षा समिति की बैठक आयोजित।

में हो रही परेशानी को हल करने के लिए पुलिस, पीडब्ल्यूडी, डीटीओ, एनएचएआई के अधिकारियों की टीम गठित कर ट्रैफिक मैनेज एवं पार्किंग समस्या के अन्य विकल्प तलाश कर आवश्यक कार्यवाही करने को कहा। उन्होंने ओवरस्पीडिंग, ट्रैफिक प्रबंधन, ठीन बेल्ट और सड़क किनारे झाड़ियों की कटाई, मार्किंग, सड़क पेच वर्क, यू-टर्न, साइन बोर्ड का प्रभावी क्रियान्वयन एवं यातायात नियमों के बारे में प्रचार-प्रसार करने, आपातकालीन सेवाओं के रिस्पॉन्स टाइम जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर भी विस्तृत विचार-विमर्श कर संबंधित विभाग को आवश्यक दिशा निर्देश प्रदान

■ 'यातायात को सुगम व सुरक्षित बनाने के लिए नियमों का पालन करवाते हुए सख्त कार्यवाई की जरुरत'

किएघुमाव पर चेतावनी बोर्ड, सड़क किनारे अतिक्रमण, लाइट्स के लिए सक्रियता से कार्य करने को कहा। जिला पुलिस अधीक्षक ने बीडीएम सहित अन्य आवश्यक स्थानों पर फुट ओवरब्रिज बनाने हेतु आवश्यक कार्यवाही में तेजी लाने को कहा जिससे आमजन को राहत मिले. उन्होंने हाईवे पर दुर्घटना से बचने के लिए पावटा, बीडीएम अस्पताल के सामने हाईवे पर अस्थाई बस स्टॉप को अन्यत्र शिफ्ट करने हेतु टीम गठित कर शीघ्र कार्यवाही करने को कहा, जिससे कि यात्री सड़क किनारे खड़े नहीं रहे। जिला पुलिस अधीक्षक ने संबंधित एजेंसियों को दिशा-निर्देश दिए।

संगठन को मजबूत करने पर चर्चा आज

पावटा। विराटनगर व पावटा ब्लॉक कांग्रेस की संयुक्त बैठक का आयोजन पूर्व विधायक व जिलाध्यक्ष इंद्राज गुर्जर के मुख्य आतिथ्य में आज दोपहर 1 बजे ग्रीन पार्क होटल में किया जाएगा। बैठक में संगठन को मजबूत करने, आगामी राजनीतिक रणनीति तय करने तथा क्षेत्र की जनसमस्याओं पर विस्तृत चर्चा की जाएगी।

सूत्रों के अनुसार बैठक में ब्लॉक, मंडल व बूथ स्तर के कांठोस पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता शामिल होंगे। बैठक के दौरान संगठनात्मक गतिविधियों की समीक्षा, कार्यकर्ताओं की जिम्मेदारियां तय करने के साथ ही आगामी कार्यक्रमों की रूपरेखा तैयार की जाएगी। इसके अलावा क्षेत्र में बढ़ती महंगाई, बेरोजगारी, कानून-व्यवस्था सहित स्थानीय मुद्दों को लेकर भी विचार-विमर्श किया जाएगा। बैठक के माध्यम से कांग्रेस नेतृत्व कार्यकर्ताओं में नई ऊर्जा भरने और संगठन को जमीनी स्तर पर और मजबूत करने का संदेश देगा।

डीओ के पदभार ग्रहण नहीं करने से ग्रामीणों का कलैक्ट्रेट पर प्रदर्शन

■ पलाई ग्राम पंचायत में ग्राम विकास अधिकारी को चार्ज दिलवाने की मांग को लेकर ग्रामीणों ने जिला कलेक्टर को ज्ञापन सौपा। जिसके बाद कलेक्टर ने ग्रामीणों को जल्द ही पंचायत का चार्ज दिलवाने का आश्वासन दिया

टोंक। पलाई ग्राम पंचायत में ग्राम विकास अधिकारी को चार्ज दिलवाने की मांग को लेकर ग्रामीणों ने जिला कलेक्टर को ज्ञापन सौपा। जिसके बाद कलेक्टर ने ग्रामीणों को जल्द ही पंचायत का चार्ज दिलवाने का आश्वासन दिया। उनियारा उपखण्ड की ग्राम पंचायत पलाई के ग्रामीणों ने गुरूवार को जिला कलेक्ट्रेट पहुंचकर ग्राम पंचायत में नियुक्त ग्राम विकास अधिकारी शैलेंद्र सिंह को चार्ज दिलाने को लेकर प्रर्दशन कर जिला कलेक्टर कल्पना अग्रवाल को ज्ञापन सौपा है। इस दौरान ग्रामीणो ने बताया गत दिनों 19 दिसंबर को राज्य सरकार के आदेश अनुसार मुख्य कार्यकारी अधिकारी ने पलाई ग्राम पंचायत विकास अधिकारी रमेश प्रजापत को निलंबित करके पंचायत समिति टोंक पर उपस्थित देने के निर्देश दिए गए थे। निलंबित होने के बाद ग्राम पंचायत पलाई में उनियारा विकास अधिकारी ने आदेश जारी कर ग्राम विकास अधिकारी शैलेंद्र सिंह को नियुक्त किया गया था, जिसके बाद शैलेंद्र सिंह ने 26 दिसंबर को ग्राम पंचायत में पदभार ग्रहण किया था। उसके बाद ग्राम विकास अधिकारी को 25 दिन बाद भी ग्राम पंचायत पलाई के निलंबित ग्राम अधिकारी द्वारा चार्ज नहीं दिया गया है, चार्ज नहीं देने से ग्रामीणों एवं आमजनों के आवश्यक कार्य व ग्राम पंचायत के विकास कार्य व सफाई कार्य बिल्कुल बंद पड़े हुए हैं। वही ग्रामीणों ने बताया कि ग्राम पंचायत पलाई के निलंबित ग्राम विकास अधिकारी रमेश प्रजापत के 2 वर्ष के कार्यकाल में दो बार निलंबित थे, वहीं एक बार एपीओ हो चुके हैं। इसके बावजूद भी हर बार बहाली के बाद राजनीतिक रसूख के चलते उसकी नियुक्ति वापस ग्राम पंचायत पलाई में कर दी जाती है, जिसको लेकर ग्रामीणों व आमजन में खासा आक्रोश व्याप्त है। ग्रामीणों ने जिला कलेक्टर को ज्ञापन सौंप कर निलंबित ग्राम विकास अधिकारी रमेश प्रजापत को बहाल होने के बाद उसे ग्राम पंचायत पलाई में नहीं लगाने की भी मांग की है।

दौड़ प्रतियोगिता के विजेता पुरस्कृत

पावटा। ग्राम पंचायत भूरी भड़ाज में उड़ान टीम एवं जनसेवा समिति द्वारा प्रतिवर्ष मकर संक्रांति के अवसर पर आयोजित होने वाली दौड़ प्रतियोगिता के 9वें संस्करण का आयोजन किया गया। कार्यक्रम संयोजक व पूर्व पंचायत समिति सदस्य भाई हरिद्वारीलाल स्वामी ने बताया कि दौड़ प्रतियोगिता में सैकड़ों की संख्या में युवाओं ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया जिसमें प्रथम स्थान हेमंत गढ़वाल भांकरी, द्वितीय स्थान सचिन सिंह पांछूडाला तथा तृतीय स्थान रवि मीणा पंडितपुरा ने प्राप्त किया तीन विजेताओं को नगद इनाम व स्मृति चिन्ह प्रदान किया गया साथ ही प्रथम दस स्थान प्राप्त विजेताओं को भी नगद इनाम व स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि विराटनगर से पूर्व विधायक इंद्राज सिंह गुर्जर ने कहा कि हार व जीत एक ही सिक्के के दो पहलू होते हैं इसलिए हारने वाले प्रतिभागियों को निराश ना होकर ओर अधिक मेहनत करनी चाहिए।

दुकानों से सामान ले गए चोर, व्यापारियों में आक्रोश

■ बिना नंबर प्लेट की बाइक से वारदात को अंजाम

पावटा। क्षेत्र में बाइक सवार चोर गिरोह एक बार फिर सक्रिय हो गया है। दिनदहाड़े दुकान के बाहर रखा सामान उठाकर दो बाइक सवार चोर फरार हो गए। घटना के बाद व्यापारियों में भारी आक्रोश देखने को मिला।

व्यापारियों का कहना है कि बाजार में लगातार चोरी की वारदातें हो रही हैं, लेकिन पुलिस अब तक चोरों पर नकेल कसने में नाकाम साबित हो रही है।पावटा कस्बे के मुख्य बाजार घंटाघर चौक स्थित दीवान ट्रेडिंग पावटा सुशील दांतिल वाले की दुकान के बाहर का है, जहां दो बैगों में रखा सामान लेकर दो बाइक सवार युवक मौके से फरार हो गए। दुकान में लगे सीसीटीवी कैमरों में पूरी घटना कैद हो गई जिसमें दो बाइक सवार बिना नंबर प्लेट की बाइक से वारदात को अंजाम देते नजर आए।

जहां देखा गया कि दुकानदार ने रोजमर्रा की तरह अपना बैग दुकान के बाहर रखा हुआ था, जिसमें जरूरी सामान मौजूद था। किस तरह दो युवक बाइक पर सवार होकर आए और मौके का फायदा उठाते हुए दुकान के बाहर रखा कीमती सामान उठाकर चंद सेकंड में फरार हो गए।

वारदात सीसीटीवी कैमरों में भी कैद हो गई है, बावजूद इसके अब तक किसी तरह की ठोस कार्रवाई नहीं हो सकी है।

घटना से क्षेत्र के व्यापारियों में आक्रोश और दहशत का माहौल है। घटना की सूचना मिलते ही प्रागपुरा थाना पुलिस मौके पर पहुंची और आसपास लगे सीसीटीवी कैमरों की फुटेज खंगालनी शुरू कर दी है।

पुलिस का कहना है कि जल्द ही आरोपियों की पहचान कर उन्हें गिरफ्तार किया जाएगा। लगातार हो रही चोरी की घटनाओं से व्यापारियों में रोष व्याप्त है।

उन्होंने पुलिस प्रशासन से क्षेत्र में गश्त बढ़ाने और चोरी की घटनाओं पर अंकुश लगाने की मांग की है। व्यापारियों का आरोप है कि पुलिस गश्त केवल कागजों तक सीमित है। न तो बाजार क्षेत्र में नियमित पेट्रोलिंग हो रही है और न ही पहले हुई चोरियों का कोई खुलासा किया गया है। इससे चोरों के हौसले लगातार बुलंद होते जा रहे हैं। घटना से नाराज व्यापारियों ने चेतावनी दी है कि यदि जल्द ही चोरों की गिरफ्तारी और सख्त कार्रवाई नहीं हुई तो वे आंदोलन करने को मजबूर होंगे।

आवासीय कॉलोनियों में अवैध गोदाम व कॉम्पलेक्स की भरमार

■ अर्थी ले जाने के लिए भी नही है रास्ता

दौसा। जिला एवं नगर परिषद के आला अधिकारियो की जिला मुख्यालय पर मकर संक्राति पर हुये भीषण अग्निकांड के बावजूद अभी तक आंख नही खुली है। शहर की अधिकांश आवासीय कॉलोनियों में नगर परिषद के अधिकारियो की शह पर अवैधरुप से कॉम्पलेक्स एवं गोदाम संचालित हो रहे है, जिसके चलते आमजन का जीना दूभर हो गया है तथा संभावित भीषण अग्निकांड ने शहरवासियो की नींद उडा दी है। उल्लेखनीय है कि जिला मुख्यालय की अधिकांश आवासीय कॉलोनियों में अवैध रुप से गोदाम एवं कॉम्पलेक्स संचालित हो रहे है, गोदाम एवं कॉम्पलेक्स संचालकों ने नगर परिषद से स्वीकृति तक नही ले रखी है तथा धडल्ले से आवासीय भूखण्डो को व्यावसायिक उपयोग में लिया जा रहा है।

सबसे मजेदार बात ये है कि शहर में इन विभिन्न आवासीय कॉलोनियों में संचालिक कॉम्पलेक्स में पार्किंग सहित सुरक्षा के अन्य इंतजाम तक नही है। तत्कालीन नगर परिषद के आला अधिकारियों ने 10 से 12 फीट चौडे मार्ग पर ही कॉम्पलेक्स निर्माण की स्वीकृत जारी कर दी साथ ही निर्माण के दौरान ये तक जांच नही की गई की इनमें पार्किंग की व्यवस्था भी है या नही। इन कॉम्पलेक्स में स्थित दूकानदार अपने साधन मुख्य मार्ग पर ही खडे करते है जिसके चलते आम राहगीर को भी आवाजाही में भारी सविधा का सामना करना पडता है।

इतना ही नही अगर कोई घटना हो जाती है तो अग्निशमन वाहन एव दल का पहुंचना ही दूभर हो जायेगा। वर्तमान में यहां छोटे वाहनो की आवाजाही भी बेमुश्किल से हाती है। आवासीय कॉलोनियो में संचालित गोदामों में पूर्व मे भी भीषण अग्निकांड हो चुका है, इसके बावजूद नगर परिषद ने रिहायसी कॉलोनियों से इन्हे बेदखल की कार्यवाही तक नही की है। मंडी रोड पर ये तीसरी घटना है, पूर्व में भी एक फर्नीचर के गोदाम में आग लग गई थी, जो समय रहते काबू पा लिया गया था, काबू नही पाया जाता तो निश्चित रुप से जनहानि होती। मंडी रोड पर जैस ही कल अग्निकांड हुआ स्थानीय लोगो ने नगर परिषद एवं दमकलकर्मियों को इसकी सूचना दे दी। सूचना मिलने के साथ ही दमकल मौके पर पहुंची लेकिन पर्याप्त पानी नही होने तथा अनुभवि कर्मचारी के नही होने के कारण दमकल मात्र दिखावा साबित हुई। मौके पर पहुंचे लालसोट एडीएम मनमोहन मीणा ने जयपुर एवं लालसोट से दमकल मंगवाई। दमकल के आने तक आग ज्यादा भभक गई, जिसके चलते आसपास के मकानो को खाली करना पडा। इधर अग्निकांड की सूचना मिलने के साथ ही जलदाय विभाग के ठेकेदार गब्बू जोशी तकरीबन आधा दर्जन से अधिक पानी के टेंकर लेकर पहुंचे, तथा अग्निकांड पर काबू पाने का प्रयास किया। इधर गोदाम को मार्ग सकरा होने के कारण स्थानीय लोगो ने दुर्गा मंदिर की दीवार तोडकर आग पर काबू पाने का प्रयास किया। लालसोट एवं जयपुर से दमकल के पहुंचने से पूर्व ही गब्बू जोशी एवं उनके कार्यकर्ताओं ने तकरीबन 75 प्रतिशत से अधिक आग पर काबू पा लिया गया था। मंडी रोड पर हुये भीषण अग्निकांड से शहरवासियो में दहशत फैल गई है। लोग आवासीय कॉलोनियो में अवैध रुप से संचालित कॉम्पलेक्स एवं गोदामो को सीज करने की मांग करने लगे है।

सार-समाचार

भगवान को पौष बड़ों का भोग लगाया

बौली, बामनवास। क्षेत्र के बरनाला तहसील के टिगरिया गांव के ग्रामीणों ने तलाई वाले बालाजी मंदिर प्रांगण में गुरुवार को फूल बंगला झांकी सजाकर लगाया पौष बड़ों का भोग लगाया। इस धार्मिक आयोजन में मुख्य अतिथि भाजपा के पूर्व प्रत्याशी राजेंद्र मीणा एवं विशिष्ट अतिथि मेघराज रामसिंह पूरा वाले थे। कार्यक्रम में दोपहर बाद फूल बंगला झांकी,व पोष बड़ों का भोग लगाकर महा आरती उतारी गई एवं आसपास से आए ठामीणों को प्रसादी वितरण की गई।आयोजित धार्मिक कार्यक्रम में ग्राम पंचायत प्रशासक चरण लाल मीणा, मनोज लोटन, मंगल सिंह, धर्मराज, सचिन घुणावत, ओम प्रकाश पटेल, रामजीलाल प्रजापत, सुखजी पटेल व विनोद सहित अन्य श्रद्धालु भी उपस्थित थे।

घुमंतू समुदाय के लिए सहायता शिविर 31 तक

दौसा। घुमंतू समुदाय के व्यक्तियों को ऑनलाइन पहचान प्रमाण पत्र जारी कर कल्याणकारी योजनाओं से जोड़ने के लिए सभी पंचायत समिति, नगरपालिका एवं नगरपरिषद में 16 से 31 जनवरी तक सहायता शिविर आयोजित किए जाएंगे। जिला परिवीक्षा एवं समाज कल्याण अधिकारी रामराज मीणा ने बताया कि राज्य सरकार की ओर से घुमंतू समुदाय (विमुक्त, घुमंतू एवं अद्धर्घुमंतू) के व्यक्तियों को केंद्र एवं राज्य की जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ प्रदान करने के उद्देश्य से ऑनलाईन घुमंतू पहचान प्रमाण पत्र जारी कर कल्याणकारी योजनाओं से जोड़ा जाएगा। इसके लिए जिले के शहरी एवं ठामीण क्षेत्रों की सभी पंचायत समिति तथा नगरपालिका एवं नगरपरिषद में 16 से 31 जनवरी तक विमुक्त, घुमंतू एवं अद्धर्घुमंतू सहायता शिविर आयोजित किया जाएगा। साथ ही इन सहायता शिविरों में घुमंतू समुदाय के व्यक्तियों के मतदाता पहचान पत्र, आधार कार्ड, जाति प्रमाण पत्र, मूल निवास प्रमाण पत्र आदि बनाने संबंधी कार्य भी किए जाएंगे। इन शिविरों में विमुक्त, घुमंतू एवं अद्धर्घुमंतू समुदाय के व्यक्तियों से ऑनलाईन आवेदन पत्र ई-मित्रों द्वारा नि:शुल्क भरवाए जाएंगे तथा किसी भी प्रकार का कोई शुल्क नहीं लिया जाएगा। उन्होंने बताया कि योजना के लाभ के लिए इन वर्गों के व्यक्ति नजदीकी पंचायत समिति तथा नगरपालिका एवं नगरपरिषद कार्यालय में संपर्क कर अपना पहचान प्रमाण पत्र बनवाने संबंधी कार्य करवा सकते हैं।

सात दिवसीय विशेष शिविर का शुभारंभ

दौसा। श्री संत सुंदर दास राजकीय महिला महाविद्यालय दौसा में राष्ट्रीय सेवा योजना की दोनों इकाइयों के संयुक्त तत्वावधान में गुरुवार को सात दिवसीय विशेष शिविर का शुभारंभ किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ मां सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण, दीप प्रज्वलन एवं सरस्वती वंदना से हुआ। तत्पश्चात छात्राओं ने सूर्य नमस्कार आदि विभिन्न योग किए। महाविद्यालय के प्राचार्य राकेश कुमार शर्मा ने छात्राओं को संबोधित करते हुए राष्ट्रीय सेवा योजना में निहित उद्देश्यों एवं कर्तव्यों के बारे में बताया। उन्होंने बताया कि राष्ट्रीय सेवा योजना का जो लोगो है जिसमें 8 तिलिया है वे 8 प्रहर की द्योतक हैं इसका तात्पर्य है कि स्वयं सेविकाओं को प्रत्येक प्रहर समाज सेवा के लिए तैयार रहना चाहिए। डॉ. ललिता वर्मा ने छात्राओं को शिविर में उत्साह से भाग लेने हेतु प्रेरित किया। शिविर के द्वितीय सत्र में डॉ स्वर्णलता सिंह ने मोटे अनाज की उपयोगिता पर प्रकाश डालते हुए बाजरा, ज्वार, रागी व कोदो की उपयोगिता एवं महत्व के बारे में जानकारी प्रदान की। आर्ट एंड क्राफ्ट प्रशिक्षण के दौरान आचू बैरवा द्वारा पैकेजिंग सामग्री निर्माण हेतु प्रशिक्षण दिया। शिविर में स्वयंसेविकाओं ने महाविद्यालय परिसर में स्थित गार्डन की सफाई, कचरे का निस्तारण क्यारियों का निर्माण एवं परिसर को स्वच्छ बनाने का कार्य किया। शिविर में युवा सप्ताह के दौरान नारा लेखन प्रतियोगिता का आयोजन भी किया गया, जिसमें शिवानी वर्मा ने प्रथम तथा परी चोपड़ा ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। राष्ट्रीय सेवा योजना के इकाई प्रथम की प्रभारी ललिता बैरवा ने मंच संचालन किया एवं सात दिवसीय कार्यक्रम के रूपरेखा प्रस्तुत की। राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई द्वितीय की प्रभारी अंजू मीणा ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया। इस अवसर पर डॉ. रचना गर्ग, डॉ. परमेश्वरी बागड़ा एवं अन्य संकाय सदस्य उपस्थित रहे।

निवाई में गणतंत्र दिवस की तैयारी

निवाई। उपखंड अधिकारी कार्यालय में गणतंत्र दिवस की तैयारियों को लेकर एसडीएम प्रीति मीणा की अध्यक्षता में ब्लॉक के अधिकरियों व कर्मचारियों की समीक्षा बैठक आयोजित हुई। बैठक में एसडीएम प्रीति मीणा ने आवश्यक दिशा निर्देश देते हुए अधिकारियों को गणतंत्र दिवस के मुख्य समारोह की सभी व्यवस्थाओं को अन्तिम रूप देने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि स्वतंत्रता दिवस के मुख्य समारोह में आने वाले सरकारी व गैर सरकारी विद्यालयों के छात्र-छात्राओं को किसी भी प्रकार की परेशानी नहीं हो। समारोह स्थल पर बिजली, छाया, पेयजल, वाहन पार्किंग व छात्र-छात्राओं व प्रतिभाओं के लिए बैठने की पुख्ता व्यवस्थाएं हो। सांस्कृतिक कार्यक्रमों के लिए माईक व मंच, लाउड स्पीकर व अतिथियों के लिए स्टेज की व्यवस्थाएं सुनिश्चत करें। बैठक में उत्कृष्ट कार्य करने वाले कर्मचारियों व प्रतिभावान छात्र-छात्राओं के लिए स्मृति-चिन्ह व प्रमाण-पत्र की व्यवस्था करने, सरकारी व गैर सरकारी विद्यालयों में लड्डुओं का वितरण करने सहित कई महत्वपूर्ण व्यवस्थाओं की जिम्मेदारियां सौंपी गई।

76 वें सेना दिवस पर शहीदों को श्रद्धांजलि

भरतपुर (निस)। क्षेत्रीय परिवहन अधिकारी कार्यालय भरतपुर में 76 वे सेना दिवस के उपलक्ष्य में शहीदों को श्रद्धांजली सभा का आयोजन किया गया इस मौके पर क्षेत्रीय परिवहन अधिकारी इंदू मीणा ने सरस्वती माता के फोटो पर माल्यार्पण किया और क्षेत्रीय उप परिवहन अधिकारी अभय मुद्गल जी ने सरस्वती माता के चित्र के सामने दीपक जलाकर कार्यक्रम की शुरुआत की इसके उपरांत पूर्व सैनिकों की तरफ से वेटरन इंडिया के जिला अध्यक्ष विनोद कुमार चतुर्वेदी ने मंच का संचालन करते हुए बताया कि थल सेना दिवस की शुरुआत 1895 में हुई थी किंतु जब 15 अगस्त 1947 में देश आजाद हुआ तो उसके दो साल बाद 15 जनवरी 1949 को पहले भारतीय जरनल के एम करिअप्पा भारतीय सेना के प्रथम चीफ ऑफ दा आर्मी स्टाफ बने। उससे पहले ब्रिटिश मूल के ही सेनाध्यक्ष होते थे। उसी उपलक्ष्य में सेना दिवस मनाया जाता है। इसी कड़ी में क्षेत्रीय परिवहन अधिकारी ने बताया कि सैनिक कभी भी रिटायर नहीं होता जितनी जिम्मेदारी सेना में रहते हुए सैनिक की होती है उससे ज्यादा जिम्मेदारी रिटायर्ड होने के बाद भी समाज के प्रति होती है। क्षेत्रीय उप परिवहन अधिकारी ने बताया कि आप लोगों की सेवाएं पूरे राजस्थान में है और आप जिस लगन और मेहनत से कार्य करते हुए ईमानदारी का परिचय देना रहते हुए देते आए है उसी प्रकार भिन्न भिन्न कार्यालयों में रहते हुए उम्दा कार्य करते रहे। जिला परिवहन अधिकारी राधेश्याम शर्मा ने सैनिकों को बधाई देते हुए कहा कि सैनिक अगर सीमा पर मुस्तैदी के साथ अपनी ड्यूटी नहीं दें तो कोई भी चौन से नहीं सो सकता। एम वी आई देवेंद्र सुंडा जी ने पूर्व सैनिकों को बधाई देते हुए एक सभ्य समाज में सैनिकों की सहभागिता पर प्रकाश डाला। इसी कड़ी में संभाग परिवहन अधिकारी इंदू मीणा जी सड़क सुरक्षा की उपस्थित सभी लोगों को शपथ दिलाई। इस मौके पर पूर्व सैनिकों में बदन सिंह, ईश्वर सिंह, करतार सिंह, ओमवीर सिंह, रणवीर सिंह, राम सिंह, दानवीर सिंह, जितेंद्र शर्मा, गौरव गर्ग, दिलीप सिंह, कामिनी सिंह, भावना तोमर, श्रुति बंसल एवं समस्त स्टाफ उपस्थित रहे।

प्रतिभा सम्मान समारोह 28 को

दौसा। देवनारायण मंदिर कमेटी एवं गुर्जर समाज की बैठक गुरुवार को देवनारायण मंदिर में आयोजित की गई, जिसमें 28 जनवरी को गुर्जर समाज के आराध्य देव भगवान श्री देवनारायण जी के जन्मोत्सव के अवसर पर शोभा एवं कलश यात्रा तथा प्रतिभा सम्मान समारोह आयोजित करने का निर्णय लिया गया। मंदिर कमेटी सचिव एडवोकेट हनुमान हर्षाना ने बताया कि सुबह 9 बजे पूजा अर्चना के बाद रथ देवनारायण मंदिर गुर्जर छात्रावास से रवाना होगा जो फ़लसावाला वाले बालाजी, छोटी दौसा होते हुए चुंगी सहजनाथ महादेव, संस्कृत कॉलेज पहुंचेगी जहां से कलशयात्रा शुरु होगी जो गांधी तिराया होते हुए सोमनाथ स्थित देवनारायण मंदिर पहुंचेगी, जहां प्रतिभा सम्मान समारोह व भामाशाह सम्मान समारोह आयोजित होगा। समारोह में दसवीं कक्षा व बारहवीं कक्षा में 80 प्रतिशत प्राप्त बालक बालिकाओं को सम्मानित किया किया जाएगा। उन्होने बताया कि 2025 में 80 प्रतिशत या उससे ज्यादा अंक प्राप्त प्रतिभा अपनी मार्कशीट 20 जनवरी तक देहरादून क्लासेज दौसा या देवनारायण मंदिर में जमा करा दे सकते है।

'नवभारत साक्षरता कार्यक्रम से समाज के प्रत्येक वर्ग तक शिक्षा की रोशनी पहुंचे'

दौसा। नवभारत साक्षरता कार्यक्रम के अंतर्गत गुरुवार को राजकीय आचार्य संस्कृत महाविद्यालय में जिला स्तरीय कार्यशाला का आयोजन किया गया।

कार्यशाला में महाविद्यालय के प्रधानाचार्य सीताराम गुर्जर ने स्वयंसेवी शिक्षकों को प्रेरित करते हुए कहा कि हमें साक्षरता का लक्ष्य प्राप्त करना है। जिला साक्षरता एवं सतत शिक्षा अधिकारी हरिओम गुर्जर ने संबोधित किया। उन्होंने कार्यक्रम के उद्देश्यों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि नवभारत साक्षरता कार्यक्रम के माध्यम से समाज के प्रत्येक वर्ग तक शिक्षा की रोशनी पहुंचाना लक्ष्य है।

कार्यशाला में दक्ष प्रशिक्षक रवि शंकर शर्मा ब्लॉक समन्वयक एवं सुरेश सिंह, प्रधानाचार्य राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय टुढ़ियाना ने प्रशिक्षण प्रदान किया। प्रशिक्षण के दौरान साक्षरता अभियान की कार्ययोजना, शिक्षण पद्धितयों, नवाचारों तथा सतत शिक्षा के महत्व पर

दौसा में नवभारत साक्षरता कार्यक्रम के अंतर्गत राजकीय आचार्य संस्कृत महाविद्यालय में जिला स्तरीय कार्यशाला का आयोजन किया।

विस्तार से जानकारी दी गई।

वक्ताओं ने कहा कि कार्यक्रम की सफलता के लिए शिक्षकों, स्वयंसेवकों और अधिकारियों की सक्रिय भागीदारी आवश्यक है। कार्यशाला में उपस्थित प्रतिभागियों ने प्रशिक्षण को उपयोगी बताते हुए इसे जमीनी स्तर पर प्रभावी रूप से लागू करने का संकल्प लिया। कार्यशाला के समापन पर सभी प्रतिभागियों का आभार व्यक्त किया गया। कार्यशाला में जिले के सभी ब्लॉक के साक्षरता समन्वयक और चयनित प्रधानाचार्य उपस्थित रहे।

■ प्रशिक्षण के दौरान साक्षरता अभियान की कार्ययोजना, शिक्षण पद्धितयों, सतत शिक्षा के महत्व पर विस्तार से जानकारी दी गई। वक्ताओं ने कहा कि कार्यक्रम की सफलता के लिए स्वयंसेवकों और अधिकारियों की सक्रिय भागीदारी आवश्यक है

यह कहना मुश्किल है कि यह उनका सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन है या नहीं। वह लंबे समय से काफी अच्छा प्रदर्शन कर रहे हैं। जब भी उनसे आमना सामना होता है, तो आपको लगता है कि उनसे मुकाबला करने के लिए भी आपको अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करना होगा। **- काइल जैमीसन**

न्यूजीलैंड खिलाड़ी, विराट कोहली को लेकर बोलते हुए।

खेल जगत

आज का खिलाड़ी

विराट कोहली

विराट कोहली न्यूजीलैंड के खिलाफ वनडे क्रिकेट में सर्वाधिक रन बनाने वाले भारतीय बल्लेबाज बनने से सिर्फ एक रन पीछे हैं। उन्होंने पहले ही मैच में सचिन तेंदुलकर के महान रिकॉर्ड की बराबरी कर ली है।रविवार को न्यूजीलैंड के खिलाफ खेले गए पहले वनडे मैच में, विराट कोहली ने 93 रनों की शानदार पारी खेली। इस पारी के साथ ही उन्होंने कुल 1750 रन पूरे कर लिए और क्रिकेट के भगवान कहे जाने वाले सचिन तेंदुलकर के बनाए रिकॉर्ड की बराबरी कर ली। अब, दूसरे वनडे मैच में सिर्फ एक रन बनाते ही कोहली यह महारिकॉर्ड अपने नाम कर लेंगे।

क्या आप जानते हैं ?... रोहित शर्मा ने अब तक टीम इंडिया की कप्तानी 56 मैचों में की है, जिनमें से भारत ने 46 मैच जीते और 12 हारे हैं। उनकी जीत लगभग 75 प्रतिशत है।

हेनिल पटेल और अभिज्ञान कुंडू ने भारत को दिलाई विजयी शुरुआत

बुलावायो, 15 जनवरी। हेनिल पटेल (पांच विकेट) की अगुवाई में गेंदबाजों के बेहतरीन प्रदर्शन और अभिज्ञान कुंडू की नाबाद 42 रन की शानदार पारी की बदौलत की बदौलत भारत ने गुरुवार को अंडर-19 विश्व कप के पहले मुकाबले में अमेरिका को डीएलएस पद्धति के तहत छह विकेट से हराकर विजयी शुरुआत की।

अमेरिका को 35.2 ओवरों में 107 रनों के स्कोर पर समेटने के बाद भारत ने बारिश के कारण 37 ओवर में 96 रन के संशोधित लक्ष्य को शुरूआती झटकों से उबरते हुए 17.2 ओवर में चार विकेट पर 99 रन बनाकर हासिल कर लिया। अभिज्ञान कुंडू ने 41 गेंदों पर नाबाद 42 रन में पांच चौके और एक छक्का लगाया। कनिष्क चौहान 10 रन पर नाबाद रहे।

लक्ष्य का पीछा करते हुए भारत की शुरुआत खराब रही।। फॉर्म में चल रहे वैभव सूर्यवंशी मात्र दो रन बनाकर अप्पिडी की गेंद पर आगे बढ़कर बड़ा शॉट खेलने के प्रयास में बोल्ड हो गए। अप्पिडी ने वेदांत त्रिवेदी को दो रन पर आउट कर भारत को दूसरा झटका दिया। कप्तान आयुष म्हात्रे 19 गेंदों में 19 रन बनाकर ऋषभ शिम्पी का शिकार बने। भारत ने अपना तीसरा विकेट 25 के स्कोर पर गंवाया। अभिज्ञान कुंडू और विहान मल्होत्रा ने चौथे विकेट के लिए 45 रन की साझेदारी की लेकिन विहान टीम के 70 के स्कोर पर उत्कर्ष श्रीवास्तव का शिकार बन गए। विहान ने 17 गेंदों में 18 रन बनाये। लेकिन अभिज्ञान ने कनिष्क के साथ भारत को जीत की मंजिल पर पहुंचकर दम लिया। हेनिल पटेल को उनकी घातक गेंदबाजी के लिए प्लेयर ऑफ द मैच का पुरस्कार मिला।

इससे पहले आज यहां भारत की अंडर-19 टीम ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी करने का फैसला किया। बल्लेबाजी करने उतरी अमेरिका की शुरुआत अच्छी नहीं रही और उसने दूसरे ही ओवर में अमरिंदर गिल (एक) का विकेट गंवा दिया। उन्हें हेनिल पटेल ने आउट किया। इसके बाद अर्जुन महेश और साहिल गर्ग ने पारी को संभालने का प्रयास किया, लेकिन भारतीय गेंदबाजी आक्रमण के आगे उसके बल्लेबाज अधिक देर तक नहीं टिक सके। अर्जुन महेश और साहिल गर्ग (16-16) रन बनाकर आउट हुये। अदनित झांब (18) रन बनाकर आउट हुये।

शेष सात बल्लेबाज दहाई आंकड़े तक भी नहीं पहुंच सके। 36वां ओवर कर रहे वैभव सूर्यवंशी ने दूसरी गेंद पर नीतीश सुदिनी को आउटकर अमेरिका की पारी का 107 के स्कोर पर अंत कर दिया। नीतीश सुदिनी ने टीम के लिए सर्वाधिक 36 रनों की पारी खेली। भारत की ओर से हेनिल पटेल ने सात ओवर में 16 रन देकर पांच विकेट लिये। दीपेश देवेंद्रन, अमब्रिश, खिलन पटेल और वैभव सूर्यवंशी ने एक-एक बल्लेबाज को आउट किया।

स्टार्क और वोल्वार्ट दिसंबर के लिए प्लेयर ऑफ द मंथ चुने गए

दुबई, 15 जनवरी। ऑस्ट्रेलिया के तेज गेंदबाज़ मिशेल स्टार्क और दक्षिण अफ्रीका की कप्तान लौरा वोल्वार्ट ने पुरुषों और महिलाओं के लिए आईसीसी प्लेयर ऑफ़ द मंथ का अवॉर्ड जीता है, शानदार प्रदर्शन की एक सीरीज़ के बाद जिसमें उन्होंने कड़ी टक्कर को पीछे छोड़ा। स्टार्क, जिन्हें ऑस्ट्रेलिया की 4-1 से एशेज जीत में प्लेयर ऑफ द सीरीज़ चुना गया था, ने दिसंबर में 21.25 की औसत से 16 विकेट लिए, साथ ही महीने के दौरान तीन टेस्ट में 139 रन भी बनाए।

सबसे शानदार प्रदर्शन ब्रिस्बेन में दूसरे टेस्ट में प्लेयर ऑफ़ द मैच का था, जहाँ उन्होंने आठ विकेट लिए और महत्वपूर्ण 77 रन बनाए। उन्होंने एडिलेड में सीरीज तय करने वाले टेस्ट में भी उपयोगी 54 रन का योगदान दिया। स्टार्क ने यह अवॉर्ड न्यूज़ीलैंड के तेज गेंदबाज जैकब डफी और वेस्टइंडीज के ऑलराउंडर जस्टिन ग्रीव्स को पछाड़कर जीता।

वोल्वार्ट ने आयरलैंड के खिलाफ घरेलू सीरीज़ में तीन वनडे में 111.84 के स्ट्राइक रेट से 255 रन बनाए, साथ ही दो टी20 में 190.27 के शानदार स्ट्राइक रेट से 137 रन बनाए। उन्होंने दोनों फॉर्मेट में टॉप ऑर्डर में शानदार प्रदर्शन किया, तीन शतक लगाए। वोल्वार्ट को वनडे में प्लेयर ऑफ द सीरीज़ चुना गया, जिसमें उन्होंने आखिरी दो मैचों में 124 और 100 रन बनाए, इससे पहले उन्होंने पहले टी20 में नाबाद 115 रन बनाए थे। उन्होंने अपनी टीम की साथी सुने लुस और भारत की ओपनर शेफाली वर्मा को पछाड़कर तीन महीनों में अपना दूसरा आईसीसी प्लेयर ऑफ द मंथ अवॉर्ड जीता।

कोकिनाकिस ऑस्ट्रेलियन ओपन सिंगल्स से हटे

मेलबर्न,15 जनवरी। थानासी कोकिनाकिस ने गुरुवार को ऑस्ट्रेलियन ओपन सिंगल्स इवेंट से हटने की घोषणा की। कोकिनाकिस ने इंस्टाग्राम स्टोरीज पर लिखा, ''दुर्भाग्य से अपनी टीम और डॉक्टरों से बात करने के बाद मैंने ऑस्ट्रेलियन ओपन सिंगल्स से हटने का फैसला किया है।एक अविश्वसनीय रूप से कठिन साल के बाद यह वह इवेंट था जिसका मैं सबसे ज़्यादा इंतज़ार कर रहा था, लेकिन मैं अभी तैयार नहीं हूँ। मैं हर दिन 100 ठीक होने के लिए सब कुछ कर रहा हूँ।'' कोकिनाकिस ने पिछले हफ्ते एडिलेड इंटरनेशनल में लगभग एक साल बाद अपना पहला सिंगल्स मैच खेला, जहाँ उन्होंने फाइनल-सेट टाई-ब्रेक में सेबेस्टियन कोर्डा को हराया। लेकिन पूरे मैच के दौरान, पिछले फरवरी में पेक्टोरल सर्जरी के बाद ऑस्ट्रेलियाई खिलाड़ी को अपने दाहिने कंधे में परेशानी हो रही थी। वह बुधवार को एडिलेड से हट गए। 29 वर्षीय खिलाड़ी मेलबर्न पार्क में डबल्स में प्रतिस्पर्धा करने की उम्मीद कर रहे हैं। उन्होंने 2022 में निक किर्गियोस के साथ खिताब जीता था। कोकिनाकिस ने लिखा, ''हम अभी भी डबल्स के लिए कोर्ट पर उतरने और कुछ मज़े करने की कोशिश करेंगे।मेरा समर्थन करने वाले सभी लोगों को धन्यवाद।''

फीफा वर्ल्ड कप के लिए पचास करोड़ से ज्यादा टिकट रिक्वेस्ट

लुसाने, 15 जनवरी। फीफा वर्ल्ड कप 2026 के लिए दुनिया भर में उत्साह पहले कभी नहीं देखा गया, रैंडम सिलेक्शन ड्रॉ टिकट बिक्री

फ़ेज के दौरान आधे बिलियन से ज़्यादा टिकट रिक्वेस्ट सबमिट की गईं, जो गुरुवार, 11 दिसंबर 2025 से मंगलवार, 13 जनवरी 2026 तक चला। सिर्फ़ 33 दिनों में सभी 211 फीफा मेंबर एसोसिएशन के देशों/टेरिटरी में रहने वाले फ़ैन्स से एप्लीकेशन मिलीं। मेजबान यूनाइटेड स्टेट्स, मेक्सिको और कनाडा टॉप एप्लीकेंट देशों में शामिल हैं, साथ ही जर्मनी, इंग्लैंड, ब्राज़ील, स्पेन, पुर्तगाल, अर्जेंटीना और कोलंबिया भी शामिल हैं। फ़ैन्स को उनके टिकट एप्लीकेशन के नतीजे के बारे में 5 फरवरी से पहले ईमेल से बताया जाएगा। हर एप्लीकेशन को यूनिक क्रेडिट कार्ड डेटा से वैलिडेट किया गया, फ़ैन्स ने 33-दिन की एप्लीकेशन विंडो में हर दिन एवरेज 15 मिलियन टिकट रिक्वेस्ट कीं, जिसने दुनिया के खेल के इतिहास में डिमांड के लिए एक नया बेंचमार्क सेट किया। उन सभी देशों और इलाकों में रहने वाले फैंस से एप्लीकेशन मिले, जहां फीफा के 211 मेंबर एसोसिएशन खेल को कंट्रोल करते हैं। इससे पता चलता है कि पहली बार हुए 48 टीमों वाले फीफा वर्ल्ड कप की दुनिया भर में कितनी अपील है।

वेस्टइंडीज की अंडर-19 टीम ने तंजानिया को 5 विकेट से हराया

विंडहोक, 15 जनवरी। गेंदबाजों के बेहतरीन प्रदर्शन के बाद तानेज फ्रांसिस (52) और ज्वेल एंड्रयू (44) की शानदार बल्लेबाजी की बदौलत वेस्टइंडीज की टीम ने गुरुवार को अंडर-19 विश्वकप के तीसरे मुकाबले में तंजानिया को 174 गेंदे शेष रहते पांच विकेट से हराकर टूर्नामेंट में विजयी शुरुआत की। 123 रनों के लक्ष्य का पीछा करने उतरी वेस्टइंडीज ने पहला विकेट 22 के स्कोर पर गंवाने के बाद दूसरे विकेट के लिए तानेज फ्रांसिस, जूल एंड्रयू की 80 रनों की साझेदारी ने वेस्टइंडीज को जीत की दहलीज पर पहुंचा दिया। ऐसे में 17वें ओवर में जूल एंड्रयू को लक्ष्य बकरानिया ने आउटकर पवेलियन भेज दिया। जूल एंड्रयू ने 44 गेंदों में छह चौके और एक छक्का लगाते हुए 44 रन बनाये। इसके बाद 19वें ओवर में ऑगस्टिनो मवामेले ने तानेज फ्रांसिस को आउट कर दिया। तानेज फ्रांसिस ने 55 गेंदों मे पांच चौके और एक छक्का लगाते हुए 52 रनों की अर्धशतकीय पारी खेली।

जोकोविच, सिनर ऑस्ट्रेलियन ओपन ड्रॉ के एक ही हाफ में

मेलबर्न, 15 जनवरी। नोवाक जोकोविच और जानिक सिनर ऑस्ट्रेलियन ओपन ड्रॉ के एक ही हाफ में हैं, जिसका खुलासा गुरुवार को मेलबर्न में हुआ। रिकॉर्ड 10 बार के चैंपियन जोकोविच और दो बार के मौजूदा चैंपियन सिनर सीजन के पहले मेजर में एक ब्लॉकबस्टर सेमीफाइनल में भिड़ सकते हैं। सिनर लेक्सस एटीपी हेड2हेड सीरीज में जोकोविच से 6-4 से आगे हैं, जिसमें सर्बियाई खिलाड़ी एक समय 4-1 से आगे थे। 24 वर्षीय इतालवी खिलाड़ी ने 2024 के ऑस्ट्रेलियन ओपन सेमीफाइनल में जोकोविच को हराकर अपना पहला मेजर खिताब जीता था। इस पखवाड़े में एक रीमैच की संभावना है।

कार्लोस अल्काराज, एटीपी रैंकिंग में विश्व नंबर 1, अपना सातवां मेजर खिताब जीतने और करियर ग्रैंड स्लैम पूरा करने का लक्ष्य बना रहे हैं। स्पेनिश खिलाड़ी अपने प्रतिद्वंद्वी अलेक्जेंडर ज़्वेरेव के साथ उसी हाफ में हैं। 22 वर्षीय खिलाड़ी घरेलू उम्मीद एडम वाल्टन के खिलाफ शुरुआत करेंगे।

38 वर्षीय जोकोविच अपने 25वें मेजर खिताब का लक्ष्य बना रहे हैं, जो टेनिस इतिहास में सबसे अधिक मेजर सिंगल्स खिताब के लिए मार्गरेट कोर्ट के साथ उनकी बराबरी को तोड़ देगा। दूसरी वरीयता प्राप्त सिनर मेलबर्न पार्क में लगातार तीसरी जीत और कुल मिलाकर अपने पांचवें मेजर खिताब का पीछा कर रहे हैं। सर्बियाई खिलाड़ी अपने अभियान की शुरुआत पेड्रो मार्टिनेज के खिलाफ करेंगे, जबकि सिनर पहले दौर में फ्रांसीसी बाएं हाथ के खिलाड़ी ह्यूगो गैस्टन का सामना करेंगे।

सिनर, जिनका टूर्नामेंट रिकॉर्ड 22-4 है, ड्रॉ समारोह से पहले उपस्थित हुए और टूर्नामेंट के लिए अपने दृष्टिकोण के बारे में बात की।उन्होंने कहा,''ड्रॉ बहुत मुश्किल है, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप किसके साथ खेलते है। हम दुनिया के सबसे अच्छे खिलाड़ी हैं और रास्ता बहुत, बहुत लंबा और बहुत दूर है। हम दिन-ब-दिन आगे बढ़ेंगे।''

24 साल के खिलाड़ी ने ऑस्ट्रेलियाई कोच डैरेन काहिल के साथ अपनी पार्टनरशिप के बारे में भी बात की। सिनर ने कहा, ''साल के आखिर में हमारी अच्छी बातचीत हुई और उनके साथ कम से कम एक और सीजन शेयर करना बहुत अच्छा है। वह बहुत शांति देते हैं और मुझे उनके साथ कोने में बहुत सुरक्षित महसूस होता है, न सिर्फ मुझे, बल्कि बाकी टीम को भी। यह बहुत अच्छा है, खासकर यहाँ खेलना, एक ऑस्ट्रेलियाई टीम मेंबर के साथ ऑस्ट्रेलिया में खेलना।''

पहले राउंड के दो सबसे दिलचस्प मैच छठे सीड एलेक्स डी मिनौर बनाम पूर्व नंबर 6 माटेओ बेरेटिनी और ज़्वेरेव का बड़ी सर्विस करने वाले गैब्रियल डियालो के साथ मुकाबला है। डी मिनौर और बेरेटिनी ने 2025 में हार्ड-कोर्ट पर अपनी मुलाकातें बांटीं, जिसमें इटैलियन खिलाड़ी लेक्सस हेड2हेड सीरीज़ में 3-2 से आगे हो गया। ज़्वेरेव और डियालो पहली बार मिलेंगे। फैंस के पसंदीदा थानासी कोकिनाकिस ने ड्रॉ सेरेमनी से कुछ समय पहले अपना नाम वापस लेने की घोषणा की।

टी-20 विश्व कप में दिलप्रीत बाजवा होंगे कनाडा टीम के कप्तान

ओटावा, 15 जनवरी। भारत और श्रीलंका में होने वाले 2026 टी-20 विश्व कप में दिलप्रीत बाजवा कनाडा की 15 सदस्यीय टीम की कप्तानी करेंगे। अंतरराष्ट्रीय टी-20 में बाजवा ने 133.22 के स्ट्राइक रेट से चार अर्धशतक बनाये हैं। अक्तूबर में कनाडा के सुपर 60 टी-10 टूर्नामेंट में उन्होंने 18 गेंदों में 57 और 22 गेंदों में 68 रनों की नाबाद पारी खेली थी। बाजवा ने अभी तक नौ एकदिवसीय और 17 टी-20 मैच खेले हैं। टीम में ओपनर युवराज सामरा भी एक बड़े हिटर हैं और उन्होंने 15 टी-20 पारी में 160.72 के स्ट्राइक रेट से 27 छक्के लगाए हैं। पूर्व कप्तान साद बिन जफर, कलीम सना, डिलन हेलिगर, निकोलस कीरटॉ और नवनीत धालीवाल जैसे जाने-माने चेहरे भी टीम में शामिल हैं। विश्वकप में कनाडा को ग्रुप डी में दक्षिण अफ्रीका, न्यूजीलैंड, अफगानिस्तान और अमेरिका के साथ रखा गया है। उनके सभी ग्रुप मैच भारत में हैं और पहले मैच में उनका सामना नौ फरवरी को दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ अहमदाबाद में होगा।

2024 के बाद कनाडा की टीम दूसरी बार टी-20 विश्व कप में हिस्सा लेने जा रही है। पिछली बार उन्होंने आयरलैंड को ग्रुप स्टेज में हराया था। अमेरिका का रीजनल फाइनल जीतने के बाद कनाडा ने इस बार विश्व कप के लिए क्वालिफाई किया था।

टी-20 विश्व कप के लिए कनाडा की टीम इस प्रकार है:-

दिलप्रीत बाजवा (कप्तान), अजयवीर हुंडल, अंश पटेल, डिलन हेलिगर, हर्ष ठाकर, जसकरनदीप बुट्टर, कलीम सना, कंवरपाल ताथगुर, नवनीत धालीवाल, निकोलस कीरटॉ, रविंदरपाल सिंह, साद बिन जफर, शिवम शर्मा, श्रेयस मोव्वा और युवराज सामरा।

लक्ष्य सेन क्वार्टर फाइनल में, श्रीकांत और प्रणय बाहर

नई दिल्ली, 15 जनवरी। पूर्व चैंपियन लक्ष्य सेन ने अपने मजबूत डिफेंस और तेज खेल की बदौलत जापान के केंटा निशिमोटो को हराया, जबकि किदांबी श्रीकांत और एचएस प्रणय का शानदार प्रदर्शन योनेक्स-सनराइज इंडिया ओपन 2026 के दूसरे राउंड में काफी नहीं रहा। यह बीडब्ल्यूएफ वर्ल्ड टूर सुपर 750 इवेंट बैडमिंटन एसोसिएशन ऑफ इंडिया द्वारा गुरुवार को यहां इंदिरा गांधी इंडोर स्टेडियम में आयोजित किया जा रहा है। सेन ने निशिमोटो को 21-19, 21-11 से हराकर क्वार्टर फाइनल में जगह बनाई, जबकि श्रीकांत फ्रांस के वर्ल्ड टूर फाइनल्स विजेता क्रिस्टो पोपोव से 21-14, 17-21, 21-17 से हार गए, और प्रणय सिंगापुर के आठवें वरीयता प्राप्त लोह कीन यू से 18-21, 21-19, 21-14 से हार गए। महिला सिंगल्स में भी भारत की चुनौती खत्म हो गई, जब चीनी पांचवीं वरीयता प्राप्त हान यू ने मालविका बंसोड़ को 21-18, 21-15 से हरा दिया।

निशिमोटो के खिलाफ पहले गेम के शुरुआती चरणों में सेन के लिए भी राह मुश्किल थी, क्योंकि भारतीय खिलाड़ी अपनी लय और स्ट्रोक की लंबाई खोजने में संघर्ष कर रहा था। इंडियन ऑयल के कर्मचारी पहले गेम में जापानी खिलाड़ी से 11-16 और फिर 14-18 से पीछे थे, लेकिन उन्होंने अपने प्रतिद्वंद्वी को लंबी रैलियों में उलझाए रखा और निशिमोटो के स्मैश को रोकने के लिए कुछ शानदार डिफेंसिव स्ट्रोक लगाए और वापसी की।

उन्होंने लगातार पांच अंक जीतकर बढ़त बनाई और फिर पहले ही मौके पर पहला गेम अपने नाम कर लिया। दूसरे गेम में सेन कहीं ज्यादा सटीक थे, उन्होंने अपनी गति में बदलाव किया और जब भी मौका मिला, हमला किया। जैसे-जैसे उनका आत्मविश्वास बढ़ा, 24 वर्षीय खिलाड़ी ने अपने हाफ स्मैश को चालाक ड्रॉप शॉट्स के साथ मिलाकर अपने प्रतिद्वंद्वी को अनुमान लगाने पर मजबूर किया और 50 मिनट में क्वार्टर फाइनल में अपनी जगह पक्की कर ली।

सेन ने जीत के बाद कहा, ''पहले गेम की शुरुआत में मुझे अपनी लय बनाने में थोड़ी दिक्कत हो रही थी और मैं शॉर्ट लिफ्ट कर रहा था, जिससे उसे ज़्यादा अटैक करने का मौका मिल रहा था। लेकिन फिर मैंने शटल को लंबा लिफ्ट करना शुरू किया और अच्छे से बचाव करने पर ध्यान दिया और मुझे लगता है कि इससे पहला गेम मेरे पक्ष में हो गया।'' लक्ष्य अब चीनी ताइपे के लिन चुन-यी का सामना करेंगे, जिन्होंने आयरलैंड के न्हाट गुयेन को 21-16, 21-17 से हराया।

दिन के दूसरे मैचों में, प्रणय ने लोह के खिलाफ पहला गेम जीता और दूसरे गेम में तीन गेम पॉइंट बचाकर उलटफेर भरी जीत के करीब पहुंच गए। लेकिन जब पूर्व विश्व चैंपियन ने निर्णायक गेम के लिए मजबूर किया, तो उसने मैच की गति बढ़ा दी और भारतीय खिलाड़ी अपने प्रतिद्वंद्वी की रणनीतिक चाल का मुकाबला नहीं कर पाया।

इससे पहले, श्रीकांत ने भी पोपोव के खिलाफ अपनी अटैकिंग क्षमताओं की झलक दिखाई, लेकिन फ्रांस के पहले वर्ल्ड टूर फाइनल्स पुरुष एकल चैंपियन की चुनौती को पार नहीं कर पाए।

श्री ओ.एन. दीक्षित मेमोरियल अंतर्राष्ट्रीय एमटी-400 टेनिस टूर्नामेंट कल से

जयपुर, 15 जनवरी। ओ. एन. दीक्षित मेमोरियल आईटीएफ एमटी-400, टेनिस टूर्नामेंट 17 से 21 जनवरी तक जय क्लब में आयोजित किया जाएगा। यह प्रतियोगिता स्वर्गीय श्री ओ. एन. दीक्षित-वरिष्ठ खिलाड़ी एवं खेल प्रोत्साहक-की स्मृति में उनके पुत्र श्री पंकज दीक्षित द्वारा आयोजित की जा रही है। टूर्नामेंट में भारत सहित स्लोवेनिया, कनाडा और घाना से लगभग 150 खिलाड़ी 30 से 75 आयु वर्ग में भाग लेंगे। अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ियों में स्लोवेनिया से बोजान गोरेनक व मोज्का नोक, कनाडा से आनंद मूर्ति व गुरसिमरन सिंह भुल्लर, तथा घाना से एनकेवेफी जोसेफ शामिल हैं।

राजस्थान के कई स्टार एवं अनुभवी खिलाड़ी, जिन्होंने भारत का प्रतिनिधित्व किया है, भी इस प्रतियोगिता में भाग लेंगे, जिनमें दिलीप शिवपुरी, अशोक जिंदल, ललित शर्मा, डॉ. दीपांकर चक्रवर्ती, शरद टाक, लक्ष्मीकांत, गुरधर्शन रमाना, सोहिनी कुमारी, जगदीश तंवर, रियाज अहमद एवं विकास चौधरी प्रमुख हैं। प्रतियोगिता के मुकाबले ग्रास, क्ले एवं सिंथेटिक कोर्ट पर खेले जाएंगे। कोलकाता के श्री जॉय मुखर्जी मुख्य रेफरी होंगे। टूर्नामेंट निदेशक श्री पंकज दीक्षित ने बताया कि यह आयोजन उनके पिता को दी जा रही एक सच्ची श्रद्धांजलि है।

वाशिंगटन सुंदर न्यूजीलैंड के खिलाफ ट्वंटी-20 सीरीज से हुए बाहर

नई दिल्ली, 15 जनवरी। चोट के कारण ऑलराउंडर वॉशिंगटन सुंदर न्यूजीलैंड के विरुद्ध होने वाली पांच मैचों की टी-20 सीरीज में नहीं खेल पाएंगे। सात फरवरी से शुरु होने वाले टी-20 विश्व से पहले होने वाली यह सीरीज महत्वपूर्ण मानी जा रही है। वॉशिंगटन वडोदरा में न्यूजीलैंड के खिलाफ पहले एकदिवसीय के दौरान वे साइड स्ट्रेन का शिकार हो गए थे और अभी तक इस चोट से पूरी तरह उबर नहीं पाए हैं। यह एकदिवसीय सीरीज 21 से 31 जनवरी खेली जायेगी।

भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) ने वॉशिंगटन की चोट को बाईं निचली पसली में अचानक हुई तकलीफ बताया है, हालांकि अभी यह स्पष्ट नहीं है कि वे विश्व कप तक पूरी तरह फिट हो पाएंगे या नहीं। भारत को टी-20 विश्व कप के उद्घाटन मैच में मुंबई में अमेरिका से भिड़ना है। वनडे सीरीज के लिए चयनकर्ताओं ने वॉशिंगटन की जगह दिल्ली के ऑलराउंडर आयुष बदोनी को टीम में शामिल किया था, लेकिन टी-20 स्क्वॉड में उनकी एंट्री होगी या नहीं, इस पर अभी कोई पुष्टि नहीं है।

न्यूजीलैंड के विरुद्ध टी-20 सीरीज में वॉशिंगटन की गैरमौजूदगी को लेकर भारतीय खेमा चिंतित नहीं है। अगले हफ्ते कई ऑलराउंडर टीम से जुड़ने वाले हैं, जिनमें हार्दिक पंड्या, अभिषेक शर्मा और शिवम दुबे शामिल हैं। इसके अलावा अक्षर पटेल की भी वापसी हो रही है, जो न्यूजीलैंड सीरीज और टी-20 विश्व कप दोनों में उपकप्तान की भूमिका निभाएंगे। हालांकि टीम को एक और झटका लगा है। वॉशिंगटन के अलावा तिलक वर्मा भी ग्रोइन इंजरी की सर्जरी के बाद शुरुआती तीन टी-20 मैचों के लिए उपलब्ध नहीं होंगे। न्यूजीलैंड के खिलाफ टी-20 सीरीज के लिए भारत की टीम इस प्रकार है:- सूर्यकुमार यादव (कप्तान), अभिषेक शर्मा, संजू सैमसन (विकेटकीपर), तिलक वर्मा (पहले तीन मैचों के लिए उपलब्ध नहीं), हार्दिक पंड्या, शिवम दुबे, अक्षर पटेल (उपकप्तान), रिंकू सिंह, जसप्रीत बुमराह, हर्षित राणा, अर्शदीप सिंह, कुलदीप यादव, वरुण चक्रवर्ती, वॉशिंगटन सुंदर और इशान किशन (विकेटकीपर)।

प्रणय और श्रीकांत दूसरे दौर में हारे

नई दिल्ली, 15 जनवरी। भारत की उम्मीद एच एस प्रणय और किदांबी श्रीकांत इंडिया ओपन के दूसरे दौर में गुरुवार को तीन गेमों के संघर्षपूर्ण मुकाबले में हार कर बाहर हो गये। प्रणय को आठवीं सीड सिंगापुर के लोह कीन यियू ने 18-21, 21-19, 21-14 से हराया। प्रणय पहला गेम जीतने का फायदा नहीं उठा पाये और अगले दो गेम हारकर मुकाबले से बाहर हो गये। श्रीकांत को पांचवीं सीड फ्रांस के क्रिस्टो पोपोव ने 21-14, 17-21, 21-17 से हराया। पूर्व नंबर एक श्रीकांत ने पहला गेम हारने के बाद दूसरे गेम में संघर्ष दिखाते हुए जीत हासिल की, लेकिन निर्णायक गेम हारकर वह भी टूर्नामेंट से बाहर हो गये। इस बीच महिला एकल में मालविका बंसोड़ को भी हार का सामना करना पड़ा। बंसोड़ को पांचवीं सीड हान युई ने 21-18, 21-15 से हराया। महिला एकल में भारत की सबसे बड़ी उम्मीद पीवी सिंधु बुधवार को पहले ही दौर में बाहर हो गयी थी।

राजस्थान राज्य टेबल टेनिस चैम्पियनशिप के लिए जयपुर जिला टीम जोधपुर रवाना

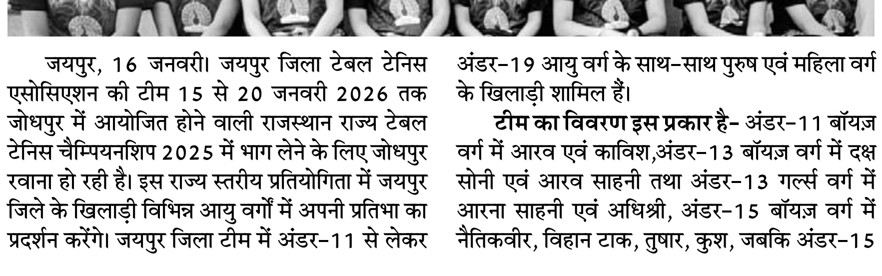

जयपुर, 16 जनवरी। जयपुर जिला टेबल टेनिस एसोसिएशन की टीम 15 से 20 जनवरी 2026 तक जोधपुर में आयोजित होने वाली राजस्थान राज्य टेबल टेनिस चैम्पियनशिप 2025 में भाग लेने के लिए जोधपुर रवाना हो रही है। इस राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में जयपुर जिले के खिलाड़ी विभिन्न आयु वर्गों में अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करेंगे। जयपुर जिला टीम में अंडर-11 से लेकर अंडर-19 आयु वर्ग के साथ-साथ पुरुष एवं महिला वर्ग के खिलाड़ी शामिल हैं।

टीम का विवरण इस प्रकार है- अंडर-11 बॉयज़ वर्ग में आरव एवं काविश,अंडर-13 बॉयज़ वर्ग में दक्ष सोनी एवं आरव साहनी तथा अंडर-13 गर्ल्स वर्ग में आरना साहनी एवं अधिश्री, अंडर-15 बॉयज़ वर्ग में नैतिकवीर, विहान टाक, तुषार, कुश, जबकि अंडर-15 गर्ल्स वर्ग में समृधि व्यास,आरना, प्रत्युशा एवं ख्याति शर्मा व अंडर-17 बॉयज़ वर्ग में हर्षवर्धन,अरिन्जय तथा अंडर-17 गर्ल्स वर्ग में ख्याति एवं अधिश्री चयनित हुई हैं। अंडर-19 बॉयज़ वर्ग में आरव आचार्य, अरिन्जय, नैतिकवीर, एवं भावित बिष्ट, जबकि अंडर-19 गर्ल्स वर्ग में राधिका, ख्याति, अधिश्री एवं मानविका सिंह जयपुर का प्रतिनिधित्व करेंगी। पुरुष वर्ग में सौरभ कपूर, हर्षवर्धन, अरिन्जय, आरव आचार्य एवं राहुल महावर तथा महिला वर्ग में नंदिनी नागोरी, अनुष्का, राधिका सोनी, ख्याति शर्मा एवं मानविका सिंह टीम का हिस्सा हैं। जयपुर जिला टेबल टेनिस एसोसिएशन के मानद सचिव सचित गुप्ता ने व वेटरन कमेटी के अध्यक्ष अजय ओझा व सचिव दीपांक दास ने सभी खिलाड़ियों को व टीम के कोच श्री संजीव पारूई को शुभकामनाएँ देते हुए कहा कि टीम ने प्रतियोगिता के लिए कड़ी मेहनत की है और उन्हें उम्मीद है कि जयपुर के खिलाड़ी उत्कृष्ट प्रदर्शन कर जिले का नाम रोशन करेंगे।

राज सिंह डूंगरपुर अंडर-14 ट्रॉफी : पंजाब-राजस्थान अंडर-23 अभ्यास टेस्ट मैच के पहले दिन का स्कोर

जयपुर, 15 जनवरी, इंदौर में आज से शुरू हुए राजस्थान - छत्तीसगढ़ अंडर 14 राज सिंह डूंगरपुर ट्रॉफी मैच के पहले दिन राजस्थान के उत्सव शर्मा अर्धशतक से चुके। प्रतियोगिता के पहले दिन का स्कोर :-

राजस्थान पहली पारी 213 आल आउट

टीम के लिए उत्सव शर्मा 47, अभिमन्यु चौधरी नाबाद 36, अनमोल शर्मा 33, मयूर शर्मा 29, दिव्यांशुधतरवाल27 व गौरव पुनिया 19 रनो का योगदान दिया।

छतत्तीगढ़ के गेंदबाज हर्ष साहू 48 / 4

छत्तीसगढ़ पहली पारी 102 / 2

राजस्थान के गेंदबाज लवमीत गुर्जर व गौरव पुनिया 1 - 1 विकेट।

राजस्थान - पंजाब अंडर 23 ट्रॉफी (प्रैक्टिस टेस्ट मैच)

मोहली, पंजाब में आज से शुरू हुए राजस्थान - पंजाब अंडर 23 प्रैक्टिस टेस्ट मैच के पहले दिन का स्कोर :-

राजस्थान पहली पारी 166 / 5

राजस्थान के सलामी बल्लेबाज सुमित गोदारा व विकेट कीपर बल्लेबाज दर्शन जैन ने शानदार नाबाद अर्धशतकीय पारियां खेलते हुए टीम को संकट से उबारा, राजस्थान के 5 विकेट मात्र 49 रन के स्कोर पर गिर गए थे, सुमितगोदरासे दर्शन जैन ने छटेविकेट के लिए शानदार नाबाद 117 रनो के साझेदारी करते हुए टीम को मजबूत किया, टीम के लिएसुमित गोदारा नाबाद 74 व दर्शन जैन नाबाद 57 रन। पंजाब के गेंदबाज गर्व कुमार 22 / 3 व आराधयशुक्ला 41 / 2 विकेट प्राप्त किये।

भारतीय सेना ने गुरुवार को जयपुर के जगतपुरा स्थित महल रोड पर अपना 78वां सेना दिवस सैन्य गौरव व अनुशासन के साथ मनाया। इस अवसर पर राज्यपाल हरिभाऊ किसनराव बागडे, मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा, मिजोरम के राज्यपाल जनरल (रि.) वीके सिंह, चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ जनरल अनिल चौहान, सप्तशक्ति कमान के सेना कमांडर लेफ्टिनेंट जनरल मनजिंदर सिंह मौजूद थे।

पहली बार किसी असैन्य क्षेत्र में हुआ सेना दिवस परेड का भव्य आयोजन- भजनलाल

थल सेनाध्यक्ष जनरल उपेन्द्र द्विवेदी ने परेड का निरीक्षण कर सलामी ली

■ **जयपुर में आयोजित इस ऐतिहासिक प्रदर्शन को देखने मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के अलावा राजस्थान के राज्यपाल बागड़े, मिज़ोरम के राज्यपाल जनरल (रि.) वी.के. सिंह, चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ जनरल अनिल चौहान, सप्त शक्ति कमान के सेना कमांडर जे. जनरल मनजिन्दर सिंह अनेक सैन्य व नागरिक गणमान्य जन उपस्थित थे।**

जयपुर, 15 जनवरी। भारतीय सेना ने 78वां सेना दिवस गुरुवार को जयपुर के जगतपुरा स्थित महल रोड पर पूरे सैन्य गौरव व अनुशासन के साथ मनाया। यह चौथा अवसर है, जब सेना दिवस परेड दिल्ली के बाहर आयोजित हुई और पहली बार किसी असैन्य क्षेत्र में आयोजित की गई। राजस्थान को पहली बार इस ऐतिहासिक आयोजन की मेजबानी का गौरव प्राप्त हुआ।

सैन्य उत्कृष्टता, गौरवशाली परंपराओं और राष्ट्रीय गौरव के भव्य एवं ऐतिहासिक प्रदर्शन को देखने के लिए राज्यपाल हरिभाऊ किसनराव बागडे, मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा, मिजोरम के राज्यपाल जनरल (रि.) वीके सिंह, चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ जनरल अनिल चौहान, सप्तशक्ति कमान के सेना कमांडर लेफ्टिनेंट जनरल मनजिंदर सिंह सहित, अनेक सैन्य व नागरिक एवं गणमान्य जन उपस्थित रहे।

थल सेनाध्यक्ष जनरल उपेन्द्र द्विवेदी ने परेड का निरीक्षण कर सलामी ली। दक्षिण पश्चिम कमान के चीफ ऑफ स्टाफ लेफ्टिनेंट जनरल हरविंदर सिंह ने भव्य परेड का नेतृत्व किया। सेना दिवस परेड में भारतीय सेना ने अपने शौर्य, साहस और अजेय शक्ति का प्रदर्शन किया।

परेड में परमवीर चक्र, अशोक चक्र, महावीर चक्र, कीर्ति चक्र एवं वीर चक्र विजेता भी विशेष मेहमान के रूप में शामिल हुए। स्वदेशी ब्रह्मोस मिसाइल, भीष्म एवं अर्जुन टैंक, के-9 वज्र तोप, बीएमपी वाहन, 155 एमएम अमोघ, नामिस (नाग मिसाइल सिस्टम), पिनाक रॉकेट लॉन्चर सिस्टम, शिल्का हथियार प्रणाली, ड्रोन शक्ति, ड्रोन जैमर तकनीक, इलेक्ट्रिक ऑल टैरेन व्हीकल के प्रदर्शन आकर्षण का विशेष केन्द्र रहे।

नव गठित भैरव बटालियन सहित, भारतीय सेना की 7 रेजीमेंट की टुकड़ियों ने मार्च पास्ट किया।

परेड से पहले, ऑपरेशन 'सिंदूर' एवं अन्य अभियानों में अदम्य साहस और वीरता के लिए शूरवीरों, सूबेदार मेजर पवन कुमार, हवलदार सुनील कुमार सिंह, लांस नायक दिनेश कुमार, लांस नायक सुभाष कुमार और लांस नायक प्रदीप कुमार को मरणोपरांत 'सेना मेडल (गैलेंट्री)' से सम्मानित किया गया।

तीन चेतक हेलीकॉप्टरों ने तिरंगा एवं संयुक्त सेनाध्वज के साथ पुष्प वर्षा कर और अपाचे सहित, विभिन्न हैलीकॉप्टर्स ने एयरोहेड व अन्य फॉर्मेशन से परेड को भव्य रूप दिया। सेना सेवा कोर के टोरनैडो के बाइक्स पर व पैराट्रूपर्स के आसमान में हैरतअंगेज करतबों और परेड के समापन पर नाल एयरबेस से आए तीन जगुआर लड़ाकू विमानों की गर्जना ने सभी को रोमांचित कर दिया।

बड़ी संख्या में गणमान्य जन, नागरिक, वेटरन्स, युवा और छात्र-छात्राएं इस ऐतिहासिक आयोजन के साक्षी बने।

ईरान ने 16 भारतीय क्रू सदस्य को हिरासत में लिया

नई दिल्ली, 15 जनवरी। ईरान में जारी सरकार विरोध प्रदर्शन के बीच एक बड़ी खबर सामने आ रही है। ईरान की रिवोल्यूशनरी गार्ड कॉर्प्स (आईआरजीसी) ने जहाज एमटी वैलियंट रोअर के 16 भारतीय क्रू मेंबर्स को हिरासत में ले लिया है। इस

■ **ये सभी लोग जहाज एमटी वैलियंट रोअर के क्रू मैम्बर्स हैं**

जहाज को 8 दिसंबर 2025 को यूएई के दिब्बा पोर्ट के पास अंतरराष्ट्रीय समुद्री इलाके में रोका गया था। ईरानी अधिकारियों का आरोप है कि जहाज पर 6,000 मीट्रिक टन ईंधन की तस्करी की जा रही थी। इस जहाज पर काम कर रहे थर्ड इंजीनियर केतन मेहता के परिवार की चिंता लगातार बढ़ती जा रही है।

केतन के पिता मुकेश मेहता ने बताया कि उनके बेटे की आखिरी बार आवाज उन्होंने 31 दिसंबर 2025, यानी नए साल की पूर्व संध्या पर सुनी थी। उस समय केतन ने अपने माता-पिता को भरोसा दिलाया था कि वह सुरक्षित है। केतन का मोबाइल फोन खो जाने के कारण वह सीधे अपने परिवार से बात नहीं कर पा रहा था।

केतन अपने एक साथी क्रू मेंबर, ऑइलर पोथी दिवाकर के फोन से संपर्क कर रहा था। हाल ही में जब केतन के पिता ने दिवाकर से बात की, तो उन्हें बताया गया कि आईआरजीसी ने आधिकारिक तौर पर 10 क्रू मेंबर्स को गिरफ्तार कर लिया है, जिनमें केतन भी शामिल है।

परिवार ने इस मामले में विदेश मंत्रालय (एमईए) और भारतीय दूतावास से संपर्क किया है। मुकेश मेहता ने बताया कि एमईए ने हमसे केतन के पासपोर्ट की जानकारी मांगी थी, जो हमने तुरंत दे दी। लेकिन इसके बाद से हमें कोई जानकारी नहीं मिली है। न कोई साफ जवाब है, न ही कोई भरोसा।

क्या लालू परिवार का ''रीयूनियन'' सन्निकट है

पार्टी से निष्कासित पुत्र तेज प्रताप के घर दही चूड़ा पार्टी में लालू प्रसाद शामिल हुए

■ **तेज प्रताप यादव ने इस कार्यक्रम के लिए लालू यादव के साथ छोटे भाई तेजस्वी को भी बुलाया था। तेज प्रताप ने लालू, माँ राबड़ी देवी, भाई तेजस्वी और भतीजी कात्यायनी के साथ तस्वीरें सोशल मीडिया पर पोस्ट कीं।**

■ **ज्ञातव्य है कि 8 माह पहले लालू यादव ने तेज प्रताप को परिवार से निकाल दिया था। क्योंकि तेज प्रताप ने एक लड़की अनुष्का यादव के साथ एक तस्वीर पोस्ट की और कहा कि वे दोनों 12 साल से साथ हैं।**

■ **इसके बाद काफी बवाल हुआ लोगों ने सवाल किया कि फिर तेज प्रताप ने राजद नेता चंद्रिका राय की बेटी एश्वर्या से शादी क्यों की थी। हालांकि बाद में तेज प्रताप ने पोस्ट डिलीट कर दी थी।**

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 15 जनवरी। फेसबुक पोस्ट को लेकर अपने बड़े बेटे तेज प्रताप यादव को पार्टी से निष्कासित करने के लगभग आठ महीने बाद, राष्ट्रीय जनता दल (राजद) के संस्थापक और वरिष्ठ नेता लालू प्रसाद यादव मकर संक्रांति के अवसर पर आयोजित दही-चूड़ा भोज में शामिल होने के लिए तेज प्रताप के घर पहुंचे।

ज्ञातव्य है कि एक दिन पहले पूर्व मंत्री और पूर्व विधायक तेज प्रताप यादव ने अपने पिता लालू प्रसाद यादव और छोटे भाई तेजस्वी यादव, जो बिहार विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष हैं, को दही-चूड़ा कार्यक्रम में आमंत्रित किया था।

तेज प्रताप का यह निमंत्रण और लालू यादव का उनके घर आना इसलिए अहम माना जा रहा है, क्योंकि इससे राजद के इस प्रथम परिवार के भीतर सुलह के संकेत मिलते हैं। नवंबर में हुए बिहार विधानसभा चुनाव से इसका महत्व और बढ़ गया है। इस चुनाव में राजद को हार का सामना करना पड़ा, जबकि एनडीए ने बड़ी जीत दर्ज की। चुनाव के दौरान राजद का प्रथम परिवार विभाजित नज़र आया था। तेज प्रताप ने जनशक्ति जनता दल के बैनर तले अलग से चुनाव लड़ा था। राजद को जहां 25 सीटें मिलीं, वहीं तेज प्रताप की पार्टी को एक भी सीट नहीं मिली थी।

इस पृष्ठभूमि में, इस पारिवारिक मिलन को इस कठिन समय में राजद के प्रथम परिवार की ओर से एकता का संदेश माना जा रहा है। दरअसल, बुधवार को पटना स्थित अपने पिता के 10, सर्कुलर रोड आवास पर जाने के बाद, तेज प्रताप ने लालू प्रसाद यादव, तेजस्वी यादव, मां राबड़ी देवी और भतीजी कात्यायनी के साथ की तस्वीरें पोस्ट कीं। गुरुवार के कार्यक्रम में लालू प्रसाद यादव की मौजूदगी के साथ यह माना जा रहा है कि रिश्तों में एक नया अध्याय शुरू हो सकता है।

लालू प्रसाद यादव ने मई महीने में तेज प्रताप को, उनके रिश्ते की स्थिति से जुड़े एक सोशल मीडिया पोस्ट को लेकर, पार्टी से निष्कासित कर दिया था, हालांकि इस पोस्ट को बाद में हटा भी लिया गया था। निष्कासन की घोषणा करते हुए लालू प्रसाद यादव ने कहा था कि निजी जीवन में ''नैतिक मूल्यों की अनदेखी'' सामाजिक न्याय के लिए समुदाय के संघर्ष को कमजोर करती है।

विवाद के केन्द्र में तेज प्रताप की एक महिला के साथ तस्वीर थी। पोस्ट में महिला की पहचान अनुष्का यादव के रूप में की गई थी और कहा गया था कि अनुष्का यादव और राजद नेता पिछले 12 वर्षों से रिश्ते में हैं। पोस्ट में लिखा था, ''मैं तेज प्रताप यादव हूं और इस तस्वीर में मेरे साथ जो लड़की दिख रही है, वह अनुष्का यादव है। हम पिछले 12 वर्षों से एक-दूसरे को जानते हैं और एक-दूसरे से बहुत ज्यादा प्यार करते हैं। इन वर्षों में हमारे सम्बंध निरन्तर रहे हैं। मैं काफी समय से यह बात आप सभी से शेयर करना चाहता था, लेकिन सही शब्द नहीं मिल पा रहे थे। आज, इस पोस्ट के माध्यम से, मैं अपना दिल आपके सामने खोल रहा हूं। उम्मीद है, आप सभी (स्थिति को) समझेंगे।''

इस पोस्ट पर तीखी प्रतिक्रियाएं आईं और कई लोगों ने सवाल उठाया कि अगर तेज प्रताप पहले से रिश्ते में थे तो उन्होंने 2018 में बिहार के पूर्व मंत्री चंद्रिका राय की बेटी ऐश्वर्या से शादी क्यों की। ज्ञातव्य है कि शादी के कुछ ही महीनों बाद, तेज प्रताप और ऐश्वर्या अलग हो गए थे।

कुछ ही समय बाद यह पोस्ट हटा ली गई और तेज प्रताप ने दावा किया कि उनका प्रोफाइल हैक हो गया था। उन्होंने लिखा, ''मेरा सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म हैक कर लिया गया था और मेरी तस्वीरों को गलत तरीके से एडिट किया गया।''

तेज प्रताप को पार्टी से निकालने के लालू यादव के फैसले का परिवार के अन्य सदस्यों, जिनमें तेजस्वी यादव भी शामिल थे, ने समर्थन किया था। बाद में तेज प्रताप ने अपनी अलग पार्टी बनाई और कुछ सीटों पर राजद को चुनौती दी, लेकिन उन्हें एक भी सीट नहीं मिली।

पाकिस्तान, बांग्लादेश ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

अमेरिका का भारत के लिए यह फैसला अमेरिका के ''भरोसेमंद साझेदार'' के रूप में उसका दर्जा और मजबूत करता है। भारतीय अधिकारियों ने न्यूज18 को बताया कि इससे कुशल प्रवास, उच्च शिक्षा में दाखिले और तकनीकी साझेदारी को बढ़ावा मिलने की उम्मीद है, खासकर स्वास्थ्य, आईटी और इंजीनियरिंग जैसे क्षेत्रों में, जहां भारतीय पेशेवर अमेरिकी अर्थव्यवस्था के लिए अहम हैं। इससे आगे चलकर कार्य वीज़ा, टैलेंट मोबिलिटी फ्रेमवर्क और इनोवेशन आधारित सहयोग पर द्विपक्षीय बातचीत में भारत की स्थिति भी मजबूत हो सकती है।

अमेरिकी विदेश विभाग ने स्पष्ट किया है कि यह रोक पहले से जारी वैध वीज़ा को रद्द नहीं करेगी, लेकिन अगले मंगलवार से सूचीबद्ध देशों के लिए नए इमिग्रेंट वीज़ा अपॉइंटमेंट रोक दिए जाएंगे। कुल मिलाकर, ऐसे समय में, जब प्रवास नीति जोखिम आकलन और आर्थिक उपयोगिता से तय हो रही है, भारत को यह फैसला एक अनुकूल स्थिति में रखता है। भारतीय आवेदकों के लिए इससे अनिश्चितता कम होती है और भारत की छवि एक भरोसेमंद, कुशल और आत्मनिर्भर प्रवासियों के स्रोत के रूप में और मजबूत होती है।

राज्यसभा के ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

लेकिन अगर उन्हें फिर से नामित नहीं किया गया तो नया उपसभापति आने से और अस्थिरता पैदा हो सकती है।

दूसरा विकल्प यह है कि भाजपा ही हरिवंश को दोबारा नामित कर दे, लेकिन भाजपा के सूत्रों का कहना है कि वे वोट के लिहाज से कोई फायदा नहीं पहुंचाते और पार्टी के लिए खास उपयोगी साबित नहीं होते।

दिलचस्प बात यह है कि लगातार लोकसभा चुनाव जीतने के बावजूद प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी न तो अपने मंत्रिमंडल में और न ही अन्य महत्वपूर्ण पदों पर कोई बदलाव कर पाए हैं। वर्ष 2024 के लोकसभा चुनाव से पहले जो लोग सत्ता में थे, उन्हें ही जारी रखा गया क्योंकि मोदी-शाह की जोड़ी किसी भी बदलाव को लेकर असुरक्षित महसूस कर रही थी।

यहां तक कि लोकसभा अध्यक्ष ओम बिड़ला को भी दोबारा लोकसभा अध्यक्ष (स्पीकर) बनाए जाने पर सुखद आश्चर्य हुआ था, क्योंकि इस पद पर बदलाव की उम्मीद की जा रही थी।

तब से लेकर अब तक, मोदी अपने मंत्रिपरिषद में फेरबदल नहीं कर पाए हैं, जबकि पिछले एक साल से बदलाव की अटकलें लगातार लग रही थीं। ऐसे माहौल में हरिवंश का भविष्य अधर में लटका हुआ है।

बिहार से भाजपा को दो सीटें मिलेंगी, जद (यू) को दो और एक सीट चिराग पासवान को मिलने की संभावना है। कहा जा रहा है कि पासवान मां को भी नामित किया जा सकता है, भले ही उनके पास पूरे नंबर न हों।

ईरान में सत्ता ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

मार्ग की पहुँच से वंचित किए जाने के कारण, ईरान भारत के लिए पश्चिम की ओर संपर्क का भरोसेमंद जरिया बनकर उभरा है। भारत की रणनीति का केन्द्र ईरान का चाबहार बंदरगाह है, जिसे नई दिल्ली को ईरानी तट तक सीधी पहुँच देने के लिए विकसित किया गया है। यह बंदरगाह पाकिस्तान को दर गुजर करते हुए, भूमि और रेल नेटवर्क के जरिए भारत को मध्य एशिया से जोड़ता है।

हालांकि, ऐसे सभी संपर्क गलियारों के लिए देशों के बीच राजनीतिक सामंजस्य, सुरक्षा की गारंटी और दीर्घकालिक योजना आवश्यक होती है। तेहरान में किसी भी प्रकार का सत्ता परिवर्तन इन सभी तत्वों को खतरे में डाल सकता है।

फ्रांस से 114 ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

सूत्रों ने बताया कि मौजूदा परिस्थितियों में राफेल भारतीय वायु सेना की लड़ाकू विमानों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए सबसे उपयुक्त पाया गया है, क्योंकि इसकी सेवायोग्यता लगभग 90 प्रतिशत है, जो अमेरिकी एफ-35 सहित, दुनिया के किसी भी अन्य विमान की तुलना में कहीं अधिक है।

गौरतलब है कि भारतीय वायु सेना बहु-विक्रेता निविदा में चयन होने के बाद से ही 114 राफेल लड़ाकू विमानों की खरीद के लिए लंबे समय से प्रयास कर रही है। भारतीय वायु सेना लड़ाकू विमानों के स्क्वाड्रनों की घटती संख्या की समस्या से जूझ रही है और इंजनों से संबंधित समस्याओं के साथ-साथ विदेशी निर्मित उपकरणों को हल्के लड़ाकू विमान (एलसीए) मार्क 1ए विमान में एकीकृत करने में आ रही दिक्कतों के कारण स्वदेशी परियोजना में भी देरी हो रही है।

बीएमसी चुनाव में भाजपा गठबंधन को बहुमत का संकेत

तीन एग्ज़िट पोल नतीजों में भाजपा को आगे बताया गया है

■ **एग्ज़िट पोल्स के अनुसार ठाकरे बंधुओं को मराठा और मुस्लिम वोटों का फायदा मिलता दिख रहा है पर भाजपा को उत्तर भारतीय, दक्षिण भारतीय और अन्य का भारी समर्थन मिलने के संकेत हैं।**

मुंबई, 15 जनवरी। मुंबई के सबसे ताकतवर नगर निकाय बृहन्मुंबई महानगरपालिका (बीएमसी) के चुनाव को लेकर आए एग्जिट पोल में भाजपा और एकनाथ शिंदे की शिवसेना को बढ़त मिलती दिख रही है। तीन अलग-अलग एग्जिट पोल्स के मुताबिक, सत्ता की दौड़ में यह गठबंधन आगे है।

एग्जिट पोल्स का कहना है कि उद्धव ठाकरे और राज ठाकरे की एकजुट शिवसेना (यूबीटी) और मनसे को मराठा और मुस्लिम वोटों का फायदा मिल सकता है। वहीं, उत्तर भारतीय और दक्षिण भारतीय मतदाताओं ने बड़ी संख्या में भाजपा का समर्थन किया है।

रुझानों के मुताबिक, युवा मतदाता और महिलाएं भी इस बार बीजेपी के पक्ष में झुकी नजर आ रही हैं। हालांकि, यह भी साफ किया गया है कि एग्जिट पोल हमेशा सही साबित हों, ऐसा जरूरी नहीं है। जेवीसी एग्जिट पोल के अनुसार, भाजपा को 138 सीटें मिल सकती हैं, जबकि उद्धव ठाकरे की शिवसेना (यूबीटी) और राज ठाकरे की मनसे को मिलाकर 59 सीटें मिलने का अनुमान है। इस सर्वे में कांग्रेस को 23 सीटें मिलने की संभावना जताई गई है।

एक्सिस माई इंडिया का अनुमान है कि भाजपा और शिंदे की शिवसेना को मिलाकर 131 से 151 सीटें मिल सकती हैं। वहीं, शिवसेना (यूबीटी) गठबंधन को 58 से 68 सीटें मिलने का अनुमान जताया गया है।

सकल एग्जिट पोल के मुताबिक, भाजपा और शिवसेना को 119 सीटें, जबकि शिवसेना (यूबीटी) को 75 सीटें मिल सकती हैं। इस पोल में कांग्रेस को 20 से ज्यादा सीटें मिलने की संभावना नहीं जताई गई है।

रांची में ईडी अफसरों पर एफआईआर

■ **एक पीड़ित ने पूछताछ के नाम पर मारपीट का आरोप लगाया व शिकायत दर्ज की इसके बाद पुलिस ईडी दफ्तर पहुंची।**

रांची, 15 जनवरी। झारखंड की राजधानी रांची में प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) के अधिकारियों पर पूछताछ के नाम पर मारपीट करने का गंभीर आरोप सामने आया है। इस मामले की जांच को लेकर गुरुवार सुबह रांची के एयरपोर्ट थाना की पुलिस भारी संख्या में ईडी कार्यालय पहुंची और जांच शुरू की। एयरपोर्ट थाना में दर्ज एफआईआर के आधार पर पुलिस अधिकारियों ने ईडी कार्यालय के भीतर जाकर सीसीटीवी फुटेज खंगाले और संबंधित अधिकारियों से पूछताछ की। पीड़ित संतोष कुमार ने आरोप लगाया है कि 12 जनवरी को ईडी कार्यालय में पूछताछ के दौरान उन पर जबरन जुर्म कबूल करने का दबाव बनाया गया। उनका दावा है कि ईडी के अफसर प्रतीक और शुभम ने उनके साथ बेरहमी से मारपीट की, जिससे उनका सिर फट गया। इसके बाद उन्होंने एयरपोर्ट थाना में प्राथमिकी दर्ज कराई। मामले की गंभीरता को देखते हुए सदर डीएसपी, सिटी डीएसपी, एयरपोर्ट थाना प्रभारी और एक इंस्पेक्टर स्वयं ईडी कार्यालय पहुंचे और साक्ष्य संकलन में जुटे रहे।

ईरान ने हवाई क्षेत्र ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

उसने यात्रियों को हवाई अड्डों के लिए निकलने से पहले उड़ान की स्थिति की जानकारी लेने की सलाह दी है और इस असुविधा के लिए खेद जताया है।

सूत्रों ने बताया है कि एयर इंडिया की अमेरिका जाने वाली तीन उड़ानें रद्द की गयी हैं। अन्य उड़ानों के मार्ग बदले गये हैं।

निजी विमान सेवा कंपनी इंडिगो ने भी ''ईरान द्वारा अचानक हवाई क्षेत्र बंद किये जाने'' का हवाला देते हुए एक्स पर बताया है कि उसकी कुछ अंतरराष्ट्रीय उड़ानों पर असर पड़ा है। उसने स्थिति पर खेद जताते हुए कहा है कि यह स्थिति एयरलाइंस के नियंत्रण से परे है।

विधानसभा चुनावों की तैयारी में जुटी कांग्रेस

■ **असम, केरल, तमिलनाडु और पश्चिम बंगाल में अगले कुछ महीनों में विधानसभा चुनाव होने वाले हैं**

नयी दिल्ली, 15 जनवरी। कांग्रेस पार्टी असम, तमिलनाडु, केरल और पश्चिम बंगाल में चुनावी तैयारी में जुट गयी है, जहां अगले कुछ महीनों में विधानसभा चुनाव संभावित है। इन राज्यों के नेताओं को एक-एक करके दिल्ली बुलाया जा रहा है और पहली बैठक 16 जनवरी को होगी।

कांग्रेस असम विधानसभा चुनाव में कोई कोर कसर नहीं छोड़ना चाहती है। यही वजह है कि पार्टी के बड़े नेताओं को लगातार बड़ी ज़िम्मेदारी असम में दी जा रही है। सूत्रों के मुताबिक, असम विधानसभा चुनाव के लिए कांग्रेस ने 16 जनवरी को दिल्ली इंदिरा भवन में बैठक बुलाई है।

बैठक में कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे, कांग्रेस नेता राहुल गांधी, राष्ट्रीय महासचिव केसी वेणुगोपाल, असम कांग्रेस प्रभारी जितेन्द्र सिंह, असम अध्यक्ष गौरव गोगोई सहित प्रदेश के कुछ और वरिष्ठ नेता शामिल होंगे। इस बैठक में असम में होने वाले विधानसभा चुनाव के मद्देनजर मंथन किया जाएगा। चुनावी मुद्दे, संगठन की स्थिति, असम मुख्यमंत्री के चुनावी अभियान को चुनौती देने की रणनीति पर चर्चा की जाएगी।

अभिषेक सिंघवी, सिब्बल ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

एन्फोर्समैंट डायरैक्टोरेट (ईडी) की याचिका को सही माना और मुख्यमंत्री ममता बनर्जी तथा उनके साथ गए वरिष्ठ पुलिस अधिकारियों को नोटिस जारी किये, जिन्होंने उनके निर्देशों पर काम किया था।

ईडी ने अदालत में कहा कि ममता बनर्जी ने जांच में दखल दिया और जरूरी दस्तावेजों की तलाशी व जब्ती को रोका। ईडी का आरोप है कि वे पुलिस की मदद से संबंधित फाइलें, दस्तावेज और इलेक्ट्रॉनिक उपकरण अपने साथ ले गईं।

एडवोकेट जनरल तुषार मेहता ने दलील दी कि ममता बनर्जी ने जरूरी सामग्री की चोरी की और स्थानीय पुलिस की मदद से इन दस्तावेजों को वहां से ले गईं। अब सुप्रीम कोर्ट ने ममता बनर्जी को 3 फरवरी तक जवाब देने का निर्देश दिया है।

पश्चिम बंगाल सरकार ने ईडी के उस मामले का विरोध किया, जिसमें ममता बनर्जी पर उस जगह जबरन घुसने का आरोप है, जहां ईडी आपत्तिजनक सामग्री बरामद करने के लिए छापा मार रही थी। ईडी बंगाल के करोड़ों रुपये के कोयला घोटाले की छानबीन कर रही थी।

ईडी का कहना है कि उसे लीज पर दिए गए कोयला क्षेत्रों से अवैध खनन और निजी कंपनियों को कोयला बेचने के पर्याप्त सबूत मिले हैं। इस घोटाले की रकम को बाद में हवाला चैनल के जरिए इधर-उधर किया गया।

कोयला घोटाले का मामला 2024 में शुरू हुआ था और ईडी धीरे-धीरे चार्जशीट तैयार कर रही था और सुरागों के जरिए आगे बढ़ रही थी। इसी सिलसिले में ईडी प्रतीक जैन के घर और कोलकाता में आई-पैक के दफ्तर पर छापा मार रही थी, ताकि गलत कामों के सबूत जुटाए जा सकें।

इतने गंभीर आर्थिक अपराधों की जांच में मदद करने के बजाय, ममता बनर्जी ने मुख्यमंत्री के रूप में अपनी पूरी ताकत लगाकर ईडी की जांच रोक दी, जिससे एजेंसी को वहाँ से खाली हाथ लौटना पड़ा।

ममता बनर्जी के वकीलों ने सुप्रीम कोर्ट में मामला टालने की पूरी कोशिश की और कहा कि यह विषय पहले से ही कलकत्ता हाई कोर्ट में चल रहा है। हालांकि आरोप है कि तृणमूल कांग्रेस के गुंडों ने कलकत्ता हाई कोर्ट में सुनवाई के दौरान कोर्ट रूम को जाम कर दिया, जिससे ईडी के वकील अपनी बात ठीक से नहीं रख सके।

एडवोकेट जनरल ने कहा कि मुख्यमंत्री ममता बनर्जी की कार्रवाई ''चोरी'' है और जांच रोकने के बाद, वे सड़क पर धरना देने चली गईं। उन्होंने कहा कि अगर उन्हें बिना सजा के छोड़ दिया गया तो इससे अधिकारियों का मनोबल टूटेगा और भविष्य में वे अपने कर्तव्य निभाने से डरेंगे।

तृणमूल कांग्रेस ने यह दिखाने की कोशिश की कि आई-पैक के दफ्तर में पार्टी की गुप्त चुनावी रणनीति से जुड़े काफी कागजात थे और चुनाव से पहले इन्हें ले जाना पार्टी के लिए नुकसानदेह होता। सुप्रीम कोर्ट इस तर्क से प्रभावित नहीं दिखा और मुख्यमंत्री को अगली सुनवाई से पहले जवाब देने का निर्देश दिया।

'चार ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

सिंह ने कहा कि वर्ष 2026 में देश के चार प्रमुख महानगरों-दिल्ली, मुंबई, चेन्नई और पुणे-में कुल 200 स्थापित किए जाएंगे। प्रत्येक महानगर में 50-50 मौसम स्टेशन लगाए जाएंगे, जिससे शहरी क्षेत्रों में अत्यंत स्थानीय और वास्तविक समय पर आधारित मौसम पूर्वानुमान संभव हो सकेगा। इस अवसर पर वरिष्ठ अधिकारी, वैज्ञानिक, मौसम विशेषज्ञ और अन्य हितधारक उपस्थित थे। इस अवसर पर केन्द्रीय मंत्री ने आईएमडी परिसर में मॉडल ऑब्ज़र्वेटरी, 3डी-प्रिंटेड स्वचालित मौसम स्टेशन और स्वचालित एग्रो मौसम स्टेशन का उद्घाटन भी किया।

समापन में डॉ. जितेन्द्र सिंह ने कहा कि सरकार देशभर में सेंटर ऑफ एक्सीलेंस और नए क्षेत्रीय मौसम विज्ञान केंद्र स्थापित करने की दिशा में काम कर रही है। उन्होंने विश्वास जताया कि जैसे-जैसे आईएमडी अपने 152वें वर्ष में प्रवेश करेगा, उसकी सटीकता, विश्वसनीयता और जनविश्वास और भी मजबूत होगा।

क्या हाईकोर्ट एस.आई. भर्ती ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

कि परीक्षा इसलिए रद्द की जानी चाहिए, क्योंकि यह मामला व्यापक पेपर लीक व चीटिंग का है, जिसमें सम्पूर्ण जांच करना असंभव है क्योंकि परीक्षा के तीनों दिन पेपर लीक कर ''वॉट्सऐप'' के माध्यम से अभ्यर्थियों के साथ साझा कर दिया गया था, जिससे विस्तृत रूप से अलग-अलग केन्द्रों तक यह पेपर मुहैया कराया जा सकता था।उन्होंने कहा कि इस मामले में करीब 12 इनामी आरोपी अभी भी फरार हैं, जो हरियाणा और उत्तर प्रदेश के गिरोह से सम्बन्ध रखते हैं। इसलिए इनके खिलाफ जांच करना मुश्किल है। उन्होंने कहा कि एक आरोपी की संदिग्ध तौर पर मौत भी हो चुकी है, जिससे यह भी पता नहीं लगाया जा सकता कि उसने किस-किस को पेपर बेचा था।मामले की सुनवाई के दौरान अपीलार्थियों की ओर कहा गया था कि याचिकाकर्ता कैलाश चन्द्र ने अपनी याचिका व शपथ पत्र में कुछ अनिवार्य तथ्यों को उजागर नहीं किया था, जैसे उन्होंने दो बार याचिका दायर की थी और यह भी नहीं जाहिर किया था कि उन्हें जांच की रिपोर्ट कैसे मिली, वह सार्वजनिक दस्तावेज नहीं था। इस पर याचिकाकर्ताओं के वकील वरिष्ठ अधिवक्ता आर.पी. सिंह ने कहा कि इस मामले में 22 याचिकाकर्ता हैं और प्रमोद कुमार की याचिका में भी वही तथ्य व एस.ओ.जी. की रिपोर्ट संलग्न है, जो कैलाश चन्द्र की याचिका में थी। उन्होंने अदालत में कहा कि मामले को प्रारंभिक आपत्तियों व तकनीकी आधारों पर तय नहीं किया जाना चाहिए बल्कि तथ्यों को सुनकर किया जाना चाहिए, क्योंकि यह मामला वृहद स्तरीय जनहित से जुड़ा है। इस मामले में एक पहलू यह भी है कि प्रदेश के महाधिवक्ता ने भी राज्य सरकार को सलाह दी थी कि एस.आई. भर्ती परीक्षा-2021 रद्द कर दी जानी चाहिए, क्योंकि जांच से स्पष्ट हो रहा है कि परीक्षा में भारी धांधली हुई है, और जांच के बावजूद पूरी तरह दूध का दूध, पानी का पानी नहीं किया जा सकता। हालांकि अपीलार्थियों का कहना है कि महाधिवक्ता की राज्य सरकार को सलाह विशिष्ठ दस्तावेज है, जिसे अदालत में पेश नहीं किया सकता। वरिष्ठ अधिवक्ता कमलाकर शर्मा, जो अपीलार्थियों की तरफ से पैरवी कर रहे थे, ने कहा कि इस प्रकरण में कई अभ्यर्थी ऐसे भी थे, जो ईमानदार हैं और उनका चयन अन्य परीक्षाओं में भी हो गया होता, परन्तु उन्होंने एस.आई. भर्ती परीक्षा को प्राथमिकता देते हुए अन्य परीक्षाओं से अपनी उम्मीदवारी वापिस ले ली। उन्होंने अदालत में कहा कि एस.आई. भर्ती परीक्षा-2021 में 880 चयनित अभ्यर्थियों में से करीब 440 ऐसे अभ्यर्थी थे, जिनका आर.ए.एस. व अन्य संलग्न सेवाओं में चयन हो जाता। हालांकि यह असत्यापित बयान है, क्योंकि किन अभ्यर्थियों का चयन होता, इस पर केवल अटकलें ही लगा सकते हैं और व्यवहारिक रूप से जिस अभ्यर्थी का आर.एस.एस. जैसे पद पर चयन होने की संभावना होती, वह पुलिस में सबसे न्यूनतम स्तर के पद पर भर्ती क्यों लेता। अदालत ने सभी तथ्यों को सुनने के बाद यह कहा कि वह यह जानना चाहती है कि इस मामले में अपील दायर होने के बाद से प्रशासन व पुलिस महकमा कितनी गंभीरता व तत्परता से एस.आई. भर्ती परीक्षा-2021 पेपरलीक मामले की जांच कर रहा है और कितने और आरोपियों को गिरफ्तार व इंटेरोगेट कर चुका है। उल्लेखनीय है कि इस मामले में अपील दायर होने के बाद और जांच अधिकारियों के ट्रांसफर होने के बाद से एस.आई. भर्ती परीक्षा के आरोपियों की गिरफ्तारी की संख्या में काफी गिरावट आई है। परन्तु इसका पूर्ण ब्यौरा महाधिवक्ता अदालत में कल पेश करेंगे।

'राज्य सरकार ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

रिपोर्ट के आधार पर एकलपीठ ने भर्ती रद्द करने का आदेश दिया था, जबकि एसआईटी ने परीक्षा रद्द करने के टास्क पर अपनी रिपोर्ट दी थी। वहीं एसआईटी ने मामले में पुनर्विचार कर अपनी दूसरी रिपोर्ट दी और उसमें माना कि दोषियों की छंटनी संभव होने के कारण पूरी भर्ती रद्द नहीं कर सकते। इस मामले में राज्य सरकार व चयनित अभ्यर्थियों की बहस पूरी हो चुकी है।

राष्ट्रदूत (एच.यू.एफ.) के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक सोमेश शर्मा द्वारा वतन प्रेस, सुधर्मा, एम.आई.रोड़, जयपुर एवं सुधर्मा-II, लालकोठी शॉपिंग सेंटर, टोंक रोड़, जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादकः- राजेश शर्मा । आर.एन.आई. नं. 3641/57, ई-मेल-rastrdut@gmail.com कोटा कार्यालयः-पलायथा हाउस, छत्रपति शिवाजी मार्ग, कोटा। फोनः2386031, 2386032, फैक्सः0744-2386033 बीकानेर कार्यालयः-कुंम्भाना हाउस, हनुमान हत्था, बीकानेर। फोनः2200660, फैक्सः 0151-2527371 उदयपुर कार्यालयः-आयड, मेन रोड आयड, उदयपुर। फोनः 2413092, 2418945, फैक्सः 0294-2410146 अजमेर कार्यालयः-घूघरा घाटी, जयपुर रोड,अजमेर। फोनः 2627612, फैक्सः0145-2624665 जालोर कार्यालय :- जी 1/63, इन्डस्ट्रीयल एरिया, फेस प्रथम, जालोर। फोनः 226422, 226423, फैक्सः 02973-226424 हिण्डौनसिटी कार्यालय :- जी -1-201, रीको औद्योगिक क्षेत्र, हिण्डौनसिटी। फोनः 230200, 230400, फैक्सः 07469-230600 चूरू कार्यालयः एच-150, रीको औद्योगिक क्षेत्र, चूरू, फोनः 256906, 256907, फैक्सः01562-256908